

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186481

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H 636.0896** Accession No. **G. H. 28 ६०**
G84 P

Author **गुप्ता, परमेश्वरी प्रसाद.**

Title **पशुओं का इलाज 1961**

This book should be returned on or before the date
last marked below.

सत्साहित्य-प्रकाशन

पशुओं का इलाज

लेखक

परमेश्वरीप्रसाद गुप्त



पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

आठवां संस्करण : १९६१

मूल्य

पचहत्तर नये पैसे

मुद्रक
दुगान्तर प्रेस
दिल्ली

प्रकाशकीय

पशु-धन का किसी भी देश की अर्थ-व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है, पर भारत-जैसे कृषि-प्रधान देश में तो पशुओं की विशेष उपयोगिता है।

अब की बात है कि अज्ञानतावश हमारी यह बहुमूल्य संपदा धीरे-धीरे कम हो जा रही है। कम ही क्यों, जो हैं, उनमें भी ज्यादातर दुर्बल और नेरूपयोगी हैं।

जाने कितने ही उपयोगी पशु बीमारी से मर जाते हैं। पशुओं को पालनेवाले प्रायः वे गरीब किसान हैं, जो महंगी आधुनिक अंग्रेजी दवाएं तो खरीद नहीं सकते हैं, और देसी ओषधियों की उनको ऐसी व्यवस्थित जानकारी नहीं है कि उनका लाभ उठा सकें। लेखक ने इस पुस्तक द्वारा इसी प्रभाव की पूर्ति की है। क्योंकि लेखक का जीवन पशु-सेवा में समर्पित है, अतः उनका प्रयत्न रहा है कि पशुओं के इलाज-संबंधी यह पुस्तक सभी दृष्टियों से संपूर्ण हो।

पुस्तक में पशु-रोगों के लक्षणों, उपचारों, दवाओं की जानकारी देने के साथ-ही-साथ सभी प्रकार की छूतवाली और साधारण बीमारियों का सविस्तर वर्णन कर दिया गया है। पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें दी गई दवाएं उन्हीं चीजों में से हैं, जिनमें से अधिकतर को किसान लोग अपने गांव में ही सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। भाषा इतनी सरल और सीधी है कि साधारण पढ़ा-लिखा किसान पढ़-सुनकर इससे लाभ उठा सकता है। इस प्रकार पुस्तक सभी दृष्टियों से उपयोगी बन गई है।

पुस्तक को इतनी व्यापक लोकप्रियता मिली है कि यह आठवां संस्करण पाठकों के हाथों में जा रहा है। आशा है, पुस्तक और ज्यादा पढ़ी जायगी।

—मंत्री

भूमिका

यद्यपि भारतवर्ष में पशु-चिकित्सा के अनुभवी विद्वान् सदैव होते रहे हैं, जिन्होंने इस विषय में बहुत खोज और कार्य किया है; तथापि संगठित कार्य कभी नहीं हुआ और जो कुछ हुआ है वह इतना तितर-बितर हो गया कि अब मिलना कठिन-सा है। शालिहोत्र तथा अश्विनीकुमारों ने घोड़ों तथा अन्य ढोरों के विषय में जो कार्य किया है, उसे कौन भूल सकता है। पांचों पाण्डवों में नकुल को कौन नहीं जानता ! वह इस विषय में बड़े दक्ष थे। ये लोग जो विद्या छोड़ गये उसमें से जो कुछ थोड़ा-बहुत मिलता है वह ऐसे रूप में और इतना नहीं है कि उससे इस समय की हमारी आवश्यकताएं पूरी हो सकें।

इसी प्रकार मुसलमानों के समय में भी इस विषय के बड़े-बड़े विद्वान् हुए हैं। उनकी खोज और अनुभव से भी लाभ उठाया जा सकता है। 'फारस-नामा' के लेखक सादतयारखां और उनके पुत्र रंगनि ने फारसनामे रंगनि में जो-कुछ लिखा है, वह कम महत्वपूर्ण नहीं है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के अर्थात् अंग्रेजों के भारतवर्ष में आगमन के समय तथा उनके राज्य के प्रारम्भिक काल में अंग्रेजी दवाइयां हर समय और हर जगह नहीं मिलती थीं और फौजों को बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान को मार्च करना पड़ता था, तब उन्हें हिन्दुस्तानी दवाइयों की आवश्यकता हुई। उस समय इस विषय में कुछ फौजी अफसरों ने खोज की थी और कुछ ऐसा संग्रह भी किया था; जैसे : Veterinary Aid de Memoire Bazar Medicine ; Materia Medica Veterinica, जिनकी मदद से आसानी से घोड़ों तथा अन्य ढोरों का स्थानिक दवाइयों से ही इलाज किया जा सके। परन्तु यह भी इस दिशा में समुचित और पर्याप्त कार्य नहीं कहा जा सकता।

भारतवर्ष के केन्द्रीय तथा प्रान्तीय वेटरिनरी विभागों ने भी इस सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से बहुत-कुछ उपयोगी कार्य किया है, [खास करके सीरम (Serum) और वेक्सीन (Vaccine) इत्यादि बनाने के सम्बन्ध में बड़ी खोज हुई है; और जो कामयाब साबित हुई है, उसका प्रचार भी किया है। परन्तु जो-कुछ आधुनिक कार्य इस विषय में हुआ है, वह सरकारी दायरे में ही परिमित है। वह इस ढंग का नहीं है कि उससे सर्वसाधारण स्वतन्त्र रूप से लाभ उठा सकें।

मनुष्यों के मामले में भी भारतवर्ष में एलोपैथिक तथा वेक्सीन, इंजेक्शन इत्यादि आधुनिक अंग्रेजी तरीके महंगे साबित हुए हैं। हिन्दुस्तान के निवासी बहुत गरीब हैं। वे इस प्रणाली (System) के अनुसार इलाज में जितना चाहिए उतना पैसा खर्च नहीं कर सकते। उनको तो पुराना तरीका अधिक माफिक आता है, जिसमें घर और आस-पास के बाग-बगीचे; खेतों तथा जंगलों में मिल जानेवाली चीजों की मदद से इलाज होता है। ढोरो के मामले में तो समस्या और भी विकट हो जाती है, कारण कि पहले तो ढोरो के इलाज के लिए मनुष्य से सात-आठ गुनी अधिक दवा चाहिए और दूसरे प्रायः ढोर पालनेवाले तो भारतवर्ष में किसान या वे लोग हैं जो यहां सबसे अधिक गरीब हैं। आजकल की आधुनिक अंग्रेजी दवाइयां खरीदना उनके बस की बात नहीं है। इसलिए ऐसी दवाइयों के जरिये हमारे ढोरो के इलाज का प्रश्न हल नहीं हो सकता। ढोरो के इलाज के प्रश्न को हल करने के लिए अपने भारतीय शालिहोत्र-शास्त्र को पुनर्जीवित करना होगा। मेरा खयाल है कि यदि इस विषय में भली प्रकार खोज की जाय तो हमारे यहां इतनी सामग्री मिल सकती है कि इसके आधार पर भारतीय शालिहोत्र-विज्ञान की नींव डाली जा सके। जबसे प्रान्तों में राष्ट्रीय सरकार जारी हुई है ग्राम-मुधार तथा ढोरो की देख-रेख की ओर उनका विशेष रूप से ध्यान गया है। अब यह आशा की जा सकती है कि वे भारतीय शालिहोत्र-शास्त्र को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता अनुभव करेंगे और इस काम को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

जब मैंने ढोरो के लिए 'चारा-दाना' पुस्तक लिखी थी तब तो मेरे सामने केवल एक ही प्रश्न था कि इसको इस प्रकार लिखा जाना चाहिए कि साधारण आदमी भी, जिसने किसी प्रकार की वैज्ञानिक शिक्षा नहीं पाई है, इसे समझ सके और उससे पूरा लाभ उठा सके। परन्तु 'पशुओं का इलाज' लिखने में इसके अलावा एक और प्रश्न उपस्थित हो गया कि इस पुस्तक में दवाएं तजवीज की जायं। वे ऐसी होनी चाहिए कि जिनको प्राप्त करने में कम-से-कम खर्च और परिश्रम करना पड़े और वे उन ग्राम-वासी भाइयों को सहज में ही मिल सकें जो बड़े-बड़े शहरों और कस्बों से बहुत दूर बसते हैं। इसलिए इस पुस्तक में जो दवाएं तजवीज की गई हैं वे उन्हीं घरेलू और गांव में मिलनेवाली चीजों में से हैं जो गांववालों के घर, गांव, खेत या आस-पास के जंगल में भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में मिल सकती हैं। इनी-गिनी कुछ ही चीजें ऐसी होंगी जो आस-पास के कस्बे या शहर से लानी पड़ें, जैसे काला नमक, भंग, बेलगिरी, सुहागा, कपूर इत्यादि।

इसके अलावा मैंने एक बीमारी के कई नुस्खे लिखे हैं ताकि एक नहीं तो दूसरा या तीसरा काम में लाया जा सके।

यह पुस्तक गांव में रहनेवाले भाइयों की तत्संबंधी आवश्यकताओं की को पूरा करने की दृष्टि से लिखी है। प्रायः गांवों में जब कभी ढोर बीमार हो जाता है तब आरम्भ में उसकी कोई परवा नहीं करता और जब उसको ज्यादा तकलीफ हो जाती है या उससे काम में हर्ज होने का डर होता है तब उसके इलाज करने का विचार आता है। उस समय हर एक मिलनेवाला अपने-अपने तजुर्बे की दवा बताता है और ऐसी स्थिति हो जाती है कि कभी किसीकी दवा दी जाती है और कभी किसीकी। इससे प्रायः हानि ही होती है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि ढोरो के मालिक के पास कोई ऐसी चीज होनी चाहिए, जिसके आधार पर वह अपने ढोरो का इलाज कर सके और कभी किसीकी बताई दवा न देकर परेशानी और फिजूल खर्च से अपने-आपको बचाता हुआ ढोरो के कष्ट को दूर कर सके। गांव

में ही क्या, कस्बों और शहरों में भी लोग छूत की बीमारियों से बिल्कुल नावाकिफ होते हैं। इसलिए उनकी बड़ी हानि होती है और उनके बहुमूल्य ढोर बड़ी भारी संख्या में मर जाते हैं। इस नुकसान को रोकने के लिए छूत की बीमारियों का पहचानना तथा यह जानना कि बीमारी की हालत में ढोरों की देख-भाल किस प्रकार की जाती है, बहुत आवश्यक है। पुस्तक के अन्त में दवाइयों के नाम अंग्रेजी में भी इसलिए दे दिये गये हैं कि अंग्रेजी नामों की सहायता से हर प्रान्त के लोग अपनी भाषा में दवाइयों के नाम जान सकें और उन्हें उनको पहचानने में सुविधा हो।

मैंने इस बात की कोशिश की है कि इस पुस्तक के लिखने का ढंग और भाषा ऐसी हो जिसे एक साधारण पढ़ा-लिखा ग्रामीण भी समझ सके और बिना पढ़ा-लिखा किसान भी पुस्तक को दूसरे से सुनकर कुछ लाभ उठा सके। यदि इस पुस्तक से किसान भाइयों तथा ढोरों के मालिकों को लाभ पहुंचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। पाठकों से मेरा निवेदन है कि उन्हें इसमें किसी भी तरह की त्रुटि जान पड़े या इसको अधिक उपयोगी बनाने के लिए उनकी राय हो तो लेखक को सूचित करने की कृपा करें। उसके लिए लेखक उनका कृतज्ञ होगा।

गोपाष्टमी, २००२ वि०

परमेश्वरीप्रसाद गुप्त

दूसरे संस्करण की भूमिका

मेरे पास पत्र-पर-पत्र आ रहे थे कि हमें 'चारा-दाना' और 'पशुओं का इलाज' नामक पुस्तक भेजिये। मैं बराबर उनको प्रकाशक के पास भेजता रहा था। जब मेरे पास सेवाग्राम से पत्र आया कि उन्हें पच्चीस प्रतियां 'चारा-दाना' और उतनी ही प्रतियां 'पशुओं के इलाज' की चाहिए, तब मैं प्रकाशक के पास स्वयं गया। वहां मालूम हुआ कि दोनों ही पुस्तकें समाप्त हो चुकी हैं। दो-चार प्रतियां भी भेजनी असम्भव हैं। लड़ाई के जमाने में

उनको छपवाना बहुत कठिन प्रतीत हुआ, कारण, कागज के अभाव के साथ-ही-साथ अच्छे प्रेस भी व्यस्त थे ।

मैंने जबसे गौ-सेवा-कार्य आरम्भ किया है मेरे मन में यह विचार दृढ़ होते चले आ रहे हैं कि गौ-सेवा के दो पहलू हैं—आध्यात्मिक और आदि-भौतिक । दोनों पहलुओं में समता नहीं रही और असमता इस हद तक हो गई कि एक प्रकार का चक्र-व्यूह बन गया कि उसको तोड़ना कठिन हो गया है । जबतक आदिभौतिक स्थिति में सुधार न होगा तबतक आध्यात्मिक पहलू सतह (Surface) पर ही रहेगा । इस समय संसार-व्यापक घोर युद्ध के कारण जो स्थिति उपस्थित हुई है, इसमें बिछुड़े हुए गाय, बैल क्या, हर एक जीव और चीज की उपयोगिता लोगों को अनुभव हुई है, इसके साथ-ही-साथ गाय-बैलों के भली प्रकार पालन-पोषण की आवश्यकता भी महसूस हुई है । भारतवासी यह भी अनुभव करने लगे हैं कि गाय का भली प्रकार पालन-पोषण करके ही उससे अधिक-से-अधिक लाभ उठाया जा सकता है और गौ-माता के असली स्वरूप का दर्शन कर सकते हैं । हमें गौ-सेवा का बड़ा अच्छा अवसर मिल गया है, इसे हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए । आज भारतवर्ष में गौ-जाति का क्या अनिवार्य स्थान है उसका पता चला है । आज यदि एक बार अपने यहां के गाय-बैलों की ओर दृष्टि डालेंगे तो मालूम होगा कि वे पहले जितने कमजोर, भूखे मरते, अनाथ नहीं दिखाई देते । इस समय हमें प्रयत्न करके उन्हें इतना ताकतवर और उपयोगी बना देना चाहिए कि वे पिछड़ने न पावें । इसके लिए जो भी प्रयत्न हो, वह थोड़ा है । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे यहां की आदिभौतिक और आध्यात्मिक उन्नति गौ-जाति पर ही निर्भर है । महात्मा गांधीजी ने ठीक ही कहा है कि भारत की सुख-समृद्धि गाय और उसकी संतान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है । मेरा विश्वास है कि गौ-जाति को छोड़कर हम कदापि उन्नति नहीं कर सकते । हजार प्रयत्न कीजिये, बढ़िया-से-बढ़िया पुष्टिकारक (Nutritious) खाने की चीजें बनाइये, अधिक-से-अधिक काम करनेवाले ट्रैक्टर (Tractor), मोटर तथा अन्य

यत्र तयार कीजिये; परन्तु गौ-जाति को छोड़कर भारतवर्ष में उन्नति करना स्वप्न देखना है ।

गौ-वंश की उन्नति के लिए उनको भली-भांति पालना, खिलाना-पिलाना, रोग से बचाये रखना अत्यन्त आवश्यक है । इसके साथ-ही-साथ उनकी नसल को सुधारना भी हमारे लिए परमावश्यक है । यही उपयुक्त समय है, हमें इस ओर शीघ्र कदम उठाना चाहिए । गौ-जाति का पतन इतनी शीघ्रता से हो रहा है कि अगर कोई प्रयत्न इसे रोकने के लिए न हुआ तो बचे-खुचे अच्छे पशु भी नष्ट हो जायेंगे । मूल जाति (Basic Stock) नष्ट हो जाने पर नसल-सुधार (Breed Improvement) का विचार और प्रयत्न सबकुछ ही व्यर्थ होगा । इसके लिए ठीक प्रकार की वांछित जाति की गायों (Right type of animal from the desired breed) के चुनाव (Selection) और नसलोत्पत्ति (Breeding) की ओर तुरन्त ध्यान देना होगा और जोर से क्रियात्मक कार्य (Intensive Practical work) करना होगा । परन्तु यह तभी सम्भव है जबकि हम इस समय जो भी हमारे पशु हैं, उनकी तन्दुरुस्ती और खान-पान पर अभी से ध्यान देने लग जायें । मुझे आशा है कि यह पुस्तक इसमें मदद करेगी जैसा कि मेरे पास बराबर इस सम्बन्ध में भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों से पत्र आये हैं । यदि यह सच साबित हुआ तो मैं अपनी मेहनत सफल समझूंगा ।

गोपाष्टमी, २००२ वि०

परमेश्वरीप्रसाद गुप्त

विषय-सूची

१. रोग का निदान	१५-१७
१ बीमारी के कारण	१५
२ पशुओं के बीमार होने के साधारण कारण	१५
३ स्वस्थ पशुओं के लक्षण	१५
४ बीमार पशुओं के लक्षण	१६
५ बीमारी की दो किस्में	१७
२. उपचार	१८-२२
६ बीमार पशुओं के लिए स्थान	१८
७ बीमार पशुओं के लिए खुराक	१८
८ बीमार पशुओं की देख-भाल	२०
३. दवाइयों के विषय में कुछ जानकारी की बात	२३-२८
९ नाल या ढरके से दवाई पिलाने की तरकीब	२४
१० योनि द्वारा दवाई का असर पहुंचाना (इंश करना) और गुदा द्वारा हकना (एनिमा) देने की तरकीब	२६
११ पिचकारी द्वारा दवा देना या टीका लगाना	२७
१२ दवा की खुराक या मित्रदार—	२८
४. छूतवाली बीमारियां	२९-५७
१३ माता या रिण्डरपेस्ट	३४
१४ जहरी बुखार या एन्थरेक्स	३६
१५ लंगड़ा बुखार या ब्लैकक्वार्टर	३८
१६ गलघोंटू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया	३९
१७ तपेदिक या ट्यूबरकलोसिस	४०

१८ फेफड़े का बुखार या प्लोरो-निमोनिया	४१
१९ जोन्स डिजीज	४२
२० खुर-मुंह की बीमारी या फुट एंड माउथ डिजीज	४३
२१ छूत से हमल गिरना या कण्टेजियस एबोर्शन	४७
२२ छूत से खूनी पेशाब या रेड वाटर	४९
२३ दूध का बुखार या मिल्क फीवर	५०
२४ चेचक या काउ पोक्स	५२
२५ गजचर्म या मेञ्ज	५३
२६ खुजली	५५
२७ दादा या रिंग-वर्म	५५
२८ कीड़ों के दुम्बल या मुजे (मनिया) फूटना या बार्बल फ्लार्डज	५६
२९ जूं या लाइस	५७

५. बिना छूत की या साधारण बीमारियां ५८-९९

३० बदहजमी या अपव	५९
३१ अफारा या पेट फूलना	६२
३२ पेट का दर्द	६४
३३ कब्ज	६६
३४ मुंह में कांटे या छाले पड़ जाना	६८
३५ पेट के कीड़े	७०
३६ पेचिश, खूनी दस्त और आंव	७२
३७ दस्त आना	७३
३८ हलक या खाना निगलनेवाली नली का रुक जाना	७४
३९ पित्ती उछलना	७५
४० जुकाम या सर्द-गर्म	७६
४१ खांसी	७८
४२ निमोनिया	७९

४३ दमा	८२
४४ पेशाब में खून आना	८३
४५ पेशाब न होना या रुकावट पड़ जाना	८४
४६ पेशाब का टपकते रहना	८५
४७ फोतों का सूजना	८६
४८ मिरगी	८७
४९ साधारण बुखार	८८
५० सांड का ग्याभन न करना	९०
५१ सफेद भागवाला कीड़ा	९१
५२ घामड़ या लू लगना	९२
५३ जानवर को जहर चढ़ जाना	९३
५४ चरी से जहर	९५
५५ लकवा या फालिज	९६
५६ गठिया या बाय	९७

६. मादा पशुओं का गर्भधारण, व्याना और

खास बीमारियां

१००-१२४

पशु के गाभिन होने से व्याने तक का संक्षिप्त वर्णन	१००
व्याने के समय बच्चे का ठीक स्थिति में न होना	१०५
५९ मरा बच्चा पैदा होना	१०८
६० बच्चा गिरा देना	१०९
६१ जेर न गिराना	११०
६२ प्रसूत या जच्चा का बुखार	११२
६३ बाक (लेवा) और थन का सूजना	११४
६४ योनि में कीड़े पड़ जाना	११९
६५ बच्चेदानी का बाहर लौट आना	११९
६६ यथोचित समय पर गाय का गर्भ-धारण न करना	१२०

६७ गाय का बार-बार गाभिन होना	१२३
७. शरीर के ऊपरी भाग की साधारण बीमारियाँ	१२५-१३६
६८ सूजन या वरम	१२५
६९ रसौली या मस्सा	१२८
७० फोड़ा-फुंसी	१२६
७१ घाव या जख्म	१३०
७२ हड्डी पर चोट लगना, टूटना, उतरना और मोच आ जाना	१३२
७३ खुरों में फोड़ा-फुंसी, घाव आदि हो जाना	१३४
७४ सींग में कीड़ा लग जाना या चोट से टूट जाना	१३५
७५ कान में मवाद और घाव पड़ जाना	१३६
७६ आंख का खुजलाना, पानी या गीड़ का बहना	१३७
७७ कन्धा आ जाना व फाला लग जाना	१३७
७८ आग से जल जाना	१३८
७९ परिशिष्ट	१४०-१४४

पशुओं का इलाज

: १ :

रोग का निदान

बीमारी के कारण

प्रायः प्राकृतिक जीवन होने के कारण मनुष्य की अपेक्षा पशु बहुत कम रोगी होते हैं। भारत में पशुओं के रखने की विधि अन्य देशों की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक होने की वजह से छूत की बीमारियों के सिवा उन्हें और बीमारियां कम ही सताती हैं। छूत की बीमारी तो अधिकतर हमारे अज्ञान के कारण फैलती है। अनेक साधारण रोगों का कारण कमजोरी है, जो खुराक की कमी से पैदा होती है। कमजोर पर, चाहे वह मनुष्य हो या पशु, रोग का आक्रमण अधिक होता है।

पशुओं के बीमार होने के साधारण कारण

१. (क) जरूरत से कम चारा-दाना पाना ।
(ख) खुराक में आवश्यक पौष्टिक तत्वों का यथोचित मेल न होना ।
२. सड़ा-गला चारा-दाना खाना तथा गन्दा पानी पीना ।
३. गन्दा स्थान, अधिक सर्दी, गर्मी और वर्षा से बचने का ठीक प्रबन्ध न होना ।
४. छूत को बीमारियों से स्वस्थ पशुओं को बचाने का उपाय न जानना ।

स्वस्थ पशुओं के लक्षण

पहले स्वस्थ पशुओं के लक्षण दिये जाते हैं। इससे रोगी पशुओं के लक्षण समझने में आसानी होगी ।

१. भली प्रकार खाना, पीना और जुगाली करना ।

२. आंखों में चमक, थूथन पर तरी, कान और पूँछ का स्वाभाविक रूप से हिलते रहना ।
३. स्फूर्ति और चैतन्य होना ।
४. रोमों और बालों में सफाई और चमक ।
५. शरीर को आहिस्ता से भी छूने से सिकोड़ना ।

बीमार पशुओं के लक्षण

१. पशु का रेवड़ (समूह) से अलग खड़ा होना, सुस्त और निर्बल दिखाई देना ।
२. पूरी तरह न खाना-पीना और जुगाली बन्द कर देना ।
३. दूध कम देना ।
४. कान गिरे रहना, बाल खड़े रहना, थूथन सूखे होना ।
५. शरीर को आहिस्ता से छूने से न सिकोड़ना ।
६. कानों की जड़ के पास का हिस्सा ज्यादा गरम और सिरा ठण्डा होना ।
७. आंख, नाक, मुँह से गीढ़ (कीचड़), पानी, नेटा और लार गिरते रहना ।

गाय, बैल, भैंस इत्यादि के शरीर का साधारण तापक्रम—गर्मी—(Normal Temperature) १०१ से १०२ डिग्री तक होता है । इससे कुछ कम हो तो कमजोरी और अधिक हो तो बुखार समझना चाहिए । सस्त गर्मी के दिनों में कभी-कभी एक-आध डिग्री अधिक भी हो जाता है । स्वाभाविक हालत में ढोरो की नब्ज १ मिनट में ४०-५५ बार चलती है और सांस १ मिनट में १२ बार लेते हैं ।

इसके सिवा गोबर और पेशाब की भी जांच करनी चाहिए । गोबर बहुत पतला, बदबूदार, असाधारण रंगवाला, खून इत्यादि मिला हुआ अथवा छोटी-छोटी सूखी गांठोंवाला भी रोग का लक्षण है । पशु के हरा चारा अधिक खाने पर गोबर प्रायः ढीला-ढाला, हरे रंग का होता है और

बहुत सख्त, सूखा, अधिक रेशेवाला चारा बिना खली और दाने के खिलाये जाने पर गोबर प्रायः सूखा हुआ करता है, परन्तु यह अवस्था असाधारण नहीं है। बहुत गहरे रंग का, खून या उसके साथ कोई और मादा मिला हुआ या बिल्कुल पानी की तरह का बेरंगा मूत्र रोग की निशानी है।

किसी प्रकार के रोग का संदेह होते ही पशु को सबसे पहले दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग करके उसकी परीक्षा और उसके यथोचित इलाज का प्रबन्ध करना चाहिए।

बीमारी की दो किस्में

बीमारी दो किस्म की होती है—एक छूत की (Contagious या infectious disease) और दूसरी साधारण (Non-contagious disease)। एक बीमार पशु के साथ खाने-पीने, सांस लेने या छू जाने से ही तन्दुरुस्त पशु के लग जानेवाली बीमारियाँ छूतवाली कहलाती हैं। इन्हें खतरनाक समझना चाहिए। ये बिना किसी वजह के केवल छूत से ही पशुओं में फैल जाती हैं। प्रायः ऐसी बीमारियों के एक बार कुछ ढोरो में फैल जाने पर दूसरे अच्छे ढोरो को इनसे बचाना मुश्किल हो जाता है। इनसे बचने का सबसे अच्छा और सरल उपाय ऐसे रोगों को न फैलने देना ही है।

परीक्षा के बाद छूत या साधारण रोग का निश्चय हो जाने पर तदनुसार पशु के रहने-सहने, खाने-पीने, देख-भाल तथा इलाज का प्रबंध करना चाहिए। यदि किसी पशु को खतरनाक छूत की बीमारी हो जाय तो फौरन उसे स्वस्थ पशुओं से अलग दूर ले जाकर रखे और साधारण छूत की बीमारी हो तो भी दूसरे स्वस्थ पशुओं से कुछ हटाकर, संभव हो तो अलग जगह अथवा वहीं अन्य पशुओं से बचाकर, एक तरफ रखना चाहिए।

: २ :

उपचार

बीमार पशुओं के लिए स्थान

बरसात तथा जाड़े में ठण्ड के कारण होने या उससे बढ़नेवाले रोगों में पशु को ऊपर झरोखों से काफी हवा आने-जानेवाले और धूप और रोशनीवाले घिरे हुए मकान में रखना चाहिए, ताकि उसको सीधे हवा का झोंका न लगे और मकान की गंदी हवा साफ होती रहे। गर्मी में उसे खुले मैदान में पेड़ के नीचे अथवा घर के आंगन में भी रखा जा सकता है। रोगी पशु के शरीर पर सीधे हवा का झोंका न लगना चाहिए, लेकिन हर हालत में रोशनी और हवा का आना-जाना बराबर रहना चाहिए। अच्छा तो यह है कि रोगी पशु के बैठने का फर्श पक्का हो। उसपर खूब सूखी घास, रेत, रदी सूखा भूसा या पत्ती वगैरह बिछाकर जानवर के बैठने का स्थान नरम कर दिया जाय। बिछावन को रोज बदलने का खयाल रखना चाहिए। रोग की दशा में पतला गोबर करने, वस्तिकर्म (एनीमा) से दस्त कराने या बच्चेदानी को साफ करने (इश) के कारणों से बीमारी की हालत में जगह गंदी हो जाया करती है। रोग की हालत में ज्यादा सफाई की जरूरत हुआ करती है। इसलिए पक्का फर्श और पक्की दीवार अधिक उपयुक्त है; पर यह न हो तो कच्चे स्थान से भी काम चल सकता है, बशर्ते कि उसको अच्छी तरह साफ रखा जाय। गोबर, कीचड़ जो कुछ हो उसे फौरन हटाकर स्थान को सुखा देना चाहिए और दीवार पर जहां कहीं गंदगी के छींटे वगैरह लग गये हों तो स्वच्छ गोबर-मिट्टी से लीपकर साफ कर देने चाहिए।

बीमार पशुओं के लिए खुराक

बीमार पशु की खुराक की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। अलग-

अलग रोगों के वर्णन में उनके लिए खुराक भी बतलाई गई है, पर जहां कोई खास खुराक न बतलाई गई हो, वहां नीचे लिखी बातों का खयाल रखना चाहिए ।

(१) बीमार जानवर को थोड़ा-थोड़ा कई बार करके खिलाना चाहिए । एक ही दो बार में पेट भरकर खिला देना ठीक नहीं है ।

(२) जल्दी पचनेवाली, अधिक गरम, बादी तथा कब्ज न करने-वाली रुचिकर और पौष्टिक खुराक देनी चाहिए, जिसमें जानवर बीमारी की हालत में भी खुराक रुचि से खाकर आसानी से पचा ले और ताकत बनाये रख सके ।

(३) खास-खास रोगों में तरल पदार्थ वर्जित होते हैं और कुछ बीमारियों में पशु सूखे पदार्थ खा ही नहीं सकता । इसलिए रोग के अनुसार उपर्युक्त बातों का खयाल रखते हुए खुराक देनी चाहिए ।

(४) अक्सर रोगी पशुओं को उनकी दशा के अनुसार हरा या मुलायम सूखा चारा, दलिया, दूध, कांजी, चाय, सत्तू, रोटी, चोकर इत्यादि दिया जाता है ।

हरे चारे में—दूब या दूसरी दूसरी मुलायम घास, जई, गेहूं, बरसीम, कच्चा गिनी घास, मक्का, नेपियर तथा हाथी घास इत्यादि देनी चाहिए ।

मुलायम सूखे चारे में—दूब तथा मुलायम घासों जिनमें रेत मिट्टी न हो, सुखाई हुई जई का चारा, जौ, गेहूं, जई का भूसा, पुआल, बारीक मुलायम चरी, मुलायम गिनी घास की बारीक कुट्टी इत्यादि देनी चाहिए ।

दलिया—बाजरा, गेहूं, चोकर, जई इत्यादि को खूब पकाकर ताजा गुनगुना गरम हालत में देना चाहिए ।

कांजी या मांड—चावल, अलसी, चोकर इत्यादि का देना चाहिए ।

कांजी या मांड बनाने की विधि—तीन पाव चावल या चोकर या १॥ पाव कुटी हुई तीसी को ५ सेर पानी में भली प्रकार उबालो, फिर कपड़े में छान लो और ठण्डा होने पर थोड़ा-सा नमक या गुड़ मिलाकर पिलाओ ।

(५) कुछ रोगों में कुछ समय तक पानी बिल्कुल नहीं पिलाते और कुछमें गरम पिलाते हैं। बाकी में हमेशा कुएं का ताजा पानी पिलाना चाहिए। गरम पानी गुनगुना पिलाना चाहिए।

(६) जहांतक संभव हो, दवा के सिवा जानवर को और कोई चीज जबरदस्ती नहीं खिलानी चाहिए। थोड़े-थोड़े नियत समय के बाद उसके सामने खाने-पीने की चीजें रखनी चाहिए ताकि इच्छा हो तो खा-पी ले।

बीमार पशुओं की देख-भाल

बीमार पशुओं की देख-भाल बड़ी होशियारी से करनी चाहिए, क्योंकि उस समय वह बिल्कुल लाचार होता है। मनुष्य की तरह न उसमें विचार-शक्ति होती है और न बोल ही सकता है। इसलिए उसकी देख-भाल और इन्तजाम करनेवालों की बड़ी जिम्मेदारी हो जाती है। उसकी देख-भाल और दवा इत्यादि में जरा भी लापरवाही या चूक होने से उसका नतीजा भयानक हो सकता है। नीचे लिखी बातों का खास खयाल रखना चाहिए—

(१) सख्त धूप, सर्दी, बारिश, तेज हवा से बचाने के लिए भी बीमार पशु को छाया या मकान में रखना तथा सर्दी में उसपर भूल डालना चाहिए।

(२) बीमार पशु को मक्खी-मच्छरों से बचाने के लिए भी उसपर भूल डालना चाहिए। उसके रहने के स्थान पर सबेरे-शाम गूगल, राल, गंधक या और किसी ऐसी ही चीज की धूनी देना और यह न हो तो नीम के पत्तों या और कोई पत्ते या कूड़ा-कर्कट, घास इत्यादि ही जलाकर धुआं कर देना भी लाभप्रद होता है। मच्छर इससे कम होंगे और वहां की हवा भी कुछ शुद्ध हो जायगी।

(३) पशु को नाल, ढरके (बांस की नली) बोटल इत्यादि से दवा देने के समय, पशु को गिराकर कोई दवा लगाते समय, पशु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते समय तथा बीमार जानवर को खड़ा करते समय

या करवट बदलवाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु के साथ ज्यादा जबरदस्ती किये बिना उसे कम-से-कम तकलीफ पहुंचाकर काम किया जाय ।

(४) यदि पशु एक दिन से ज्यादा एक करवट पड़ा रहता है तो उसके दबे हुए हिस्से की खाल गलने लगती है । इसलिए पशु के शरीर के हरएक हिस्से पर प्रकाश और हवा लगने के लिए यथासंभव एक-दो बार रोज करवट बदलवाना नहीं भूलना चाहिए ।

(५) साधारण बीमार जानवर को भी अच्छे जानवर से अलग ही रखना लाभप्रद है, लेकिन बीमार जानवर को तो अच्छे जानवर से अलग रखना बहुत ही जरूरी है ताकि समय-असमय (रात-बिरात) आदमी आसानी से उसके पास आ-जा सके और उसकी सेवा-टहल कर सके । खास करके छूत की बीमारीवाले पशुओं को बिल्कुल अलग दूसरे स्थान में रखना चाहिए ।

(६) बीमार पशु के रोग का निदान या पहचान (Diagnosis) करने में जल्दी न करें । बीमारी ठीक समझ में नहीं आवे तो अपने यहां जो आदमी बीमारी को समझनेवाला हो, उससे सलाह करके दवा तजवीज करें । यदि खुद फैसला न कर सकें तो आस-पास के पशुओं के डाक्टर से सलाह लेकर इलाज आरम्भ करना चाहिए ।

(७) बीमारी से अच्छे हुए जानवर को तन्दुरुस्त पशुओं में मिलाने में जल्दी न करनी चाहिए । बीमारी से अच्छा हो जाने के एक सप्ताह बाद ही उसे अच्छे पशुओं में मिलाना चाहिए । इससे उसकी व्यक्तिगत देख-भाल हो सकेगी और वह शीघ्र स्वस्थ होकर अपना कार्य पूर्ववत् कर सकेगा ।

(८) तेज या जहरीली (Poisonous) दवा जहां फोड़े-फुन्सी पर लगानी हो उसमें इधर-उधर न लगे, इसका खयाल रखना चाहिए ।

(९) कोई दवा पशु को खिलाने-पिलाने के पहले देख लेना चाहिए कि उसमें कोई जहरीली दवा तो शामिल नहीं है और है तो उसके बारे में

भली-भांति निश्चय कर लेना चाहिए कि वह ठीक है या नहीं और मात्रा से अधिक तो नहीं है ।

(१०) मालिक को अपने नौकर व साथी पर ही बीमार पशु की देख-भाल का सब भार नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि उसे खुद भी एक-आध बार देख लेना चाहिए, जिससे कोई भूल हो रही हो तो उसे सुधारा जा सके । बीमार पशु की देख-भाल करनेवालों के पास जहांतक हो, घर-बार का या अन्य पशुओं का या दूसरा कोई काम बीमारी के दिनों में नहीं होना चाहिए ताकि उसे यथोचित समय देने में कोई दिक्कत न हो । खास करके छूत की बीमारी के पशुओं की देख-भाल करनेवालों के पास दूसरे स्वस्थ पशुओं का या घर का कोई भी काम नहीं होना चाहिए, अन्यथा छूत फैलने का डर रहेगा ।

दवाइयों के विषय में कुछ जानकारी की बातें

सब दवाइयों को इस्तेमाल के तरीके का खयाल करते हुए तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है ।

१. खिलाने-पिलानेवाली दवाइयां—

- (अ) कुटी-पिसी बारीक दवाइयां चूर्ण या सफूफ के रूप में ।
- (आ) तरल दवाइयां जैसे काढ़ा, तेल तथा तरल पदार्थ में घुली हुई ।

२. लगाई, चुपड़ी या बुरकाई जानेवाली दवाइयां—

- (अ) बारीक पिसी हुई चूर्ण या सफूफ के रूप में ।
- (आ) काढ़ा, तेल या तरल पदार्थ में घुली हुई ।
- (इ) मलहम के रूप में ।
- (ई) पलस्तर अर्थात् चिपकाई जानेवाली ।
- (उ) धुआं या भाप देकर असर पहुंचानेवाली ।
- (ऊ) गुदा या योनि द्वारा दी जानेवाली ।

३. पिचकारी द्वारा देने की या टीका लगाने की दवाइयां अर्थात् वे दवाइयां जो सुई द्वारा खाल के नीचे की नस या शरीर के हिस्से में पहुंचाई जाती हैं ।

१. (अ) सफूफ या चूर्ण की शक्ल में दी जानेवाली दवाइयां खरल, इमामदस्ता, ओखली या सिल-बट्टे, किसीसे कूट-पीसकर भिनभने कपड़े (धोतर) या जहरीली दवा न हो तो आटा छानने की छलनी से छानकर तैयार की जाती हैं । सफूफ के रूप में पशुओं को दवा रोटी अथवा गुड़ में या किसी दूसरे खाने की चीज में रख या मिलाकर दी जाती है । कभी-कभी पानी, दूध या अन्य किसी तरल पदार्थ में, जिसका बीमारी

पर खराब असर न पड़ता हो, घोलकर भी दी जाती है। यदि दवा थोड़ी मिकदार में हो तो जानवर का मुंह खोलकर उसकी जीभ पर डाल देने से और उसका मुंह देर तक ऊपर किये रहने से, ताकि राल द्वारा दवा बाहर न आवे, काम हो सकता है।

(आ) इनमें बहुतेरी दवाइयां जैसे तेल, शीरा इत्यादि तो तैयार ही होती हैं। कुछ दवाइयां पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में घोलने से या मिलाने से ही तैयार हो जाती हैं। कुछ ऐसी भी हैं, जो पानी या दूसरे तरल पदार्थ में आसानी से घुलती या मिलती नहीं हैं। उन्हें गरम पानी में घोला जा सकता है। जो उसमें भी नहीं घुलनेवाली हों, उन्हें बहुत बारीक करने की आवश्यकता नहीं, छोटे टुकड़े करके बतलाये हुए अन्दाज के पानी में खूब उबालकर पानी की पौन या आधी मिकदार रह जाय, उस समय छानकर गरम या ठण्डी, जैसी बतलाई गई है, दी जाती है। कुछ दवाइयां पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में कुछ अर्से तक भिगो या सड़ाकर दी जाती हैं। अपने-आप पी जा सकनेवाली दवा तो पशु के सामने बर्तन में रख देनी चाहिए। अपने-आप न पी जानेवाली दवाइयां बांस की नाल (ढरके) या टीन या शीशे की मजबूत बोतल में डालकर पिलानी चाहिए।

नाल या ढरके से दवा पिलाने की तरकीब—जानवर की बाईं ओर खड़ा होकर दाहिने हाथ से उसका सिर उठाये और बायें हाथ से जानवर का मुंह खोलकर दवा की बोतल या ढरके का मुंह होशियारी से जानवर के मुंह में एक तरफ जबड़े के सहारे जीभ के ऊपर रखकर धीरे-धीरे पिला दे। इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिए कि जानवर के नथुने में दवा न चली जाय। अगर खांसी बहुत तेज हो या हलक में गर्मी हो तो दवा की चटनी बनाकर चटा देना अच्छा है। अगर दवा पिलाते समय जानवर खांसे या मालूम हो कि जानवर खांसना चाहता है तो फौरन ही उसका सिर छोड़ देना चाहिए, जिससे वह खांस सके और दवा नथुने (सांस की नली) में न जाने पावे। दवा नथुने में चली जाने पर जानवर का सांस घुट जाने का भय रहता है।

२. (अ) ऊपर नं० १. (अ) में लिखी गई विधि से चूर्ण तैयार कर लें, परंतु यह बहुत बारीक होना चाहिए। इसको महीन कपड़े से छानना आवश्यक है। दवा लगाने की जगह साफ करके, तेल चुपड़कर या बिना तेल चुपड़े साफ रुई या हाथ से बुरका देनी चाहिए।

(आ) यह नं० १ (आ) के अनुसार तैयार करें। इन दवाइयों में कुछ उड़नेवाली (Volatile) और शीघ्र आग लग जानेवाली (Inflammable) भी होती हैं। गरम करने की आवश्यकता हो तो बहुत होशियारी से हल्की आंच पर ही गरम करें, जिसमें दवा उड़ न जाय या आग न लग जाय। यह दवा किसी तिनके या बारीक लकड़ी इत्यादि के सिरे पर ज़रा-सी रुई या कपड़ा लपेटकर अर्थात् उसकी फुरहरी बनाकर उसे दवा में डुबोकर लगानी चाहिए। यदि शरीर के किसी भीतरी हिस्से में पहुंचाना हो तो फुरहरी या पिचकारी द्वारा पहुंचाना चाहिए। बाज़ दफा पिचकारी की बहुत बारीक बौछार (Spray) द्वारा भी यह दवा इस्तेमाल की जाती है।

(इ) मलहम बनाने में चर्बी, तैल, मोम, वेसलिन या घी और मक्खन काम में लाते हैं। इसे मलहम का आधार (base) कहते हैं। जिस चीज का मलहम बनाना हो, वह दवा उपर्युक्त आधार में भली-भांति मिलाने से मलहम तैयार हो जाता है। जहां लगाना हो, वह जगह विधिपूर्वक साफ करके ठीक नाप का कपड़ा काटें। उसपर पलस्तर की तरह लगाकर उस जगह पर चिपका दें। कभी-कभी दवा किसी चीज से या हाथ से लगाकर आहिस्ता-आहिस्ता उस जगह पर मालिश की जाती है ताकि ज़ब्त होकर अमर करे। मालिश करते समय खयाल रखें कि जिस ओर शरीर के रोमों (बाल) का रुख हो, उसी ओर को मालिश करें अर्थात् जिस तरफ से रोएं शुरू हों, उधर से हाथ रगड़ना शुरू करके जिस ओर रोएं खत्म हों, उस ओर हाथ रोकना चाहिए वरना बालतोड़ होने का भय है।

(ई) जो दवा पलस्तर के रूप में लगाई जाती है उनको किसी मोटे कपड़े पर एक-सा फैलाकर जानवर के पीड़ित भाग पर चिपका देते हैं।

(उ) धुआं और भाप देकर असर पहुंचाने के लिए आंच पर दवा डालकर धुआं पैदा करते हैं। भाप के लिए बर्तन में पानी तथा दवा डालकर बर्तन को हल्की आंच पर रख देते हैं, जिससे पानी गरम होकर धीरे-धीरे भाप द्वारा दवा का असर हो। जिस स्थान पर दवा का असर पहुंचाना हो, उस जगह उपरोक्त तरीके से धुआं या भाप उत्पन्न करके नली द्वारा या सीधे ही उस स्थान पर धुआं या भाप लगाते हैं।

धुआं या भाप ग्राम तौर से ऐसे मकान के अन्दर, जहां सीधी हवा का झोंका न लगे, लगानी चाहिए ताकि जिस हिस्से के नज़दीक वह धुआं व भाप उत्पन्न करते हैं वह धुआं व भाप शरीर के उस हिस्से पर भली-भांति लगे। कभी-कभी यह रबड़ या हुक्के की नली द्वारा भी उस स्थान पर लगाया जाता है। पशु की नाक के नज़दीक जिस दवा का धुआं या भाप सांस के जरिये अन्दर पहुंचाना है, उस दवा का धुआं या भाप उत्पन्न किया जाता है ताकि जानवर की सांस के जरिये अन्दर चला जाय या यह भी हो सकता है कि एक लम्बी लकड़ी के सिरे पर कोई कपड़ा बांध दिया जाय और वह उबलती हुई दवा के पानी में डुबोकर जानवर की नाक के नज़दीक ले जाया जाय ताकि भाप सांस के जरिये अन्दर चली जाय। इस प्रकार कई बार करके खतरनाक और भड़कनेवाले जानवर को भी भपारा दिया जा सकता है। धूनी केवल सुलगे हुए उपले पर दवा डालकर या चिलम में आग रखकर उसपर दवा डालकर दी जा सकती है।

(ऊ) योनि द्वारा दवाई का असर पहुंचाना (इंजक्शन) और गुदा द्वारा हकना (एनीमा) देने की तरकीब—

इसके लिए नीचे लिखी चीजों की आवश्यकता होती है—

(१) सबसे पहले ८-१० सेर पानी में नीम के पत्ते डालकर खूब उबालना चाहिए या गरम पानी में कुएं में डाली जानेवाली लाल दवा (Potash permagnate) डालकर खूब मिला लेना चाहिए।

(२) एक नली, रबड़ की हो तो अच्छा है अन्यथा बांस की, जिसके

दोनों सिरे गोल और चिकने कर लिये गए हों, पपीते अथवा प्याज की नली भी काम में लाई जा सकती है। यह आधा इंच या एक अंगुल तक मोटी और ३-४ फुट या २-३ हाथ होनी चाहिए।

(३) एक कीफ या टीप (लालटेन में तेल डालने की), यदि टीप न मिले तो चौड़ी चिलम या बदना (जिससे मुसलमान लोग पानी पीते हैं), जिसमें नली ठीक लग जाय, होनी चाहिए।

(४) एक छोटी मशक या बाल्टी या डोल, जिससे टीप में पानी डाला जा सके।

नली को नीम के तैल या कपूर मिले तिल के तैल से खूब चुपड़ लो। उसके एक सिरे में कीफ या टीप, चिलम या बदना लगाकर मशक या डोल में से पानी डालते हैं और नाली का दूसरा सिरा एक बालिश्त के करीब पशु की योनि अर्थात् पेशाब करने की जगह में और बस्तिकर्म कराने के लिए गुदा में भीतर डाल दो। मशक या डोल पशु से काफी ऊंचा रहना चाहिए जिससे पानी टीप में डालते रहने से नली द्वारा जानवर के अन्दर के हिस्से में सहूलियत से जा सके। डोल से दवा मिला हुआ पानी आहिस्ता-आहिस्ता डालते रहें। जानवर को बराबर एक जगह खड़ा रखें, इधर-उधर हटने न दें, वरना नली निकल जायगी। योनि या गुदा के पास भी नली को हाथ से पकड़े रहें ताकि नली निकल न सके और उस जगह को दबाये रखें, क्योंकि जब काफी पानी शरीर के अंदर चला जाता है तब पशु उसको निकालने के लिए जोर करता है, उस समय पानी निकलने न पावे। इस प्रकार काफी पानी जब अंदर चला जाय तब दो-एक मिनट पानी अंदर रोके रखें, फिर हाथ हटा लें और पानी निकल जाने दें। इस प्रकार दो-तीन बार करना चाहिए। ऐसा करने से अन्दर की सब गंदगी पानी के साथ निकल जाती है।

३. पिचकारी द्वारा दवा देना या टीका लगाना—जिस तरह मनुष्यों में चेचक का टीका लगाते हैं, उसी तरह पशुओं को छूत की बीमा-

रियों से बचाने के लिए टीका लगाते हैं। इसमें पिचकारी के जरिये पशुओं की खाल के नीचे दवा प्रवेश करते हैं। इससे पशु कुछ अर्से के लिए या उम्र भर के लिए उस बीमारी से बच जाते हैं। इस तरीके से पशु को कोई तकलीफ नहीं होती। सिर्फ सुई चुभाते समय जरा-सा दर्द होता है। इसके लिए विशेष यन्त्र और जानकारी की आवश्यकता होती है। इसलिए यह सदा जानकार डाक्टर से ही कराना चाहिए। इसमें जो दवा पिचकारी द्वारा अन्दर पहुंचाई जाती है, वह खून की गर्दश के साथ मिलकर तमाम शरीर में बड़ी जल्दी फैल जाती है और अपना असर करती है।

दवा की खुराक या मिकदार (Dose)—खुराक या मिकदार आमतौर से जहां दवा तजवीज की गई है, वहां लिख दी गई है कि किसके लिए कितनी है, अन्यथा उसे पूरे कद के प्रौढ़ जानवर के लिए, जिसका वजन करीब ८०० पौंड या १० मन हो, समझें। कम या ज्यादा वजन के जानवर को उसके वजन के अनुसार कम या ज्यादा मिकदार में दें। एक वर्ष से दो वर्ष के जानवर के लिए आधी से पौनी मिकदार में, ६ महीने से साल भर के जानवर के लिए $\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{2}$ मिकदार में, ४ माह से ६ माह तक के जानवर के लिए चौथाई मिकदार में, ४ माह से कम उम्र के जानवर को $\frac{1}{4}$ हिस्सा की मिकदार में और १ माह से कम के जानवर को $\frac{1}{16}$ भाग की मिकदार में उनके कद, वजन अवस्था के अनुसार देते हैं। गायों से भैंसों को सवाई, बकरी को चौथाई और घोड़े को बराबर मिकदार में उनके कद, वजन और अवस्था के अनुसार दवा की खुराक देनी चाहिए।

वास्तव में मनुष्य और पशु में, जहांतक बीमारी का सवाल है, कोई खास फर्क नहीं है। प्रायः जो दवा मनुष्य को लाभ पहुंचाती है, वह पशुओं को भी लाभ पहुंचाती है। मनुष्य को बाज दफा बेशकीमती दवाएं दी जाती हैं, जो पशुओं को देना सम्भव नहीं; लेकिन यदि वे पशुओं को भी दी जायं तो उनको लाभ करती हैं। मनुष्यों के मुकाबले में आठगुनी से बारहगुनी तक दवा पूरे कद के प्रौढ़ पशु को दे सकते हैं।

छूतवाली बीमारियां

छूत की बीमारियां आमतौर से बीमारी के कीटाणुओं द्वारा होती हैं। हर एक बीमारी के अलग-अलग कीटाणु होते हैं। ये इतने छोटे होते हैं कि बिना यन्त्र के आंखों से दिखाई भी नहीं देते और रेत के एक ज़र्रे पर हजारों की तादाद में आ जायें इतने छोटे होते हैं। इनकी बढ़ोतरी भी जल्दी होती है। कई बीमारियों के कीटाणु तो एक दिन में एक से १००० या इससे भी अधिक हो जाते हैं। इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि छूत की बीमारी कितनी जल्दी फैलनेवाली हो सकती है। ये कीटाणु इतने छोटे और हल्के होते हैं कि ज़रा-से स्पर्श से खाने-पीने की चीजों द्वारा, हवा द्वारा, नाक, थूक, गोबर, पेशाब, बीमार जानवर की जूठन तथा सेवा करनेवाले मनुष्यों द्वारा, बेजाने बीमार जानवरों से अच्छे भले-चंगे जानवरों के पास पहुंच जाते हैं और उन्हें बीमार कर देते हैं। इसलिए आसपास कहीं भी किसी प्रकार की छूत की बीमारी हो जाय तो पशुओं के मालिक को बहुत चौकन्ना होना चाहिए और बहुत होशियारी से अपने पशुओं की हिफाजत करनी चाहिए, ताकि उनमें वह बीमारी न फैल पाये।

छूत की बीमारी से ढोरों को बचाने के लिए नीचे लिखी बातें अमल में लानी चाहिए—

(१) आस-पास के गांव या इलाके में जब कोई छूत की बीमारी फैलने की खबर मिले तब किसी आते-जाते आदमी द्वारा उस इलाके के पशुओं के डाक्टर या अस्पताल में खबर दे देनी चाहिए कि अमुक गांव में अमुक छूत की बीमारी की खबर मिली है। इस प्रकार अपने गांव में तथा आसपास के गांव में भी सब जगह चर्चा कर देनी चाहिए, जिससे सब

आदमी होशियार हो जायं और अपने-अपने पशुओं को बीमारी से बचाने का इन्तजाम कर लें ।

(२) सम्भव हो तो पंचायत करके अपने गांव के पशु उस इलाके में न जाने दें । अपने निजी पशुओं को न उस इलाके में जाने और न उन इलाकों के पशुओं को अपने पशुओं में आने दें ।

(३) अपने पशुओं की तथा उनके रहने के स्थान की सफ़ाई का हमेशा और खास करके ऐसे समय ठीक प्रबन्ध रखना चाहिए ।

(४) पशुओं का गोबर और पेशाब बराबर देखते रहना चाहिए कि वह साधारणतः जैसा होना चाहिए, वैसा ही है या नहीं तथा यह भी देखते रहना चाहिए कि वे भली-भांति जुगाली करते हैं कि नहीं, किसी-के मुंह से लार तो नहीं गिरती, कोई लंगड़ाकर तो नहीं चलता, कोई सुस्त तो नहीं है, इत्यादि, ताकि किसी पशु के ज़रा भी गड़बड़ हो तो फौरन मालूम हो जाय ।

(५) हमेशा ही और खासकर ऐसे समय तो अवश्य ही ढोरों को कोई गला-सड़ा चारा-दाना कदापि नहीं खिलना चाहिए; क्योंकि बहुत-सी छूत की बीमारियां गली-सड़ी चीजें खाने और सील, नमी या तरी में रहने से जल्दी होती हैं ।

(६) ऐसे समय जबकि आस-पास बीमारी फैली हो, अपने ढोरों को उन ताल-तलैयाँ का पानी नहीं पिलाना चाहिए, जहां कि दूसरों के ढोर पानी पिया करते हैं और उस नहर या नदी का पानी भी नहीं पिलाना चाहिए, जो बीमारी के इलाके में से गुज़रकर आती हो । अपने घर के पास के कुएं में से पानी खींचकर अपने ढोरों को पिलाना चाहिए । अक्सर ऐसे समय पानी द्वारा भी बीमारी फैल जाया करती है ।

(७) बीमारी के इलाके से अपने यहां खाल और चमड़ा नहीं लाना चाहिए; क्योंकि छूत की बीमारी से मरे हुए ढोरों की खाल व चमड़े से बीमारी जल्दी फैलती है । ऐसी खाल या चमड़ा या मरे हुए पशुओं का मांस चमार लोग ले आया करते हैं । उनको मना कर देना चाहिए ।

(८) डाक्टर से अपने ढोरों को टीका लगवा लेना चाहिए। सरकारी ढोरों के डाक्टर बिना किसी किस्म की फीस लिये इत्तिला मिलते ही फौरन टीका लगा जाते हैं। टीका लगवा देने पर फिर टीका लगे ढोर को वह बीमारी जितने दिन तक उसकी (टीके की) मीयाद होती है, उतने दिन तक और बाज़ बीमारी हमेशा के लिए नहीं होती। यदि एक बार ढोर के छूत की बीमारी लग जाय तो फिर उसका अच्छा होना मुश्किल होता है। इसलिए अपने ढोरों के टीका तो अवश्य लगवा लेना चाहिए, इसमें कोई हर्ज की बात मालूम नहीं देती।

(९) यदि उपरोक्त सब बातों का खयाल रखते हुए भी आपके ढोरों में कोई जानवर बीमार हो जाय तो उसे फौरन अच्छे ढोरों से अलग कर देना चाहिए। अलग जगह में रखकर देखना चाहिए कि उसको क्या बीमारी हो गई है? यदि किसी छूत की बीमारी का संदेह हो तो गांव के दक्षिणी या उत्तरी हिस्से में छूत की बीमारीवाले अहाते में ले जाकर उसे रखना चाहिए और उसका इलाज व सेवा-टहल करनी चाहिए ताकि गांव के या मालिक के अन्य जानवरों में वह बीमारी न फैले।

(१०) छूत की बीमारी से मरे हुए जानवर की खाल कभी नहीं उतारनी चाहिए। उसको जहांतक हो, जला देना चाहिए अन्यथा ४-५ फुट गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए और इसी प्रकार उसके रहने के स्थान का गोबर, मूत्र, बुहारन, उसकी जूठन इत्यादि भी कभी किसी काम में नहीं लेनी चाहिए। उसको भी जला देना या गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए। प्रायः जमींदार चमारों को खालों का ठेका दे देते हैं और वे छूत से मरे हुए जानवरों की भी खाल निकाल लेते हैं। इस कारण गांव में छूत फैल जाती है। अक्सर यही छूत की बीमारी फैलने का कारण हो जाता है।

यदि सम्भव हो तो गांव के दक्षिण अन्यथा उत्तर की ओर, जहां से वर्ष के ज्यादा समय में हवा गांव की तरफ न आती हो, बीमार मवेशियों के लिए गांव की पंचायत की ओर से करीब ५० × ५० फुट का एक

अहाता (घेर), कम-से-कम गांव के ५०० गज के फासले पर, बनवा देना चाहिए। उसमें ५-६ जानवरों के रहने के लिए एक कोने में पच्छिम की ओर एक १४ फुट चौड़ा, ४० फुट लम्बा छप्पर होना चाहिए, जो पूर्व की ओर बिल्कुल खुला रहे। उसके फर्श का ढाल पूर्व की ओर होना चाहिए। छप्पर में दीवार की ओर हर एक जानवर के लिए दो मिट्टी की नादें, मिट्टी की ऊंची चबूतरा बनाकर उसपर लगा देनी चाहिए, जिनमें से एक खाने के लिए और दूसरी पानी पीने के लिए रहे। छप्पर के आगे अर्थात् पूर्व की ओर जिधर से बिल्कुल खुला है, आवश्यकता हो तो बांस का टट्टा हवा रोकने को रात को या दिन को लगाया जा सकता है। उसी अहाते में दक्षिण की तरफ दो-एक कोठरियां बनाई जा सकती हैं, जिसमें बीमार जानवरों के इलाज का सामान रखा जा सके और सेवा-टहल करनेवाले रह सकें। अहाते का दरवाजा पूर्व की ओर होना चाहिए। चौक के बीच में दीवार से पन्द्रह-पन्द्रह फुट के फासले पर दो या चार पेड़ हो सके तो नीम के या कोई और अच्छी छाया-वाले, लगाये जा सकते हैं।

गांव में जगह की ऐसी कोई कमी नहीं रहती। अहाते की दीवार कच्ची हो सकती है, जो पंचायत के जरिये गांववाले अपने-आप ही बिना कुछ खर्च के बना सकते हैं। इसी प्रकार अहाते में वृक्ष भी लगाये जा सकते हैं। कूण्डी या नांद कुम्हार के घर से आ जायगी। लकड़ी या बांस छप्पर के गांव की शामलात धरती के वृक्षों से या बन में से ला सकते हैं। छप्पर के लिए फूस गांव में काफी होता है। उसको बनाने में, गांव के चमारों से या अन्य जो आदमी उस काम को जानते हों, उनसे मदद लेनी चाहिए। साधारण मजदूर के काम में गांव के अन्य सब आदमियों को हाथ बंटाना चाहिए। मेरे खयाल से थोड़ा-बहुत लोहा, बान या अन्य कोई चीज की भी उपरोक्त चीजों के अलावा जरूरत पड़ेगी, वह भी गांव में ही प्राप्त हो सकती है अन्यथा उसपर जो थोड़ा-बहुत खर्च आवेगा, वह इतना कम होगा कि एक-दो आना या सेर-दो

सेर अनाज प्रति घर भी इकट्ठा किया जाय तो पूरा हो सकता है। गांव में जितने भी मजदूर पेशेवाले (Professional) आदमी रहते हैं, उनका गुजारा तो गांव के काम से ही होता है। फिर गांव के इस पंचायती काम को बिना किसी उजरत के करने में उनको क्या उज्र हो सकता है ? गांव की चौपाल में तो बहुत-कुछ करना पड़ता है; परन्तु इसमें तो उसके मुकाबिले में कुछ भी नहीं करना पड़ता। गांव के आदमियों का सबमें बेशकीमती धन उनके ढोर ही है। उत्तरी भारत में ढोरों को धन कहकर पुकारते ही हैं। असल में देखा जाय तो गांववालों के लिए तो ढोर उनके आदमी से भी बेशकीमती हैं। तो क्या वे सब मिलकर अपने इतने बेशकीमती धन को बचाने के लिए इतना काम भी नहीं कर सकते ? मेरे खयाल से तो केवल उनके इधर ध्यान देने की ही बात है। यदि सब लोग इस बात पर गौर करें तो सभी गांव के धन को बचाना जरूरी समझकर इस कार्य को प्रसन्नता से करेंगे।

छूत की बीमारियां बहुत हैं। सब बीमारियां हरएक जगह नहीं होतीं, इसलिए जो प्रायः भारतवर्ष में बहुतायत ले होती हैं, उन्हींका हम नीचे जिक्र करेंगे।

- (१) माता या रिंडरपेस्ट (Rinderpest)
- (२) जहरी बुखार या एन्थरेक्स (Anthrax)
- (३) लंगड़ा बुखार या ब्लैक क्वार्टर (Black quarter)
- (४) गल घोंटू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया (Haemorrhagic septicemia or Malignant soar throat)
- (५) तपेदिक या ट्यूबरकुलोसिस (Tuberculosis)
- (६) फेफड़े का बुखार या प्लोरो निमोनिया (Contagious Pleuro pneumonia)
- (७) सूखा या जोन्स डिजीज़ (John's disease)
- (८) खुर-मुंह की बीमारी या फुट एण्ड माउथ डिजीज़ (Foot and mouth disease)

(६) छूत से हमल गिरना या कन्टेजियस एबोर्शन (Contagious abortion)

(१०) छूत से खूनी पेशाब आना या रेड वाटर (Red water)

(११) दूध का बुखार या मिल्क फीवर (Milk fever)

(१२) चेचक या काउ पाक्स (Cow pox)

(१३) गज-चर्म या मेञ्ज (Mange)

(१४) खुजली (Khujli)

(१५) दाद या रिंगवर्म (Ring-worm)

(१६) कीड़ों के दुम्बल और मूँजे या मनिया फूटना या वारबल पलाईज (Warble flies)

(१७) जूं या लाइस (Lice)

इनमें से पहली सात बीमारियाँ ज्यादा खतरनाक बीमारियाँ हैं। यदि ये बीमारियाँ किसी पशु को हो जायं तो वह भाग्य से ही बच सकता है। उसका इलाज अबतक टीके के अलावा अन्य कोई नहीं दीखता। ऐसी बीमारी हो जाने पर उस बीमार पशु के बचाने की तो कोशिश करनी ही चाहिए; उससे अधिक ऐसी बीमारी से अपने अच्छे पशुओं को बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। उनको बचाने के उपाय हमने ऊपर लिख दिये हैं। ये सब बड़ी सावधानी से काम में लाने चाहिए।

छूत की बीमारियों में से ८, ९, १०, ११, १२ वीं साधारण खतरनाक बीमारियाँ हैं, जिनका इलाज यदि एहतियात से किया जाय तो जानवर अच्छा हो सकता है।

इनके अलावा कुछ छूत की बीमारियाँ ऐसी हैं, जो खतरनाक नहीं हैं और उनका इलाज आसानी से हो सकता है। वे १३, १४, १५, १६ और १७वीं हैं। इनके सबके लक्षण और इलाज की विधि आगे दी गई है।

(१) माता या रिन्डरपेस्ट

(इसके अनेक नाम हैं जैसे माता, चेचक, बेधन, घोल, भवानी, देवी, सीतला, छेरा, बुख, पोकनी।)

यह बीमारी ढोरो में अचानक दिखलाई दे जाती है और बड़ी जल्दी फलती है। इसकी छूत प्रायः खून, लार, गोबर, बिछावन, जूठा चारा और मरे ढोर की खाल खींचने से फैलती है। पहाड़ी इलाके में, मैदान में रहनेवालों की अपेक्षा, इसका अधिक असर होता है। एक दफा ढोरो में यह बीमारी फैलने पर इसका हटाना बड़ा कठिन हो जाता है जबतक कोई खास कारवाई न की जाय। साधारणतया ६०-७० फीसदी जानवर पहाड़ी इलाके में और ४०-५० फीसदी जानवर मैदानी इलाके में मर जाते हैं। एक बार किसी जानवर के यह बीमारी हो जाती है और वह उसको भेल जाता है तो फिर ऐसा देखने में आया है कि जिन्दगी भर उसके यह बीमारी नहीं होती।

पहचान—आरम्भ में ढोर को बुखार आता है जो कि १०५ डिग्री तक हो जाता है और ढोर कांपने लगता है। कमर धनुष जैसी मुड़ जाती है। भूख बन्द हो जाती है और अक्सर कब्ज होने के चिह्न भी दिखाई देते हैं। ३ या ४ रोज तक बुखार चढ़ता रहता है। इसके खास चिह्न हैं—तीसरे-चौथे दिन कमर का धनुष जैसा मुड़ जाना, सिर का एक तरफ गिरना, आंखों से पानी गिरना और गीड़ आना, जीभ पर छोटे-छोटे छाले दिखाई देना और मुंह में बदबू आना। ज्यों-ज्यों जानवर की हालत खराब होती जाती है, दस्त लगने आरम्भ हो जाते हैं, जिसमें बदबूदार गोबर के साथ गाँव जैसी लुआबदार चीज़ अकसर खून के साथ दिखाई देती है। सांस भारी हो जाती है। जानवर से उठा नहीं जाता और आठ-दस रोज में मर जाता है। यह हालत २०-२१ रोज तक भी जारी रह सकती है।

इलाज—इस बीमारी का माकूल इलाज टीका लगवाना ही है। अच्छे जानवरों के 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' (Goat virus or Serum simultaneous method) से रिंडरपेस्ट का टीका लगवा देने से फिर जन्म-भर यह बीमारी नहीं होती।

खान-पान—मुलायम चारा देना चाहिए। इसके अलावा गेहूं, बाजरा

इत्यादि का दलिया, चोकर और बहुत खराब हालत में चावल का मांड और दूध देना चाहिए। ताज़ा कुएं का पानी पिलाना चाहिए।

दूसरी हिदायतें—बीमार होते ही अच्छे जानवरों से बीमार जानवर को फौरन अलग कर देना चाहिए और यदि छूत के बीमार जानवरों के लिए कोई खास जगह गांव में मुकर्रर हो तो वहां, अन्यथा गांव के बाहर अपने खेत में किसी पेड़ के नीचे जानवर को रख देना चाहिए और वहां सिवाय जानवर की सेवा-टहल करनेवाले के अन्य आदमी या जानवर की आमदरफ्त नहीं होनी चाहिए। यदि जानवर मर जाय तो वहीं खेत में खूब गहरा गड्ढा खोदकर उसको उसकी जूठन व गन्दी मिट्टी समेत उसे उसमें रखकर उसपर कम-से-कम दो या डेढ़ फुट मिट्टी डालकर जमीन हमवार कर देनी चाहिए। सेवा-टहल करनेवाले आदमी को सोड़े, साबुन या नीम के पत्ते के पानी से हाथ-पैर और कपड़े धोये बिना अच्छे ढोरो के पास नहीं जाना चाहिए।

(२) जहरी बुखार या एन्थरेक्स

(बावला जहरी बुखार)

यह बीमारी भी खून में बीमारी के कीटाणु प्रवेश होने से होती है। यह इतनी जल्दी फैलती है कि एक-आध पशु मरा ही दिखाई देता है। यह बीमारी बड़ी खतरनाक होती है और इससे पशुओं को बचाना बड़ा कठिन है।

पहचान—अचानक एक-दो पशुओं को मरा पाना तथा उनके मुंह और नाक से तथा गोबर के रास्ते से काला खून निकलना। खाल का रंग नीला व काला-सा हो जाना तथा मृत शरीर का जल्दी से सड़ना आरंभ हो जाना। यदि ऐसा मिले तो समझना चाहिए कि उपरोक्त बीमारी फैल गई है। ऐसी हालत में अच्छा तो यही है कि तंदुरुस्त जानवरों को वहां से हटा दें और यदि ऐसा सम्भव न हो तो बीमार जानवर को ही अच्छे जानवरों से अलग कर दें और उसके नीचे की ४-५ अंगुल मिट्टी तथा वहां

का मल-मूत्र, कूड़ा-कर्कट और जूठन इत्यादि हटाकर गहरे गड्ढे में गाड़ दें या जला दें। उस स्थान पर नई मिट्टी डालकर और चूना इत्यादि छिड़ककर या थोड़ी-सी सूखी घास जलाकर शुद्ध कर लें। यदि सम्भव हो तो कुछ अर्से तक वहां स्वस्थ पशुओं को न बांधें। इस बीमारी में जानवर के बीमार होते ही उसकी हालत खराब होनी आरंभ हो जाती है। तेज बुखार हो जाता है। नब्ज मन्दी पड़ जाती है और खाल की चमक जाती रहती है। रंग मैला नीला-सा होना आरंभ हो जाता है और वह चिल्लाने लगता है जैसे उसको बड़ा भारी दर्द हो रहा हो और डर गया हो। उसकी आंखें मुरझा जाती हैं। चन्द घण्टों में ही जानवर की हालत बहुत ज्यादा खराब हो जाती है। बाज दफे गोबर काले खून से सना हुआ होता है और पेशाब भी गहरे रंग का होता है। जानवर बेहोश हो जाता है और मर जाता है। कभी-कभी यह हालत एक-दो रोज तक बनी रहती है।

खान-पान—इस बीमारी में पशु की हालत आरम्भ से ही खतरनाक होती चली जाती है, इसलिए खाना-पीना तो जानवर का बिल्कुल ही छूट जाता है। लेकिन यदि वह खा ले तो उसको मुलायम हरी व सूखी घास देनी चाहिए, अन्यथा पतला दलिया व दूध पिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

अन्य-हिदायतें—इस बीमारी से अच्छे जानवरों को बचाने के लिए यह बहुत जरूरी है कि जिस हिस्से (इलाके) में यह बीमारी हो गई हो, वहां अपने तन्दुरुस्त जानवर न जाने देने चाहिए और जिस हिस्से (इलाके) में जानवर चरते हैं, यदि वहां कोई जानवर बीमार हो जाय तो वहां भी जानवर ले जाना बन्द कर देना चाहिए। मरे हुए जानवर की खाल तो खींचनी ही नहीं चाहिए, बल्कि यदि जानवर खुले मैदान में मरा हो तो उसको उसी स्थान पर जला देना चाहिए और उसके नीचे की ५-६ अंगुल मिट्टी घास-पात या उसके मुंह, गोबर के रास्ते या और कहीं से जो खून, गंदा मादा आदि निकला हो, उन सबको इकट्ठा करके उसके साथ ही जला देना चाहिए। यदि जलाना बिल्कुल असंभव हो तो बहुत गहरा गड्ढा खोदकर उसको गाड़ देना चाहिए। और दो-तीन फुट मिट्टी उसके

ऊपर डालकर इकसार कर देना चाहिए। जानवर को, जहां वह मरा है वहां से उसको फूंकने या गाड़ने की जगह तक लाने में रास्ते में उसका खून आदि न गिरे, इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। मरे हुए स्थान से जानवर को हटाने के पहले ही उसके मुंह व नाक में और पैखाने के रास्ते पर घास या कपड़े इत्यादि की डाट लगाकर उसके ऊपर कपड़ा या पुरानी बोरी बांधकर या उस हिस्से पर गीली मिट्टी लगाकर ढक या बांध देना चाहिए ताकि रास्ते में खून या गन्दा माड़ा गिरने का डर न रहे।

(३) लंगड़ा बुखार या ब्लैक क्वार्टर

(इसके अनेक नाम हैं जैसे लंगड़ी, चेचड़ा, गोली चिरचिरा, फलसूजा)

यह बीमारी भी खून में कीटाणुओं द्वारा विकार पैदा हो जाने से ही होती है।

पहचान—इस बीमारी से पीड़ित पशु अन्य जानवरों से अलग खड़ा दिखलाई दिया करता है। चलाने से लंगड़ा मालूम देता है, जैसे लकवा मार गया हो और थोड़ी देर बाद गिर जाता है। सिर एक तरफ गिरा देता है, कान लटक जाते हैं। जहां से लंगड़ाता है उसके आसपास सूजन दिखाई देती है। इन सूजन को जब हाथ से दबाया जाता है तो कर-कर की आवाज मालूम देती है और ऐसा मालूम देता है कि इसमें हवा भरी है। तेज बुखार हो जाता है। जल्दी-जल्दी सांस लेता है और दांत पीसता है। अकसर २४ घण्टे के अन्दर जानवर मर जाता है।

इलाज—इसका माकूल इलाज तो ढोरो के डाक्टर को बुलाकर टीका (Vaccine) लगवाना है; परन्तु यदि यह न हो तो नीम का तेल या और कोई कीड़ों (कीटाणुओं) को नष्ट करनेवाली तेज दवा सूजनवाली जगह में खाल चीरकर पहुंचानी चाहिए। यदि वक्त पर यह इलाज किया जाय तो सम्भव है कि जानवर बच जाय।

खान-पान—अन्य बीमारी के बीमार जानवरों की तरह इसको भी

मुलायम चारा व दूध-दलिया वगैरा तथा कुए का ताजा पानी पीने को देना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—बीमार होते ही जानवर को अन्य जानवरों से अलग कर दें और उसकी जूठन, गोबर, पेशाब बिछावन व बैठने के स्थान की मिट्टी इत्यादि को जला दिया करें या गाड़ दिया करें। उसकी खाल नहीं खींचनी चाहिए ।

(४) गलघोंदू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया

(इसके अनेक नाम हैं जैसे गलघटों, घुटरया, घुड़खा, घटरीन, घुरवा)

यह एक प्रकार की खून की बीमारी है, कीटाणुओं द्वारा बहुत ही जल्दी फैलती है। प्रायः तगड़े और नौजवान जानवरों को अधिक सताती है। यह तराई या सीलवाली जमीन में रहनेवाले जानवरों को तथा वर्षा ऋतु में या उसके बाद अकसर होती है और जो जानवर सड़ी-गड़ी घास व तराई में पैदा हुई पनियल घास खाते हैं, उनमें जल्दी फैलती है।

पहचान—यह बीमारी इतनी जल्दी फैलती है, कि जहां यह बीमारी फैल जाय वहां एक-दो जानवर मरे हुए मिलें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। इस बीमारी में बहुत तेज बुखार होता है जो कभी-कभी तो १०७ से १०९ डिग्री तक पहुंच जाता है। जानवर बिल्कुल सुस्त हो जाता है। गले पर गरम सख्त तथा बड़ी दुखदाई सूजन दिखाई पड़ती है। उसको उंगलियों से दबाया जाय तब भी नहीं दबती। बाज्र दफा ऐसा प्रतीत होता है कि जानवर के गले में कोई सख्त चीज अटक गई है। नाक से गन्दा मादा निकलता है। जानवर रुक-रुककर सांस लेना आरम्भ कर देता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो जानवर का सांस घुट रहा हो। जानवर गिर जाता है और इतना कमजोर हो जाता है कि उठ नहीं सकता। एक-दो रोज में मर जाता है। अन्त समय में दस्त भी आरम्भ हो जाते हैं। इस बीमारी और रिडरपेस्ट एन्थरेक्स, और ब्लैक क्वार्टर में अन्तर है। रिडरपेस्ट में मुंह में छाले होते हैं और एन्थरेक्स में खून का रंग बदल

जाता है। इसमें खून का रंग नहीं बदलता और गले पर सूजन होती है, जो उपरोक्त दोनों बीमारियों में नहीं होती। इसी प्रकार ब्लैक क्वार्टर में जो सूजन होती है, वह दबाने से कर-कर बोलती है और दब भी जाती है; परन्तु इसकी सूजन न तो आवाज करती है और न दबती है।

इलाज—यदि यह सन्देह हो कि किसी जानवर को यह बीमारी हो गई है तो फौरन अपने नजदीक के सरकारी अस्पताल से ढोरों के डाक्टर को बुलाकर जानवर के टीका लगवाना चाहिए। इसके अलावा इस बीमारी का और कोई इलाज नहीं है।

खान-पान—अन्य बीमार जानवर की तरह होना चाहिए।

अन्य हिदायतें—आस-पास इस बीमारी के फैलने की खबर मिलते ही फौरन सब जानवरों के टीका लगवा देना चाहिए। इस बीमारी से मरे जानवर की खाल नहीं खींचनी चाहिए और जहां तक हो, उसे जला देना चाहिए और ऐसा सम्भव न हो तो बहुत गहरा गाड़ देना चाहिए। यह बीमारी ढोरों की खाल खींचने से छूत द्वारा बहुत फैलती है।

यदि कोई जानवर इस बीमारी से अच्छा हो गया हो तो उसे १०-१२ दिन अच्छा होने के बाद तक अलग ही रखना चाहिए, इसके बाद अच्छे ढोरों में मिलाना चाहिए।

(५) तपेदिक या ट्यूबरकलोसिस

यह बीमारी भारतवर्ष के मैदानी हिस्से में बहुत कम मिलती है। अन्य देशों के मुकाबले में भारतवर्ष में बहुत कम होती है। पहाड़ी हिस्सों में या अन्य स्थानों में, जहां जानवरों को बन्द जगहों में रखते हैं, यह बीमारी पाई जाती है।

पहचान—ऊपरी देख-भाल से जबतक जानवर बहुत अधिक इस बीमारी का शिकार न हो गया हो तबतक नहीं मालूम हो सकती। ज्यादा खराब हालत में प्रायः जो साधारण बीमारी के चिह्न होते हैं, वे देख पड़ते हैं और उसके खांसी तथा रुक-रुककर सांस लेने की शिकायत होती है।

इस बीमारी की परीक्षा ट्यूबरकोलीन टेस्ट (Tubercolin test) द्वारा वैटरिनरी डाक्टर से कराई जा सकती है। यही एक मानी हुई परीक्षा है, जिससे इस बीमारी का निश्चित रूप से पता लगाया जा सकता है।

इलाज—इस बीमारी का कोई माकूल इलाज अबतक नहीं मालूम हुआ है। इस बीमारी से बीमार जानवर को तन्दुरुस्त जानवर से अलग रखना चाहिए, ताकि दूसरे जानवरों में इसकी छूत न फैले।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाली खूराक दिन में तीन-चार बार थोड़ी-थोड़ी देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—बीमार जानवर को अन्य जानवरों से अलग रखें, और उसके टीका लगवा लें। उसकी जूठन, गोबर, पेशाब, बिछावन, कूड़ा-कर्कट जला देना चाहिए या हटाकर बहुत गहरा गाड़ देना चाहिए। मरने पर खाल नहीं खींचनी चाहिए, बल्कि लाश को ज्यों-का-त्यों गहरा गाड़ देना चाहिए।

(६) फेफड़े का बुखार या प्लोरो-निमोनिया

(इसे फेफड़े का मर्ज या छूतदार निमोनिया भी कहते हैं)

यह बीमारी बीमार जानवर को छूने या उसके ज़रूम, फोड़ा-फुंसी, इत्यादि के गन्दे मादों के लगने से तथा बीमार जानवर के मुंह के सामने सांस लेने से फैलती है। इस बीमारी में फेफड़ों पर असर होता है।

पहचान—भूख बन्द हो जाना, दूध घट जाना, बराबर कायम रहने-वाला हलका बुखार हो जाना, सूखी खांसी, खास करके गौशाला के बाहर पानी पीने के समय होना, मवाद की तरह से नाक से सिनक आना इसके लक्षण हैं। एक-दो सप्ताह के बाद सांस भारी हो जाता है और जानवर उसके के माफिक सांस लेता है और धीरे-धीरे अधिक बीमार हो जाता है। बैठ जाता है, फिर उठ नहीं सकता तथा पैर फैला देता है। पैर पीटने लगता है, जैसे कि बड़ा भारी दर्द हो और मर जाता है।

इलाज—बुखार के लिए जो साधारण दवाई दी जाती है, वह देनी

चाहिए । नीम, सफेदा, मरुआ इत्यादि के पत्ते या तारपीन का तेल डालकर पानी में उबालिये और उसकी भाप में सांस लेने दीजिये ताकि यह सांस के जरिये फेफड़ों तक पहुंचकर फेफड़ों को तन्दुरुस्त करने में मदद करे । एक हिस्सा तारपीन का तेल १० हिस्से तिल के तेल में मिलाकर छाती पर मालिश करनी चाहिए ।

खान-पान—मुलायम और दस्तावर खाने-पीने की चीजें दीजिये । जैसे चाय, दलिया, चोकर व दूध, पीने को गरम गुनगुना पानी ।

अन्य हिदायतें—बीमार जानवर को तन्दुरुस्त जानवर से फौरन अलग कर दीजिये । इस बीमारीवाले जानवर का दूध जहांतक हो पीना नहीं चाहिए । लाचारी हालत में दूध को आध घण्टे तक खूब उबालकर या उसका घी इस्तेमाल कर सकते हैं । जानवर पर भूल डाले रखिये तथा उसको हवा के झोंके और सर्दी से बचाइये ।

(७) जोन्स डिज़ीज़ (सूखा)

यह बीमारी भी तपेदिक जैसी ही है । इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है । जानवर धीरे-धीरे, कई महीनों में, दुःख पाकर मरता है । इस बीमारी में प्रायः दस्तों की शिकायत रहती है । कमर ऊपर को मुड़ (Humped) जाती है, सुस्ती छा जाती है । सिर और कान गिरे हुए दिखाई देते हैं । करीब-करीब तपेदिक के सभी चिह्न इस बीमारी में होते हैं ।

इलाज—यह बीमारी होते ही जानवर को दूसरों से अलग कर देना चाहिए और उसकी देख-भाल दूसरे बीमार जानवरों की भांति करनी चाहिए ।

खान-पान तथा अन्य हिदायतें—अन्य बीमार जानवरों के माफिक ।

नोट—छूत के उपरोक्त सात भयंकर रोगों में यदि नीचे लिखी दवा-इयां दी जायं तो मेरे एक मित्र का विचार है कि बहुत हद तक आराम हो सकता है—

(१) आक, मदार की जड़ की छाल	२ छटांक
काली मिर्च	१ छटांक
घी	५ छटांक

छाल व मिर्चों को खूब बारीक पीसकर, घी में घोलकर, नाल से दें ।
यह दवा दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

(२) रीठे के ऊपर के छिलके, जो कपड़ा धोने के काम आते हैं,	१ छटांक
---	---------

घी	५ छटांक
----	---------

छिलकों को बारीक पीसकर घी में घोल नाल से दिन में तीन बार दें ।

(३) निर्वसी काली	३ छटांक
घी	५ छटांक

निर्वसी को बारीक पीसकर घी में मिला लें और दिन में तीन बार नाल से दें ।

(८) खुर-मुंह की बीमारी या फुट एण्ड माउथ डिजीज़
(इसके अनेक नाम हैं, जैसे खुरिया, खसीटा, खुखका, खुरा, रोड़ा)

यह बीमारी बड़ी भयानक बीमारियों में से है; क्योंकि इसकी छूत हवा द्वारा भी फैल जाती है और एक बार ढोरो में फैल जाने पर इसका निकलना मुश्किल हो जाता है । इस बीमारी में अगर लापरवाही होती है तो जानवर के मर जाने का भी डर रहता है । होशियारी से इलाज व सेवा-टहल करने से बच तो जाता है; परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है । दूध देनेवाले जानवर का दूध कम हो जाता है और काम करनेवाले जानवर शक्तिहीन हो जाते हैं । पहले जैसी ताकत प्राप्त करने में काफी समय लगता है ।

पहचान—जानवर के मुंह से लार और भाग आता दिखाई देना, जानवर के पिछले पैरों का कांपना और जानवर का खुरों के बीच के हिस्से को चाटना, चलने के साथ लंगड़ाना; भली-भांति खूराक का न खा सकना और जबड़ों के पास छालों का हो जाना इसकी पहचान है । इस बीमारी

में बुखार भी हो जाता है। ज्यों-ज्यों बीमारी बढ़ती जाती है, जबड़ों के छाले तमाम मुंह और जीभ पर फैल जाते हैं। इसी प्रकार खुरों के बीच में जख्म हो जाते हैं और शीघ्र ही यथोचित इलाज न किया जाय तो उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। ज्यादा बीमारी बढ़ने पर जानवर का चलना-फिरना तो दूर रहा, वह खड़ा भी नहीं रह सकता और उसका खाना-पीना बिल्कुल बन्द हो जाता है। बाज दफा आदमी इस बीमारी में और रिंडर-पेस्ट के पहचानने में गड़बड़ा जाता है। रिंडरपेस्ट में केवल मुंह में छाले होते हैं और दस्त आरम्भ हो जाते हैं; किन्तु इस बीमारी में ऐसा नहीं होता। इसमें मुंह और खुरों में, दोनों में छाले होते हैं। इसके छाले हमेशा पीली-सी झिल्ली से ढके रहते हैं। यह एक खास पहचान है। अन्य बीमारियों के छाले आम तौर से लाल होते हैं।

इलाज—जहां एक ही जगह अधिक जानवर रहते हों, उनके दरवाजे पर या गांव में से ढोर आने-जाने के जो खास रास्ते हैं, उनपर पैर-डुबकी या फुटपाथ (Foot bath) बनवा देने चाहिए ताकि जो जानवर वहां से गुजरें, उनके खुरों के बीच में दवा भली प्रकार प्रवेश कर जाय। पैर-डुबकी बनवाना सम्भव न हो तो बीमार पशु को जहां कहीं कीचड़ ज्यादा हो, उसमें से गुजारने से भी ठीक रहता है। परन्तु पैर-डुबकी के बदले यह चीज अपनाई जा नहीं सकती।

पैर-डुबकी (Foot bath) बनवाने की विधि—जहां से जानवर निकलते हों, उस दरवाजे पर या रास्ते पर उसकी पूरी चौड़ाई का ८ या १० इंच गहरा पक्का चौबच्चा (स्थान) इतना लम्बा बनवा दें कि पशु उसे कूदकर पार न कर सके, बल्कि उसमें पैर रखकर दूसरी तरफ जा सके। यह जितना लम्बा होगा, उतना ही अच्छा होगा। कम-से-कम १०-१२ फुट तो होना ही चाहिए। इसमें फिनाइल या कीड़े मारने की कोई अन्य दवा पानी में मिलाकर भर दें। यह पैर-डुबकी हर समय बनी रहनी चाहिए। जब बीमारी की कोई आशंका न हो तो इसमें रेत-मिट्टी भरकर इकसार कर दें और जब बीमारी फैलने की आशंका हो, उसे साफ

करके उसमें पानी भरकर उसमें फिनाइल या अन्य कोई कीड़े मारने की दवा घोल देनी चाहिए ।

पैर-डुबकी के अलावा कीकर की छाल वगैरा के क्वाथ से दोनों समय सांभ-सबेरे बीमार ढोरो के खुरों और मुंह को साधारण पिचकारी या स्प्रे पम्प (Spray pump) से धोना चाहिए । अगर किसी के पास लोहे या पीतल की पिचकारी न हो तो थोड़े बांस की पिचकारी बनवाकर या कपड़ा डुबोकर उससे धो सकते हैं ।

कीकर की छाल का क्वाथ बनाने की विधि—

कीकर या बबूल की छाल	४ छटांक
जवासा का हरा पौधा	१ छटांक
फिटकरी	१। छटांक
हीरा कसीस	॥ छटांक
कत्था	॥ छटांक

इन सबको किसी लोहे के बरतन में करीब ४ सेर पानी में उबाला जाय और जब तीन चौथाई पानी रह जाय तो उसको छानकर जरा-सा कपड़े धोने का सोडा मिला देने से उपरोक्त क्वाथ बन जाता है । यदि उपरोक्त चीजों में से कोई चीज न मिले तो जो-जो चीजें मिलें, उन्हींको पानी में उबालकर जरा-सा सोडा डालकर काम में लेने से भी लाभ होता है ।

मुंह और पैर में अगर जख्म अधिक हो गये हों तो शहद या शीरा मिले तो अच्छा है, अन्यथा तिल या नारियल के तेल में या घी में जरा-सी फिटकरी, कत्था, फुलाया हुआ सुहागा और जरा-सा सोडा मिलाकर लेप कर देना चाहिए । किन्तु लेप करने से पहले उपरोक्त क्वाथ से जख्मों को भली प्रकार धो देना चाहिए, ताकि जख्मों के ऊपर का पीला हिस्सा दूर हो जाय और जख्म लाल और साफ दिखाई दें । खुरों के बीच में प्रायः गोबर या मिट्टी इत्यादि आ जाने से दवा का असर नहीं होता, इसलिए दवा लगाने से पहले जख्मों को उपरोक्त क्वाथ से धोकर भली प्रकार बांधकर ढक देना चाहिए कि मिट्टी, गोबर इत्यादि जख्म तक न पहुंच सकें । इस प्रकार दोनों समय

दवा लगानी चाहिए। खुर में चाहे तो उपरोक्त दवा यानी सुहागा, कत्थ, फिटकरी, सोडा, तिल के तेल में मिलाकर लगाइये या जख्म अच्छा करने के लिए जो मलहम या अन्य दवा लगाई जाती है, वह लगाइये। यदि कीड़े पड़ गये हों तो कीड़े मारने की दवा तारपीन का तेल या फिनाइल से कीड़े मारकर फिर जख्म अच्छा करने की दवा लगाकर जख्म अच्छा कीजिए।

खान-पान—मुलायम बारीक चारा देना चाहिए। यदि मुमकिन हो तो हरा चारा दें। गर्मी पैदा करनेवाली व सख्त चीजें, जो आसानी से न चबाई जा सकें, नहीं देनी चाहिए। कुएं का ताजा पानी पिलाना चाहिए। जिन जानवरों की जबान, (जीभ) ज्यादा खराब हो गई हो, उनको मुलायम हरा चारा जैसे, बरसीम, कच्ची जई या अन्य कोई चीज देनी चाहिए। दूध, चावल इत्यादि का मांड या कांजी व पतला दलिया खिलाना चाहिए। अगर वे ये भी न खा सकें तो उन्हें नाल द्वारा पिला देना चाहिए। यह खयाल रखना चाहिए कि खाने-पीने की कमी से जहांतक हो, जानवर कमजोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—कोई भी जानवर इस रोग से बीमार हो जाय तो उसे फौरन दूसरे जानवरों से अलग कर देना चाहिए। उसे छूत की बीमारियों के स्थान पर या गांव से बाहर खेत में पेड़ के नीचे रखना चाहिए। यह बीमारी हवा से भी फैलती है। इसलिए जहांतक हो, गांव के या अच्छे जानवरों के दक्षिण या उत्तर में या जिधर की हवा हो, उसके दूसरी ओर रक्खें ताकि अच्छे जानवरों को उस ओर की हवा न लगे। बीमारी आरम्भ होने के १५ या २० रोज बाद तक अगर ढोरो में बीमारी न रोकी जा सके अर्थात् अच्छे ढोरो में बीमारी ज्यादा फैलती जाय तो इसके माने यह हैं कि बीमारी रोकना नामुमकिन है। ऐसी हालत में इस बीमारी से बीमार और अच्छे सब ढोरो को आपस में मिला देना ही अच्छा होता है। इससे बीमारी बहुत दिन तक जारी नहीं रहती; बल्कि जिन ढोरो को बीमार होना है वे बीमार होकर जल्दी से निबट जाते हैं। इस बीमारी की मीयाद २१ दिन की होती

है। जानवरों को अच्छा हो जाने पर भी थोड़े दिन तक अच्छे जानवरों से अलग रखना चाहिए।

(६) छूत से हमल गिरना या कन्टेजियस एबोर्शन

यह छूत का गर्भपात साधारण गर्भपात से बिल्कुल अलग बीमारी है। साधारण गर्भपात तो तेज़ दौड़ने से, छलांग लगाने से इत्यादि बेढंगे तरीकों की हरकतों और व्यवहारों से या किसी विशेष गर्म चीज़ के खाने से होता है, परन्तु छूत से गर्भपात इस बीमारी के कीटाणु का किसी तरह से गर्भाशय या बच्चेदानी में प्रवेश हो जाने से होता है। साधारण गर्भपात एक बार होकर रुक जाता है; परन्तु छूत से गर्भपात की बीमारी एक बार होने पर जबतक इसका पूरा इलाज न हो जाय, बराबर होता रहता है और अगर अहत्तियात न रक्खा जाय तो दूसरे ढोरों में भी फैल जाता है।

पहचान—गर्भाशय तथा पेशाब की जगह सूजन का होना और समय के पहले ही बच्चे का गिर जाना, गर्भपात के बाद जेर का भली प्रकार न गिरना, पेशाब बदबूदार होना, गंदा माँहा निकलना और जानवर का सुस्त दिखाई देना इसके लक्षण हैं। गर्भपात की बीमारी और ढोरों में भी दिखाई दे तो अच्छा तो यही है कि ढोरों के डाक्टर से इसकी परीक्षा करा लें। यदि छूत के गर्भपात की बीमारी हो तो उसका यथोचित इलाज करायें।

इलाज—इस बीमारी का सबसे ज्यादा कामयाब इलाज एन्टीकन्टेजियस एबोर्शन वेकसीन (Anti-contagious Abortion vaccine) का है। अगर इस इंजेक्शन (सुई द्वारा खाल में दवाई पहुँचाकर इलाज) कराने से भी जानवर अच्छा नहीं हो तो उसके अच्छा होने की ज्यादा उम्मीद नहीं समझनी चाहिए। गर्भपात होने पर अगर जानवर जेर को दो-तीन दिन तक न गिरावे तो मीठे तिल के तेल में थोड़ा नीम का तेल या और कोई कीड़े मारनेवाली दवा मिलाकर हाथ में कोहनी तक चुपड़कर उसकी बच्चेदानी में हाथ डालकर आहिस्ता-आहिस्ता छोटे-छोटे टुकड़े करके निकाल देनी चाहिए। हाथ से जेर निकालने में यह खयाल रखना चाहिए कि यदि

जेर का कोई हिस्सा गर्भाशय में चिपका हुआ हो तो ज़ोर से नहीं खींचना चाहिए और नाखून इत्यादि से किसी प्रकार गर्भाशय में खुरच न लगने पावे। इस प्रकार एक या दो या इससे अधिक बार हाथ डालकर धीरे-धीरे जेर निकालनी चाहिए। जिस रोज़ हाथ से जेर निकालने का काम आरंभ किया जाय, उस रोज़ तो दो-तीन बार गाय के गर्भाशय को झूश द्वारा धोना चाहिए और बाद में रोज़ दो दफे दस-बारह रोज तक, जबतक जानवर का अन्दर का हिस्सा बिल्कुल साफ न हो जाय दोनों वक्त झूश देकर धोना चाहिए। झूश करने के बाद जो गंदगी व गंदा पानी, खून इत्यादि निकले, उसे गाड़ या जला देना चाहिए ताकि बीमारी की छूत दूसरे ढोरों को न लगे। झूश करने की तरकीब अन्यत्र देखिये।

खान-पान—साधारण तंदुरुस्त जानवरों को जो खुराक दी जाती है, वही गाय को देनी चाहिए। केवल यह खयाल रखना चाहिए कि इस अर्से में कोई ज्यादा गर्म तासीरवाली और कब्ज करनेवाली चीज़ न दी जाय और गाय खाने-पीने की वजह से कमज़ोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—यदि आस-पास या अपने ढोरों में इस बीमारी के होने का खयाल हो तो अपने यहां की सब गाय-भैंसों को और ८ महीने से ऊपर की सभी बच्छियों व बहड़ियों को एन्टी-कन्टेजियस एबोर्शन (Anti-contagious Abortion) का टीका लगवा देना चाहिए और जिस जानवर को यह बीमारी होने का संदेह हो, उस जानवर को फौरन अच्छे जानवरों से अलग, जहां छूत के बीमार जानवर रखे जाते हैं, वहां या अन्य किसी जगह रखना चाहिए और उनके रहने के स्थान की मिट्टी पेशाब, गंदा मादा आदि हटाकर फर्श को बिल्कुल साफ करके उसपर चूना इत्यादि भलीभांति बिखेर देना चाहिए। गंदी मिट्टी और वहां की जो गंदगी हो, इकट्ठी करके जला देनी चाहिए, या बहुत गहरे गड्ढे में गाड़ देनी चाहिए। जिस ढोर को छूत से गर्भपात की बीमारी होने का शक हो, उसको जहां तक हो, जबतक वह अच्छा न हो जाय, ३-४ माह तक तो गाभिन हरगिज़ नहीं कराना चाहिए। जब गाभिन करावे तब गाभिन कराने

के बाद सांड के मूतने की जगह को भली प्रकार नीम के पानी से धोकर नीम का तेल या एक हिस्सा कपूर और बीस हिस्से तिल का तेल या घी अच्छी तरह मिलाकर चुपड़ देना चाहिए। ऐसी गाय को जिस सांड से गाभिन करावें, उस सांड से कुछ दिनों तक अच्छी गाय गाभिन न करावें। अच्छा तो यह है कि ऐसे ढोर को (Artificial insemination) कृत्रिम गर्भाधान विधि से गाभिन कराया जाय।

(१०) छूत से खूनी पेशाब या रेड वाटर

यह बीमारी भी कीटाणुओं द्वारा खून में विकार पैदा होने से होती है। इसी बीमारी की छूत थनों द्वारा और उस मच्छर के काटने से, जो बीमार जानवर को काटकर अच्छे जानवर को काटता है, होती है। इस प्रकार एक जानवर से दूसरे जानवर में फैलती है। पहचान के लिये ख्याल रखना चाहिए कि गर्मी की वजह से अक्सर जानवरों के पेशाब में खून आने लगता है। इससे इस बीमारी का कोई सम्बन्ध नहीं है।

पहचान—जानवर को तेज बुखार हो जाता है, जल्दी-जल्दी सांस लेने लगता है, नब्ज कमजोर हो जाती है, आंखें तथा जीभ इत्यादि पीली पड़ जाती हैं जैसे पीलिया के रोगी की होती हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि एक-दो रोज के बाद जानवर का बुखार उतर जाता है और शरीर ठंडा हो जाता है। पेशाब के जरिये खून आता है, कब्ज हो जाता है। इसकी निश्चित पहचान खून की डाक्टरी परीक्षा कराने से होती है।

इलाज—इस बीमारी का इलाज नजदीक के ढोरों के डाक्टर को बुलाकर करवाना चाहिए। आमतौर से इस बीमारी में एक नीली दवा का, जिसे ट्रिपेन ब्ल्यू (Tripen Blue) कहते हैं, इंजेक्शन दिया जाता है।

खान-पान—दूसरे बीमार जानवरों की तरह।

अन्य हिदायतें—अन्य छूत की बीमारियों की तरह जानवर को बीमार होते ही फौरन दूसरे जानवरों से अलग कराना चाहिए और अन्य हिदायतें भी उसके माफिक ही समझनी चाहिए।

(११) दूध का बुखार या मिल्क फीवर

यह बीमारी अधिक दूध देनेवाली, नौजवान और तगड़ी गायों को तीसरे या चौथे बियात के बाद होती है। बुड्ढे या पहले बियात के जानवरों में नहीं होती।

पहचान—यह बीमारी ब्याने के २४ घंटे बाद या एक-दो दिन बाद दिखलाई पड़ती है। बहुत से जानवरों में पहले-पहल दूध दुहे जाने पर दिखलाई देती है। जानवरों को दीखना कम हो जाता है। आंखें चढ़ जाती हैं। मुंह से राल गिरने लगती है। जानवर सुस्त रहता है और खड़ा नहीं रह सकता। पशु एक करवट पड़ा रहता है। पैर पेट के नीचे सिकोड़ लेता है और सिर एक ओर को गर्दन के सहारे मोड़ लेता है। इसका खास चिह्न यह है कि यदि सिर को ठीक हालत में करते हैं तो वह फिर उसी हालत में कर लेता है। बुखार हो जाता है। पेशाब बन्द हो जाता है। दूध का स्रोत कम हो जाता है। जानवर सिर पटकता है और घबरा जाता है। थन सूज जाते हैं। यदि अच्छी तरह इलाज किया जाय तो कुछ घण्टों में आराम हो जाता है अन्यथा जानवर थोड़ी देर में मर जाता है।

इलाज—पहले इस बीमारी में बहुत से जानवर मर जाते थे, परन्तु अब इसका माकूल इलाज मालूम हो गया है और अब ९० फीसदी जानवर इस बीमारी से बचाये जा सकते हैं। इस बीमारीवाले जानवर के थनों में से सब दूध निकाल लो ताकि उनमें जरा-सा भी दूध न रहे। अब एक बाइसिकल के वालटचूब को साइकिल की पिचकारी की नली में लगाकर साफ कर लो और नीम के तेल या कपूर मिले हुए तिल के तेल में खूब अच्छी सिकल में हवा भरते हैं इसे तरह हवा भरनी शुरू कर दे। पहला आदमी अपने बायें हाथ से तमाम ऐन या बाक (udder) पर धीरे-धीरे मालिश

करे ताकि हवा तमाम बाक में जज्ब हो जाय । इस प्रकार थन में हवा भरने के बाद थन भली प्रकार कपड़े की चौड़ी पट्टी या फीते से बांध देने चाहिए ताकि थन से हवा बाहर न निकले और असर कर सके । आवश्यकता हो तो थोड़ा कपूर मिले या सादे तेल की मालिश की जा सकती है । थोड़ी देर बाद हो सके तो पशु को करवट दिला देना चाहिए । तीन या चार घंटे में पशु को खड़ा हो जाना चाहिए । जब गाय खड़ी हो जाय तो फिर हवा भरनी चाहिए और १२ घंटे तक दूध नहीं निकालना चाहिए । जानवर को बांधना नहीं चाहिए ।

खान-पान—इस बीमारी में खाने-पीने को बहुत कम देना चाहिए और जो कुछ दें, वह शीघ्र पचनेवाली चीज होनी चाहिए, जैसी अलसी या चोकर की चाय, दूध, दलिया इत्यादि और घनी बीमारी की अवस्था में जहां तक हो, पानी नहीं पिलाना चाहिए । जानवर के अच्छा होने पर शीघ्र पचनेवाला चारा-दाना देना चाहिए और थोड़ा-थोड़ा करके कुएँ का ताजा पानी पिलाना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—यह बीमारी आमतौर से ज्यादा दूध देनेवाले जानवरों की ही होती है । बीमारी होते ही यदि जानवर के इलाज का तुरन्त प्रबंध नहीं किया जाता तो जानवर के मर जाने का अन्देशा रहता है । जानवर को अधिक से अधिक सफाई की हालत में रखना चाहिए और और थनों को बराबर कपूर या सुहागा मिले तेल से चुपड़ते रहना चाहिए ताकि गाय को इस बीमारी से अच्छी हो जाने के बाद, अवसर थन सूजने की बीमारी हो जाया करती है, वह न होने पावे । अच्छा तो यह है कि यदि आपके गांव में या आस-पास कहीं रस-कपूर मिल जाय तो एक उड़द के बराबर डली हरे केले को चीरकर उसके बीच में रखकर गाय को खिला दीजिए ताकि गाय थनों की बीमारी से बच सके । ज्यादा दूध देनेवाली गाय का दूध ब्याने के बाद पहली बार एकदम से सब नहीं निकालना चाहिए, बल्कि थोड़ा-थोड़ा करके दो-तीन बार में निकालना चाहिए । ऐसा करने से इस बीमारी के होने का खतरा कम हो जाता है ।

हवा भरने के समय यह खयाल रखना चाहिए कि हवा के साथ रेत-मिट्टी या अन्य किसी प्रकार की कोई चीज या गंदगी पम्प द्वारा गाय के थनों में न जाय, नहीं तो वह हानि करेगी ।

(१२) चेचक या काउ पाँक्स

यह बीमारी उस आदमी द्वारा फैलती है, जिस आदमी के हाल में ही टीका लगा हो या उस दूध दुहनेवाले से, जिसने इस बीमारी से पीड़ित ढोर का दूध निकाला हो । बिना हाथ धोये दूसरे ढोर के दुहने से उनमें बीमारी फैलती है या बीमार ढोर का फफोला फूट जाने पर फफोले का जहर तन्दुरुस्त ढोर के किसी स्थान पर या फोड़ा-फुन्सी आदि में लगने से या अन्य किसी नाजुक जगह पर लगने से भी फैलती है ।

पहचान—बाक या ऐन पर, थनों पर या बच्चों के आंख, नाक या नाक के पास आरम्भ में छोटी-छोटी लाल रंग की फुन्सिया-सी दिखाई देती हैं, जिनमें सफेद रस भरा हुआ होता है । ये दस दिन तक बढ़ती चली जाती हैं और बाद में सूखने लगती हैं और करीब-करीब बीस रोज तक सूखकर खत्म हो जाती हैं । इसमें जानवर को आरम्भ में तो थोड़ी तकलीफ होती है, परन्तु बाद में कोई खास तकलीफ नहीं होती और न दूध देनेवाले जानवरों का विशेष दूध ही घटता है ।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला और जहांतक हो, मुलायम चारा-दाना देना चाहिए और यह खयाल रखना चाहिए कि जानवर किसी प्रकार बीमारी के दिनों में कमजोर न होने पावे ।

अन्य हिदायतें—इस बीमारी से बीमार जानवर को अन्य स्वस्थ जानवरों से अलग कर देना ही अच्छा होता है । अगर किसी वजह से अलग न कर सकें तो इस बात का खास खयाल रखना चाहिए कि इस बीमारी की छूत दूसरे जानवरों को न लगे । दूध दुहनेवाले आदमी को खास करके नीम के पानी या साबुन और सोडा इत्यादि से भली प्रकार हाथ धोये बिना अच्छे जानवरों को दुहना या उसको हाथ लगाना या उसकी सानी, कुट्टी

करना ठीक नहीं है। किसी भी जानवर या मनुष्य के काम में आनेवाले बर्तन या चीज को हाथ नहीं लगाना चाहिए। जिस बर्तन में दूध दुहा गया हो, उस बर्तन को भी बिना सोडा व राख इत्यादि से धोये काम में नहीं लाना चाहिए। इस बीमारी से पीड़ित जानवर के दूध में दूध दुहनेवाले का हाथ या फफोले या फुन्सियों का रस नहीं लगाना चाहिए। ऐसे जानवरों के दूध को साधारण खाने-पीने के काम में जहांतक हो सके, न ले। खोया बनाने या गर्म करके दही जमाकर घी निकालने के काम में लिया जा सकता है। अगर किसी लाचारी हालत में दूध पीने इत्यादि के काम में लिया ही जाय तो उसको कम-से-कम आध घंटे उबाले बिना काम में न लें।

(१३) गजचर्म या मेञ्ज

यह छूत से होनेवाली बीमारी है। यह प्रायः कमजोर, गंदे, तंग जगह में रहनेवाले जानवरों को हुआ करती है। यह बीमारी जानवर के स्थान पर उसके साथ रहनेवाले जानवर को या बीमार जानवर से छू जानेवाले जानवरों को हो जाया करती है।

पहचान—जानवर के बीमारी के असरवाले हिस्से में बहुत जोर की खाज चलती है। वह उस हिस्से को खुजलाता रहता है। यहां तक कि बाज दफा वहां जरूम हो जाता है, बाल गिर जाते हैं, खाल मोटी हो जाती है और उसमें सलवट पड़ जाती है। प्रायः आरम्भ में यह बीमारी थुई और पूछ पर होती है, फिर वहां से धीरे-धीरे तमाम शरीर में फैलती है।

इलाज—इस बीमारी से पीड़ित जानवरों को अच्छे जानवरों से अलग रखना चाहिए और उनके रहने के स्थान की खास तौर से सफाई रखनी चाहिए। जिस हिस्से में यह बीमारी हो गई हो वहां के बाल काटकर उसको भली-भांति गरम पानी और साबुन से धोकर साफ कर देना चाहिए। बाद में जानवर को धूप में खड़ा करके गोबर और सरसों का तेल मिलाकर १०-१५ मिनट तक मालिश करनी चाहिए। उसके बाद घंटा भर तक जानवर को धूप में रखकर फिर गरम पानी से धोकर उस जगह को कपड़े

या टाट से सुखाकर नीचे लिखे तेल की दिन में एक बार रोज़ मालिश करनी चाहिए और नीचे लिखी खाने की दवा एक बार रोज़ देनी चाहिए ।

मालिश करने का तेल

गंधक	१ हिस्सा
घी या तिल का तेल	८ हिस्सा
नीम का तेल	१४ हिस्सा

गंधक बारीक पीसकर, सब चीज़ें मिला लो । आग पर भली प्रकार पकाने के बाद ठण्डा होने पर मालिश करो ।

घासलेट या मिट्टी का तेल	१ हिस्सा
मुंह-हाथ धोने का साबुन	१ "
पानी (पीने का)	२० "

साबुन को गरम पानी में भली प्रकार घोलकर मिट्टी का तेल मिलाकर खूब फेंटो । जब मिलकर एक-सा दूध जैसा हो जाय तब काम में लो । हमेशा काम में लेने के पहले उसको भली-भांति मिला लेना चाहिए ।

खाने की दवा

खाने का नमक	एक छटांक
गंधक बारीक पिसी हुई	आधा तोला

आध सेर पानी में घोलकर नाल द्वारा दें या मिस्सी या सादी रोटी के बीच में रखकर खिला दें । गरमी में नीचे लिखी दवा दी जा सकती है—

चावल	आधा सेर
बारीक पिसे हुए नीले के पत्ते	१ छटांक

दोनों को पानी के साथ पका लो । ठण्डा होने पर आध सेर खट्टी दही मिलाकर हाथ से मथ लो । गरमी के मौसम में एक सप्ताह तक रोज़ दो । दवा देने के दो-तीन घंटे बाद तक पानी न दो ।

खान-पान—कब्ज होनेवाली कोई चीज़ न दो । हो सके तो बीमारी के दिनों में चने की चूरी, दाना या भूसी थोड़ी-बहुत जरूर खिलावें ।

अन्य हिदायतें—शुरू में ठीक इलाज करने से यह बीमारी आसानी से अच्छी हो जाती है, नहीं तो जानवर को बहुत तकलीफ देती है और बरसों तक अच्छी नहीं होती। दूसरे जानवरों को इस बीमारी से बचाना मुश्किल है। इसलिए शुरू में ही इस बीमारी की दवा-दारू करनी चाहिए।

(१४) खुजली

खुजली भी छूत की बीमारी है। गजचर्म और खुजली में विशेष अन्तर नहीं है। गजचर्म खुजली से कहीं अधिक खतरनाक और दुखदायी बीमारी है और ज्यादा अर्से में अच्छी होती है। खुजली इसके मुकाबिले में कम दुखदायी और जल्दी अच्छी हो जानेवाली बीमारी है। खुजली का इलाज, खान-पान व अन्य हिदायतें सब गजचर्म जैसी समझनी चाहिए। खुजली-वाले जानवर के जिस स्थान पर खुजली हो, वहां पर साबुन व गरम पानी से धोकर दवा की मालिश तो करनी ही चाहिए, लेकिन यह अच्छा होगा कि खुजली की हालत में जानवर के तमाम शरीर को संभव हो सके तो भली प्रकार साबुन व गरम पानी से धोकर अन्यथा साधारण तरीके से दवाई की मालिश कभी-कभी कर दिया करें। साबुन न हो तो तन्दुरुस्त गाय का गोबर मलकर नीम के गरम पानी से धोकर दवा की मालिश कर दिया करें।

(१५) दाद या रिंग वर्म

यह बीमारी भी गन्दी और तंग जगह में रहनेवाले जानवरों को होती है। छोटे बच्चों को बहुत होती है।

पहचान—गजचर्म की तरह से जानवर की खाल पर इसका असर होता है और इसमें गोल-गोल छल्ले से शरीर पर हो जाते हैं।

इलाज—गजचर्म और इस बीमारी का लगभग एक ही इलाज है। इस बीमारी में पीने की दवा, जब तक कोई खास बात न हो, आमतौर से नहीं दी जाती।

खान-पान और अन्य हिदायतें—गजचर्म (Manage) के अनुसार।

(१६) कीड़ों के दुम्बल या मुजे (मनिया) फूटना या बार्बल पलाईज

जिन जानवरों के ऊपर खुरहरा और ब्रश अच्छी तरह नहीं फेरा जाता और उनकी सफाई नहीं रखी जाती, उनको अक्सर यह बीमारी हो जाती है। वर्षा ऋतु के अन्त में इस बीमारी के कीड़े जानवर के शरीर पर आ जाते हैं और अपना काम शुरू कर देते हैं। गर्मियों के आरम्भ में इस बीमारी के कीड़े पूरे ताकतवर हो जाते हैं और खाल में छेद करके बाहर निकल आते हैं या जानवर के शरीर पर सख्त काले-से रंग की फुंसी-सी हो जाती है। इससे जानवर को कोई विशेष नुकसान नहीं होता परन्तु इस बीमारी से उसकी उपयोगिता पर असर पड़ता है और मरने के बाद उसकी खाल कम कीमती हो जाती है।

इलाज—जिस जानवर को यह बीमारी हो जाय, उसका पीड़ित स्थान भली प्रकार चूने और तम्बाकू के गरम पानी से धोकर २ सेर पानी में एक छटांक ताजा चूना मिलाकर उसमें ४ छटांक बारीक पिसी हुई तम्बाकू खूब मिलाकर घोल लेना चाहिए और २४ घंटे रखने के बाद उसको भिरभिर कपड़े में छान लेना चाहिए और सफेदी करने की मूँज की जैसे कूची होती है, वैसी बहुत बारीक एक अंगुल मोटी कूची बनाकर या नीम की दतवन को दांत से कुचरकर कूची बना लें या किसी सरकण्डे या लकड़ी के सिर पर जरा-सा कपड़ा बांधकर कूची या ब्रश जैसा बना लें और उसको दवा में डुबोकर पीड़ित स्थान पर दवा लगानी चाहिए। दवा लगाने में ख्याल रखना चाहिए कि दवा उन फुन्सियों के छेदों द्वारा अच्छी तरह अन्दर पहुँच जाय ताकि अन्दर यदि इस बीमारी के कीड़े हों तो वह मर जाय। इस प्रकार बराबर दवाई लगाने से आराम होता है।

अगर छेद फूटकर उनमें से खून जैसा मादा बाहर आना शुरू हो जाय तो हाथ से दबाकर गन्दा मादा निकालकर एक सींक के ऊपर जरा-सी रूई बांधकर उसे दवाई में डुबोकर उपरोक्त दवाई उसके अन्दर भली

प्रकार लगा देनी चाहिए । यह दवा तैयार न हो तो नीम का तेल फुरेहरी द्वारा उपरोक्त दवा की तरह लगा देना चाहिए ।

पीने के लिए

२ तोला खारी नमक

१ तोला गन्धक

एक पाव (गुनगुने) पानी में घोलकर १ हफ्ते तक पिलाओ ।

खान-पान—कोई खास बात नहीं । कब्ज करनेवाली खुराक कम देनी चाहिए ।

अन्य हिदायतें—जानवर को पास रखें । रहने के स्थान की सफाई जरूर करते रहें । जिस जगह यह बीमारी हो, उस इलाके के जंगल में वर्षा के अन्त समय में अपने ढोर नहीं चराने चाहिए; क्योंकि उसी समय इस बीमारी के कीड़े अच्छे जानवरों पर हमला करते हैं ।

(१७) जूं या लाइस

जूं भी खून की बीमारी है । यह भी केवल स्पर्श-मात्र से एक जानवर से दूसरे जानवर को लग जाती है । लेकिन यह बीमारी खतरनाक नहीं होती । यह प्रायः छोटे बच्चों को ही हुआ करती है । यदि अहतियात रखी जाय तो जल्दी ही दूर हो जाती है, वरना ज्यादा फैलकर बच्चे को बहुत कमजोर कर देती है ।

इलाज—एक हिस्सा तम्बाकू और दो हिस्से मुंह-हाथ धोने का साबुन, ४० हिस्से पानी में उबालकर ठण्डा कर लें और फिर उसमें १ हिस्सा मिट्टी का तेल अच्छी तरह मिलाकर मल दें । मलने के एक या दो रोज बाद साबुन और गर्म पानी से भली प्रकार धो दें । १ हिस्सा तारपीन का तेल और ६ हिस्सा सरसों, तिल या नारियल का तेल मिलाकर मालिश करने से भी आराम होता है । उपरोक्त दोनों दवा दो-चार दिन लगातार से ज्यादा नहीं लगाना चाहिए । दो-चार दिन छोड़कर फिर दुबारा-तीबारा लगाया जा सकता है ।

बिना छूत की या साधारण बीमारियां

साधारण (बिना छूत की) बीमारी इतनी खतरनाक नहीं होती, जितनी कि छूत की बीमारी होती है। परन्तु कभी-कभी साधारण बीमारी में भी लापरवाही करने से पशु का जीवन ही संकट में पड़ जाता है। प्रायः साधारण (बिना छूत की) बीमारियां खान-पान, रहन-सहन और देख-भाल में त्रुटि होने के कारण होती हैं। इसलिए यदि आरंभ ही से पशु के खान-पान, रहन-सहन और देख-भाल का पूरा खयाल रखा जाय तो उन बीमारियों से तो पशु को छुटकारा रहे। पशु को कोई साधारण बीमारी हो जाने पर यदि उसके खान-पान, रहन-सहन, देख-भाल में होनेवाली कमियों को भी दूर कर-दिये जाय और उसे आराम दिया जाय तो उसके प्रभाव से ही पशु का आधा दुख दूर हो जावेगा। औषधि तो केवल रोग की रोक-थाम और पशु को शीघ्र ही साधारण हालत में लाने के साधनों को मदद करने के लिए है। अतएव साधारण बीमारियों की हालत में दवाइयों पर पूर्ण रूप से निर्भर न रहें, बल्कि पशु के खान-पान, रहन-सहन आदि का अधिक खयाल रखें।

खाने-पीने, रहने-सहने के बारे में पहले अध्याय में भी काफी बताया जा चुका है। उन सब बातों को भलीभांति समझकर अमल में लाना चाहिए। बीमारी की हालत में पशु को साफ-सुथरा रखना चाहिए। यदि वह गोबर आदि में सन जाय तो पोंछकर साफ कर दें। पशु के साथ-साथ उनके रहने का स्थान भी साफ होना चाहिए। ऐसा स्थान हो जहां किसी तरह की सील, बदबू, कीचड़ आदि न हो और हवा भली प्रकार आ-जा सके। परन्तु तेज हवा, अधिक सर्दी-गर्मी और वर्षा से बचने का पूरा प्रबन्ध हो। खाने के लिए पशु को सदैव ताजी और हल्की, मुलायम और स्वादिष्ट खुराक देनी

चाहिए । गली, सड़ी, बदबूदार देर में पचनेवाली सख्त गिज़ा कभी न दें । बीमार जानवर को कुएं का ताजा और साफ पानी तसले, नांद या बाल्टी में अलग पिलाना चाहिए । यदि पशु के फोड़ा, फुन्सी, चोट, जख्म हो जाय तो जख्म साफ रखने में तथा मरहमपट्टी करने में पूरी सफाई बरती जाय । मक्खी-मच्छर से जानवर को बचाइये । ऐसा समझकर कि यह तो जानवर है, इसको सफाई आदि की क्या आवश्यकता है, लापरवाही नहीं करनी चाहिए । इसमें भूल होने से रोग बढ़ जाता है, परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है और पशु भी अधिक दुःख भोगता है । जहां दवा का प्रबन्ध किया जाय वहां जानवर की यथोचित गिज़ा व आराम का भी खयाल रखा जाना चाहिए । बीमारी की दशा में पशु को जितना भी आराम मिलेगा और जितनी सावधानी उसकी टहल और खान-पान में बरती जायगी, उतनी ही शीघ्रता से उसे आराम होगा ।

(१) बदहजमी या अपच

यह बीमारी जानवरों को अक्सर हो जाती है । इसमें जानवर न तो पूरा चारा खाता है और न काम ही कर सकता है । बदहजमी अन्य बीमारियों का कारण होती है । सड़ा-गला, बदबूदार चारा, खाने तथा साफ और काफी पानी न मिलने से यह गीमारी हो जाती है । मेदा अपना काम ठीक नहीं करता और खाना हजम करने में कमजोर हो जाता है । कभी-कभी पेट के कीड़े व पुट्टों की कमजोरी भी इसका कारण होती है । बाज दफा जिगर की खराबी और अधिक सर्दी-गर्मी लगने से व अनियमित रूप से कम या ज्यादा काम लेने से भी बदहजमी हो जाती है ।

पहचान—जानवर खाना पूरी तरह हजम नहीं करता और दिन-प्रति-दिन कमजोर होता जाता है । पूरा चारा नहीं खाता और न ठीक जुगाली करता है । पानी ज्यादा पीता है । जानवर सुस्त-सा रहता है, कब्ज हो जाता है । कभी-कभी बजाय कब्ज के पतले रंग-बिरंगे दस्त भी हो जाया करते हैं, जिनमें बिना पचा खाना निकलता है ।

इलाज—पहले जानवर को जुलाब की दवा देकर हल्के दस्त कराने चाहिए। इसके लिए नीचे लिखे नुस्खों में से कोई-सा नुस्खा दे सकते हैं—

(१) सरसों या रेंडी का तेल १० छटांक

सोंठ २ तोला

सोंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर नाल (ढरके) से दीजिए।
साधारण अवस्था में यह ठीक रहता है।

(२) खारी नमक ८ छटांक

सोंठ २ तोला

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर नाल से पिलावें। यदि जरा तेज जुलाब देना हो तो यह अच्छा है।

(३) सरसों या तिल का तेल ८ छटांक

तारपीन का तेल आधी छटांक

दोनों को घोलकर नाल से पिला दें। पेट के कीड़े, अफारा और बदबू-दार दस्तों में यह अच्छा रहता है।

उपरोक्त दवाइयों में से किसी दवा को दें। यदि २-३ घण्टे तक दस्त न हों तो उसी चीज की आधी खुराक दुबारा देनी चाहिए। दस्त हो जाने के अगले दिन से नीचे लिखी कोई दवाई सुबह को एक बार दें।

(४) सोंठ १ तोला

राई १ तोला

अजवायन २ तोला

नमक १। तोला

सम्भव हो तो काला नमक लें अन्यथा सादा खाने का नमक लें।
इन सब चीजों को कूट-पीसकर पावभर गरम पानी के साथ पिलावें और बाद में दो घण्टे तक पानी न पिलावें।

(५) खाने का नमक २ तोला

नौसादर १ तोला

सोंठ १ तोला

कसीस	१/२ तोला
कुचला	१/४ तोला

या

भंग	१ तोला
-----	--------

सबको कूट-पीसकर पावभर गरम पानी के साथ मिलाकर नाल से पिलावें ।

(६) काला नमक	३ तोला
जीरा	३ तोला
राई	३ तोला
कचरी	३ तोला
अजवायन	३ तोला
सोंठ	३ तोला
सेंजना की छाल (यदि मिल जाय तो)	३ तोला

सबको मिलाकर कूट-पीसकर छान लें । यदि संभव हो तो चौगुने गरम पानी में या छाछ में मिलाकर दो-चार रोज धूप में या गरम जगह में रखकर सड़ा लिया जाय और फिर पावभर रोज दिया जाय अन्यथा एक छटांक दवा पावभर गरम पानी में मिलाकर पिला दें ।

खान-पान—जानवर की खुराक कम कर देनी चाहिए । थोड़ी-थोड़ी देर में और थोड़ी मात्रा में देनी चाहिए । पहले दिन मुलायम घास व चावल का मांड देना चाहिए । दूसरे दिन मुलायम चारे के अलावा दलिया, चोकर या अन्य शीघ्र पचनेवाला कोई दाना दिया जा सकता है । इसी प्रकार धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों भूख बढ़ती जाय, थोड़ा-थोड़ा साधारण चारा-दाना देना चाहिए और फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जब जानवर साधारण हालत में आ जाय तब रोजाना की खुराक दी जाय ।

अन्य हिदायतें—जहांतक हो सके जानवर को आराम देना चाहिए और देर में पचने व कब्ज करनेवाला चारा-दाना नहीं देना चाहिए ।

जानवर को तेज़ गर्मी-सर्दी से बचाना चाहिए, नहीं तो बीमारी के बढ़ जाने का अंदेशा रहेगा ।

(२) अफारा या पेट फूलना

यह बीमारी अक्सर जानवरों के ज्यादा चारा खा लेने या उसको एकदम अच्छा चारा-दाना भर पेट मिलने से हुआ करती है । या कभी ऐसा होता है कि जब अकाल-पीड़ित या भूखे जानवर अकाल के इलाके से सुकाल की जगह आते हैं और एकदम से अधिक घास खा लेते हैं तब यह बीमारी हो जाती है । बाज दफा जानवर खुल जाता है और वह चुपके से अनाज के गोदाम में या जहां दाना इत्यादि रक्खा रहता है वहां जाकर दाना इत्यादि जल्दी-जल्दी खा जाता है । जब वह दाना या अनाज पेट में फूलता है तो अफारा हो जाता है । यह मेदे की बीमारी है जो खाई हुई खुराक मेदे में ठस जाने से होती है ! जो चीजें हजम नहीं होतीं या कहीं अटक जाती हैं और पेट में पड़ी रहकर सड़ने लगती हैं उनसे गैस बनने लगती है और पेट फूलकर अफारा आ जाता है । यदि इस गैस को जल्दी से निकाला न जाय तो गैस अधिक मिकदार में पैदा होकर पशु की मौत का कारण हो जाती है । सड़े-गले चारे-दाने से, वर्षा में नई उगी हुई घास या हरा चारा एकदम ज्यादा खा लेने से, ज़हरीले घास खा जाने से भी यह बीमारी हो जाती है । खाने के बाद तुरन्त पशु से काम लेने से भी यह बीमारी हो जाती है ।

पहचान—पेट फूल जाता है । बाईं कोख ज्यादा उभरी हुई होती है और दाहिनी भी उठी हुई होती है । पेट में हवा (गैस) भरी हुई मालूम होती है । पेट बजाने से ढोल की तरह बोलता है, सांस बड़ी मुश्किल से आती है । पशु बेचैन होकर उठता-बैठता है । यदि जल्दी इलाज न किया जाय तो मर जाने का खतरा रहता है ।

इलाज—आरम्भ में नीचे लिखों में से कोई एक नुस्खा देना चाहिए—

- (१) सरसों या अरण्ड या तिल का तेल ८ छटांक
तारपीन का तेल २ तोला
दोनों को मिलाकर नाल से पिलावें ।
- (२) सरसों का तेल ८ छटांक
खारी नमक २ छटांक
दोनों को मिलाकर नाल से पिलावें ।
- (३) १० तोला राई बारीक पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर पिलावें ।
- (४) सोंठ २ तोला
हींग ६ माशा
नमक १० तोला
काली मिर्च ६ माशा
तारपीन का तेल २॥ तोला
सबको घोट-पीसकर गर्म पानी के साथ पिलावें ।
- (५) काला नमक २ तोला
अजवायन २ तोला
आक के पत्ते १ छटांक
सबको घोट-पीसकर गर्म पानी में मिलाकर नाल से पिलावें ।
- (६) आम का अचार २ छटांक खूब घोट-पीसकर गर्म पानी के साथ पिलावें ।

यदि उपरोक्त दवाइयों में से किसी के देने से दो घंटे तक आराम न हो, तो फिर दुबारा एक खुराक दें । यदि फिर भी अफारा कम न हो तो साबुन घोलकर निवाये पानी से पशु को वस्ति-कर्म या एनिमा कराना चाहिए । एनिमा कराने की विधि १२वें पृष्ठ पर लिखी हुई है । अगर एनिमा से भी आराम न हो और अफारा बढ़ता ही जाय तो पशु की बाईं कोख में जहां अधिक फूला हुआ हिस्सा हो वहां चाकू से छेदकर हवा निकाल देनी चाहिए । छेद करने के पहले चाकू को आग में गर्म करे और लाल हो

जाने पर संभव हो तो नीम से वरना सरसों या कपूर के तेल में डालकर ठण्डा कर लेना चाहिए या १५-२० मिनट नीम के पत्तों के पानी में उबाल लेना चाहिए । अफारा कम हो जाने पर बदहजमी के नुस्खे नं० ४, ५, ६ में से कोई-सा नुस्खा या नीचे लिखा नुस्खा दिन में एक बार देना चाहिए ।

सोंठ	१ तोला
काली मिर्च	१ तोला
काला नमक	१ तोला
हींग	॥ तोला

या

नौसादर १ तोला

सबको कूट-पीसकर आध सेर गर्म पानी में मिलाकर नाल से पिलावें ।

खान-पान—इस बीमारी में जानवर को चारा-दाना व पानी उस समय तक बिल्कुल नहीं देना चाहिए कि जबतक अफारा बिल्कुल उतर न जाय । उसके बाद जल्दी हजम होनेवाली खुराक थोड़ी मिकदार में देनी चाहिए और जब जानवर उसे ठीक पचाने लगे और उसकी मामूली हालत हो जाय तो धीरे-धीरे खुराक बढ़ाकर फिर रोजाना की खुराक दे सकते हैं ।

अन्य हिदायतें—अफारा कम करने की दवाई देने के बाद सम्भव हो तो जानवर को थोड़ा टहलाना चाहिए और उसकी कोख पर गर्म पानी से सेक और तारपीन के तेल की मालिश करनी चाहिए । अफारा उतरने पर एकदम उससे काम नहीं लेना चाहिए । अफारेवाले जानवर को धूप में नहीं रखना चाहिए । यदि कोख को चीरकर ही गैस निकालनी पड़े तो उस जगह का आगे बताई हुई विधि से जरूम जैसा इलाज करें ।

(३) पेट का दर्द

जब पशु कड़ी सूखी घास खा लेता है और पानी पीने को कम मिलता है तो वह सूखकर पेट में जम जाती है और पेट में दर्द करने लगती है ।

कभी-कभी गर्मी के दिनों में एकदम ठण्डा पानी पिलाकर खड़ा कर देने से भी यह बीमारी हो जाती है ।

पहचान—पशु जुगाली नहीं करता । खाना-पीना छोड़ देता है । बेचैन होकर उठता-बैठता है, पांव पीटता और दांत पीसता है, गोबर नहीं करता या कभी-कभी पतला, थोड़ा और बदबूदार गोबर करता है और कभी-कभी अफारा भी हो जाता है ।

इलाज—बदहजमी की नं० १, २, ३ में से कोई-सी एक दवा दस्तों के लिए दें ताकि दस्त होकर गन्दा मादा निकल जाय । फिर नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा पहले रोज एक दफा सुबह और एक दफा शाम को दें । फिर बाद में दो रोज तक दिन में एक बार दें । दवा देने के २-३ घंटे तक खाना न दें ।

- | | |
|---|---------|
| (१) सोंठ | २ तोला |
| हींग | ६ माशा |
| दोनों को कूट-पीसकर २ छटांक गुड़ के साथ मिलाकर खिला दें । | |
| (२) पीने का तम्बाकू | २ तोला |
| पुराना गुड़ | ६ छटांक |
| पाव भर पानी में पकाकर नाल से पिला दें । | |
| (३) अजवायन | २ तोला |
| काली मिर्च | १ तोला |
| सोंठ | १ तोला |
| गुड़ | ४ छटांक |
| औटी बनाकर अर्थात् आधा सेर पानी में पकाकर गुनगुना पिला दें । | |
| (४) अजवायन | २ तोला |
| काला नमक | १ तोला |
| सोंठ | १ तोला |
| लहसुन | २ तोला |
| सबको कूट-पीसकर गर्म पानी में मिलाकर पिलावें । | |

(५) लहसुन	१ तोला
प्याज	१ छटांक
काला नमक	१ तोला
काली मिर्च	१॥ तोला
अजवायन	१ तोला
हींग	१॥ तोला
सोंठ	१ तोला

खान-पान—दस्त जबतक लगे तबतक कोई चीज खाने-पीने को नहीं देनी चाहिए। उसके बाद हाजमा ठीक करने की दवा देने के बाद सिवा गर्म मांड, चाय या गर्म पानी के दो-तीन घंटे तक कोई खुराक नहीं देनी चाहिए। इसके बाद शीघ्र पचनेवाला चारा, दलिया, चोकर इत्यादि देना चाहिए। पीने को ताजा पानी दें। फिर धीरे-धीरे चार-पांच दिन में साधारण चारा-दाना देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—यह बीमारी उपरोक्त दवा के देने से यदि अच्छी होती न मालूम दे तो बीमारी का निदान (diagnosis) अर्थात् बीमारी की जांच दुबारा करानी चाहिए और देखना चाहिए कि कोई और बीमारी तो नहीं है, क्योंकि इस बीमारी के लक्षण कुछ अन्य साधारण और कुछ छूत की बीमारियों से भी मिलते-जुलते होते हैं।

(४) कब्ज

कब्ज प्रायः बदहजमी के कारण ही होता है। यह बीमारी पशुओं के खाने-पीने में गड़बड़ी होने के कारण व सूखा चारा ज्यादा खा लेने और पानी देर तक न मिलने के कारण हो जाती है। इससे और अनेक बीमारियां उठ खड़ी होती हैं।

पहचान—इस बीमारी में गोबर सूखा और कड़ा होता है या मींगनी जैसा आंव या आंव जैसे सफेद लुआबदार माद के साथ होता है। कभी-

कभी गोबर बिल्कुल नहीं होता, जिसकी वजह से जानवर व्याकुल हो जाता है और खाना-पीना कम कर देता है।

इलाज—आरम्भ में दस्त कराने के लिए नीचे लिखे नुस्खे में से एक देना चाहिए।

(१) अमलतास २॥ तोला

सौंफ २ छटांक

दोनों को कूट-पीसकर आधा पाव गुड़ या शीरे में मिलाकर पाव या डेढ़ पाव गर्म पानी के साथ पिला दें। यह बहुत हल्के जुलाब का नुस्खा है

(२) एलवा शुद्ध १ तोला

सोंठ १ तोला

दोनों को बारीक कूट-पीसकर एक पाव सरसों या तिल का तेल या शीरे में मिलाकर नाल से पिला दें।

यदि २-३ घंटे तक दस्त न हो तो फिर दुबारा आधी खुराक उसी चीज की देनी चाहिए। फिर भी यदि दस्त न हो और नुस्खा नम्बर ३-४ या ५ से भी न हो तो आखीर में नुस्खा नम्बर ६ आजमाइए।

(३) सरसों या अरण्ड का तेल १० छटांक

सोंठ २ तोला

सोंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर नाल से पिला दें।

(४) तिल्ली या सरसों का तेल आधा सेर

तारपीन का तेल १॥ छटांक

दोनों को मिलाकर नाल से पिला दें।

(५) खारी नमक ८ छटांक

सोंठ २ तोला

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर नाल से पिला दें।

(६) घी ३ पाव

गर्म दूध १ सेर

घी को गरम करके दूध में मिलाकर जानवर को पिला दें। यदि फिर भी दस्त न हो तो वस्ति-कर्म (एनिमा) कराना चाहिए।

दस्त हो जाने पर हाज़में के लिए बदहज़मी के नुस्खे नं० ४, ५, ६ में से कोई-सा नुस्खा एक या दो दिन तक दें।

खान-पान—जानवर को खुराक थोड़ी-थोड़ी देर में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में देनी चाहिए। पहले दिन मुलायम घास व चावल का मांड देना चाहिए। दूसरे रोज मुलायम या हरे चारे के अलावा दलिया, चोकर या अन्य जल्दी पचनेवाला कोई दाना दिया जा सकता है। इस प्रकार धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों भूख बढ़ती जाय थोड़ा-थोड़ा साधारण चारा देना चाहिए और फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जब जानवर साधारण हालत में आ जाय तब रोजाना की चीज़ें दी जायें। कुछ दिन सूखा चारा जहां तक हो कम दीजिए।

अन्य हिदायतें—इस बीच में जहां तक हो जानवर को आराम देना चाहिए और देर में पचने व कब्ज करनेवाला चारा-दाना नहीं देना चाहिए।

(५) मुंह में कांटे या छाले पड़ जाना

ये प्रायः बदहज़मी से, कोई बहुत तेज गर्म जलती हुई चीज़, चूना वगैरा कटाव करनेवाली या कोई बहुत कड़ी चीज़ें खा लेने से, या भीतरी गर्मी से हो जाते हैं। इसके अलावा यह बीमारी कुछ छूतवाली बीमारियों का लक्षण भी है। इसलिए इसकी पहचान में यह विचार कर लेना चाहिए कि यह छूत की वजह से तो नहीं है।

पहचान—मुंह से बदबू आना तथा मुंह में हाथ डालने से गर्म मालूम देना, मुंह से भभका-सा निकलना तथा भाग राल का गिरते रहना, मुंह में छाले होना, मुंह के कांटों का बढ़ जाना और जीभ पर सूजन होना, इसके लक्षण हैं। कभी-कभी इस बीमारी में बुखार भी हो जाता है।

इलाज—शुरू में बदहज़मी की बीमारी में बताये दस्तों की दवा नं० १, २, ३ में से कोई एक दीजिए, ताकि दस्त होकर पेट साफ हो जाय

तथा गंदे माद्रे के निकल जाने से कुछ गर्मी का असर भी कम हो जाय । फिर मामूली हालत में नमक और फिटकरी के गर्म पानी से भली प्रकार मुंह धोकर दरदरा अर्थात् जो अनाज छानने की या आटा छानने की मोटे छेदवाली छननी से छन जाय ऐसा नमक बराबर के सरसों के तेल में मिलाकर उसके मुंह में और कांटे हों तो कांटे की जगह दिन में दो बार सुबह-शाम भलीभांति मल देना चाहिए और पीने के लिए निम्नलिखित दवा उस दवा के मलने से पहले देनी चाहिए—

नमक	३ तोला
चिरायता	१ तोला
जीरा	१ तोला
नौसादर	१ तोला

दवाई लगाने के पहले इन सब चीजों को कूट-छानकर पावभर पानी में धोलकर सुबह-शाम दें ।

यदि इससे लाभ न हो तो आध पाव नीम के पत्ते और सेर भर पानी किसी साफ बर्तन में डालकर आग पर रखकर उबालिए । जब पानी उबल जाय तो उसमें एक तेज चाकू या कैची डाल दो । जब पानी जलकर आधा रह जाय तो बर्तन आग से उतार लो । पानी ठंडा हो जाय तो उससे अपने हाथ धो लो और चाकू या कैची निकालकर जानवर के मुंह के बड़े हुए कांटे काट दो और काटने के बाद हल्दी और नमक बराबर पीसकर सरसों के तेल में पिण्ड बना लो और काटी हुई जगह पर खूब मलकर चुपड़ दो । इस तरह तीन दिन तक बराबर दवा मलनी वा चुपड़नी चाहिए ।

मुंह में जरूम या छाले हों उस समय कीकर की छाल, नमक और फिटकरी तीनों को उबालकर उसके पानी से अन्यथा फिटकरी या नीम के गर्म पानी से मुंह धोकर नीचे लिखी दवा में से कोई एक दिन में तीन-चार बार भली प्रकार लगानी चाहिए ।

(१) सुहागा, कत्था, बारीक पिसी हुई हल्दी, बराबर-बराबर लेकर शहद या शीरा और दोनों न मिलें तो घी में मिलाकर लगानी चाहिए ।

(२) सूखे केले की भस्म	२ तोला
मक्खन	४ तोला
दूध	४ छटांक

सबको मिलाकर पिलाओ और उपरोक्त दवाई पिलाने के बाद केले की भस्म को कपड़छान करके मक्खन में मिलाकर मुंह और छालों पर लगाओ। यदि दो तोला सूखे केले की भस्म एक पाव दूध में मिलाकर पिलाई जाय तो वह भी लाभप्रद होती है।

खान-पान—दवाई लगाने के दो-तीन घंटे बाद तक खाने-पीने को कोई भी चीज नहीं देनी चाहिए। बाद में दलिया, चोकर और मुमकिन हो तो हरा अन्यथा सूखा मुलायम चारा खिलाना चाहिए और कुएं का ताजा पानी पिलाना चाहिए। देर में हजम होनेवाली कोई चीज हर्गिज नहीं खिलानी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के मुंह में हाथ डालने से पहले अपने हाथ खूब धो लीजिए। यदि नाखून बड़े हुए हों तो उनको कटवाकर साबुन से भलीभांति हाथ धो डालना चाहिए। दिन में २, ३ या ४ प्याज की गांठ रोज़ खिलाने से भी गर्मी कम होती है और मुंह के छाले ठीक होते हैं।

(६) पेट के कीड़े

सड़ा-गला चारा-दाना खाने, गन्दा, मैला और मिट्टी मिला हुआ, कीड़े पड़ा हुआ पानी पीने से यह बीमारी हो जाती है। बछड़ों को ज्यादा हुआ करती है।

पहचान—जानवर अच्छी तरह खाता है परन्तु पनपता नहीं और दुबला होता जाता है। यदि गौर से देखा जाय तो उसके गोबर में छोटे-छोटे कीड़े मिलते हैं। ये कीड़े दो प्रकार के होते हैं—लम्बे व गोल। प्रायः दूध पीते बच्चों के पेट में जो मिट्टी बहुत खाते हैं, लम्बे कीड़े पैदा हो जाते

हैं, जिससे उनको कभी-कभी कब्ज हो जाता है या बदबूदार मटियाले दस्त आने शुरू हो जाते हैं।

इलाज—पहले पशु को कोई दस्तों की दवा देनी चाहिए।

सरसों या अरण्ड का तेल	८ छटांक
तारपीन का तेल	२ तोले

मिलाकर दीजिए। बाद में नीचे लिखी दवा में से कोई एक दीजिए—

(१) कत्था	६ माशा
कपूर	३ माशा
खड़िया मिट्टी	१ तोला

भली-भांति मिलाकर आधा सेर मांड या छाछ या पानी में दें।

(२) भंग	१ तोला
कपूर	६ माशा
मेंहदी	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला
बेलगिरी	१ तोला

भली-भांति मिलाकर आधा सेर मांड, छाछ या पानी में दें।

(३) तूतिया या नीलाथोथा	१ माशा
फिटकरी	१ तोला

दोनों को कूट पीसकर आधा सेर ताजे पानी में दें।

यह दवा आखिर में देनी चाहिए जबकि पहले किसी दवा से लाभ न हो।

खान-पान—पहले चारे-दाने को बदल देना चाहिए। पानी की जगह जहाँ तक हो चावल का मांड या सम्भव हो तो छाछ पिलायें। इस बीमारी में जहाँ तक हो पानी न पिलावें। खाने को मुलायम, शीघ्र पचनेवाला चारा, चावल का मांड और दलिया या थोड़ा चोकर दिया जा सकता है।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने की जगह को बिल्कुल साफ रखना चाहिए। गोबर तथा अन्य मैल इत्यादि को साफ करते रहना चाहिए।

यदि जानवर सन जाय तो उसे धोकर टाट, कपड़े आदि से पोंछकर सुखा देना चाहिए ।

(७) पेचिश, खूनी दस्त और आंव

पेचिश यानी जिसमें दर्द के साथ खून व आंव मिला हुआ दस्त बार-बार होता है । कभी-कभी दस्त अधिक दिन तक आनेपर या बदहजमी की वजह से यह बीमारी हो जाती है । पेट में कीड़े होजाने या अन्य बीमारी के कारण भी हो सकती है ।

पहचान—पशु बार-बार आंव या खून मिला कुछ सख्त कुछ पतला गोबर करता है । हर वक्त गोबर करने की इच्छा प्रकट करता है परन्तु थोड़ा-थोड़ा करता है ।

इलाज—सबसे पहले सरसों या अरण्ड या अलसी या तिल का ८ छटांक तेल और १ छटांक कुटी-पिसी सौंफ को मिलाकर पिला देना चाहिए । इसके ७-८ घंटे के बाद नीचे लिखी कोई दवा दें ।

(१) सूखा आंवला	२ तोला
सोंठ	१ तोला
खांड या बताशे	२ तोला

इन सब चीजों को बारीक कूटकर आध सेर पानी में घोल लें, और उसे छानकर पशु को पिला दें ।

(२) खड़िया मिट्टी	२ तोला
कत्था	२ तोला
अफीम या घतूरे के बीज	३ माशे

आधा सेर चावल के मांड में मिलाकर दिन में दो बार दें ।

(३) भंग	१ तोला
कपूर	१ तोला
मेहदी	१ तोला

सफेद जीरा १ तोला
बेलगिरी १ तोला
सबको पीसकर आध सेर चावल के मांड में मिलाकर दें ।

(४) बेलगिरी ५ तोला
खड़िया मिट्टी ११ तोला
सबरे-शाम एक सेर छाछ में मिलाकर दें ।

(३) सौंफ १ तोला
मेंहदी १ तोला
सफेद जीरा १ तोला
बेलगिरी १ तोला
सबको पीसकर आध सेर चावल के मांड में मिलाकर पिला दें ।

खान-पान व अन्य हिदायतें—दस्तों की बीमारी के माफिक ।

(८) दस्त आना

इस बीमारी में पतला गोबर आता है । यह कोई बीमारी नहीं बल्कि अजीर्ण का चिह्न है जोकि खराब चारा, गन्दा पानी आदि के खाने-पीने से हो जाता है । कभी-कभी विशेष सर्दी-गर्मी से या अंतर्द्वियों के विकार से भी ऐसा हो जाता है । एकदम ज्यादा हरी घास खाने से या पेट में कीड़े हो जाने से भी दस्त होने लग जाते हैं ।

पहचान—इस बीमारीवाला जानवर जल्दी-जल्दी पतला गोबर करता है । जुगाली कम करता है या बिल्कुल नहीं करता । कमजोर हो जाता है, पानी ज्यादा पीता है । आखिर में पशु अधिक बेचैन मालूम पड़ता है जैसे कोई कष्ट हो रहा हो । पीठ सिकोड़कर खड़ा हो जाता है ।

इलाज—जिस चीज से दस्त आते हों वह नहीं खिलानी चाहिए और चारा-दाना बदल देना चाहिए । जानवर को सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए । पहले-पहल आंतों की खराश दूर करने के लिए अलसी, तिल, अरण्डी या सरसों का तेल ८ छटांक और सौंफ १ छटांक मिलाकर देनी

चाहिए । बाद में नीचे लिखी कोई भी एक दवा सबेरे-शाम दोनों समय दीजिए—

(१) अजवायन	२ तोला
कत्था	२ तोला
सौंफ	३ तोला
सब चीज घोट-पीसकर आध सेर मांड में मिलाकर दें ।	

(२) बेलगिरी	५ तोला
खड़िया मिट्टी	१। तोला
दोनों को कूट-पीसकर आध सेर पानी में मिलाकर दें ।	

(३) खड़िया मिट्टी	५ तोला
सोंठ	१ तोला
कत्था	६ माशा
भंग	१ तोला
धतूरे के बीज	३ माशे
सब चीजों को अच्छी तरह सिल आदि पर घोटकर आधा सेर मांड में मिलाकर दें ।	

(६) हलक या खाना निगलनेवाली नली का रुक जाना

सख्त व गोल चीज जैसे गाजर, शलजम या इस किस्म की कोई और चीज गले में रुक जाने से या सख्त सूखा चारा-दाना जल्दी-जल्दी निगल जाने से हलक में जाकर गोला-सा बंध जाता है और रुक जाता है, इससे यह बीमारी हो जाती है ।

पहचान—जब इस प्रकार कोई चीज गले में अटक जाती है तो उस समय जानवर जो भी कुछ खाता-पीता है उसे निगल नहीं सकता और वह मुंह और नाक के जरिए वापिस आ जाता है । ऐसे मौके पर धांस या खांसी भी हो जाती है, जिससे जानवर बेचैन हो जाता है और बारबार निगलने की, कै या उल्टी करने की कोशिश करता है ।

इलाज—अटकी हुई चीज को मुंह में हाथ डालकर बाहर निकालने की कोशिश करनी चाहिए। अगर बाहर निकल जाय तो अच्छा है, अन्यथा लचकदार बेंत के सिरे पर थोड़ा कपड़ा बांधकर सिरे को गोलाकार कर ले और फिर उसको घी या तेल में भिगोकर मुंह में डालकर अटकी हुई चीज को अन्दर धकेलने की कोशिश करनी चाहिए और बाहर के हिस्से पर आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करनी चाहिए ताकि अटकी हुई चीज अन्दर चली जाय और जानवर को थोड़ा आराम भी मिले। मालिश करते समय जिस दिशा में अटकी हुई चीज धकेलनी है, हाथ उधर ही को फेरना चाहिए। चीज अन्दर चली जाने के बाद थोड़े से तिल के तेल में थोड़ा भुना और पिसा हुआ सुहागा या कच्चे केले की कपड़छन की हुई राख मिलाकर पिला देनी चाहिए ताकि गले की खारिश को आराम पहुंचे।

खान-पान—खाने के लिए कुछ दिन तक चावल का मांड, दलिया, सत्तू, चोकर तथा हरी घास और यदि हरी घास न मिले तो बहुत मुलायम सूखा चारा देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के मुंह में हाथ डालने के पहले हाथ को भलीभांति धोकर साफ कर लेना चाहिए। बेंत या कपड़ा जो भी अन्दर डाले उसे भी साफ कर लेना चाहिए। यह खयाल रखना चाहिए कि बेंत या हाथ जानवर के मुंह में इस प्रकार से न लगे कि खुरच या जरूम हो जाय।

(१०) पित्ति उच्छलना

यह बीमारी पित्त के विकार के कारण पैदा होती है। जब पित्त खून में मिल जाता है तो खाल में चकत्ते-से पैदा कर देता है।

पहचान—खाल के ऊपर जगह-जगह मच्छर के काटे जैसे गोल-गोल चकत्ते से पड़ जाते हैं जो दो-तीन इंच चौड़े होते हैं। तमाम शरीर में खाज हो जाती है और जानवर बेचैन हो जाता है। ये चकत्ते निकलते और दबते रहते हैं।

इलाज—पहले जानवर को जुलाब देना चाहिए। इसके लिए बद-हजमी नुस्खे नं० १, २, ३, में से कोई-सा नुस्खा दें सकते हैं। दस्त होने के बाद नीचे लिखी दवा दें—

(१) शहद १० तोला

गेरू १० तोला

दोनों को मिलाकर नाल से दें।

(२) नीम के पत्ते ३ तोला

अड़सा, जिसको बासा भी कहते हैं, के पत्ते ३ तोला

शीशम के पत्ते ३ तोला

सबको आधा सेर पानी में उबालें। जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठंडा करके पिला दें।

खान-पान—खाने के लिए यदि सम्भव हो तो हरा अन्यथा सूखा नरम चारा देना चाहिए। पीने के लिए पानी ताजा या थोड़ा गरम करके दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को अधिक सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। उसपर यदि सम्भव हो तो काले रंग का कपड़ा या भूल अथवा कोई कपड़ा डाले रखें

(११) जुकाम या सर्द-गर्म

यह कोई खास बीमारी नहीं है बल्कि किसी दूसरी बीमारी का चिह्न है। अगर किसी बीमारी का पता न लगे तो यह समझना चाहिए कि पशु को सर्दी लग गई है। एकदम गर्म जगह में से निकलते या काम पर से आते ही ठंडा पानी पिलाने से बहुत ज्यादा गर्द या धूल में रहने से या एकदम से ठंडक में से जानवर को गर्म जगह में लाकर बांधने से भी जुकाम हो जाया करता है।

पहचान—नाक के पानी निकलता है, छीकें आती हैं, जानवर खांसने लगता है, बाज दफा हल्का बुखार भी हो जाता है। बाद में नाक की भिल्ली हो लाल जाती है और खाना-पीना कम कर देता है।

इलाज—उबलते पानी में तारपीन का तेल या सफेद (Eucalyptus) के पत्ते डालकर १५-२० मिनट तक उसकी भाप सांस द्वारा जानवर के अन्दर पहुंचानी चाहिए। सांस द्वारा भपारा देने की तरकीब दवाइयों के विषय में कुछ जानकारी की बातों के अध्याय के 'खण्ड (२)' के उप-खण्ड (३) में दी जा चुकी है। नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा खाने को दीजिए—

(१) सोंठ	१ तोला
अजवायन	२ तोला
गुड़	४ छटांक
आध सेर पानी में पकाकर औटी बनाकर नाल से पिला दें।	

(२) अजवायन	१ तोला
सोंठ	१ तोला
मेथी	३ तोला
कपूर	२ माशा

सब चीजों को कूट-पीसकर पावभर शीरे या गुड़ में मिलाकर दें।

उपरोक्त कोई दवा सुबह-शाम देने के बाद दो-तीन घंटे तक पानी न पिलावें। और दवा देने के बाद जानवर को हवा से बचाकर रखें और उसपर भूल फौरन डाल दें।

खान-पान—पीने को गुनगुना या निवाया (मामूली गरम) पानी देना चाहिए। खाने के लिए शीघ्र पचनेवाला मुलायम चारा देना चाहिए। कब्ज करनेवाली या ठंडी तासीरवाली कोई चीज बीमारी में नहीं खिलानी चाहिए। गुड़ डालकर दलिया या चोकर की गर्म चाय देना लाभप्रद होता है। जानवर के अच्छे होने पर रोजाना की साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जहां तक सम्भव हो जानवर को गर्म सूखी जगह में रखना चाहिए। एकदम उसे गर्म जगह से बाहर मत निकालो या ठंडक में से लाकर गर्म जगह में एकदम से मत बांधो। पीने को बहुत ठंडा पानी

नहीं देना चाहिए। जाड़े के दिनों में काम पर से लाते ही, तालाब, नहर, नदी-नाले का ठंडा पानी नहीं पिलाना चाहिए। ठंडक और तेज हवा से जानवर को बचाना आवश्यक है। बीमारी की हालत में जानवर पर झूल डाले रखिए। उबलते पानी के बर्तन में दवा डालकर उस पर थोड़ी सूखी घास डाल दीजिए ताकि जब वह जानवर के मुंह के पास भपारा देने के लिए लाया जाय तब यदि जानवर उसमें मुंह डाल दे तो उसका मुंह न जले।

(१२) खांसी

यह बीमारी भी दूसरी बीमारियों का लक्षण हो सकती है। यह प्रायः सर्दी-गर्मी और बदहजमी से होती है। गर्मी में आमतौर से सूखी खांसी और जाड़ों में तर होती है।

पहचान—जोर से सांस लेना, जुगाली कम करना, रोयें (बाल) खड़े होना, बाज दफा बुखार का भी होना इसके लक्षण हैं। कब्ज भी अक्सर हो जाया करता है। आंख-नाक से पानी गिरता है। प्रारम्भ में सूखी खांसी होती है। फिर बाद में बढ़कर तर हो जाती है। खांसी बढ़ जाने पर सांस की आवाज भी बढ़ जाती है।

इलाज—प्रारम्भ में जुकाम की दवाओं में से कोई-सी दीजिए। इसके दो-तीन घण्टे बाद नीचे लिखी कोई दवा देनी चाहिए—

- | | |
|---|--------|
| (१) केले के पत्ते की राख | २ तोला |
| मक्खन या लोनी धी | २ तोला |
| दोनों को मिलाकर चटाओ। | |
| (२) छः माशे नमक की डली आक के पत्तों में दबाकर भून लो फिर पावभर गर्म पानी में मिलाकर ३ दिन तक लगातार दो। | |
| (३) कपूर | ३ माशा |
| कलमी शोरा | १ तोला |
| नौसादर | १ तोला |

आक की छाल १ तोला

सोंठ १ तोला

सबको कूट-पीसकर एक छटांक शीरे में मिलाकर दो ।

(४) पिसी हुई हींग ६ माशा, अदरक की एक गांठ में रखकर उपले की आग में दबा दो । पक जाने पर उसको बारीक पीस लो । पानी पिलाने के बाद शीरे में मिलाकर दिन में दो-तीन बार दो ।

(५) लहसुन १ तोला

काली मिर्च १ तोला

सोंठ १ तोला

बांसा (अड़सा) के पत्ते का रस १ तोला

अनार की छाल या छिलका १ तोला

सबको कूट-पीस-घोटकर गुड़ में मिलाकर खिलाओ ।

उपरोक्त दवा में कोई भी दवा सबेरे-शाम दिन में दो बार दीजिए और दवा देने के पहले १५ या २० मिनट तक उबलते पानी में तारपीन का तेल या सफेदा (Eucalyptus) के पत्ते डालकर सांस के जरिये अपारा दीजिए । उसकी तरकीब दवाइयों के विषय में कुछ जानकारी की बातों के अध्याय के खण्ड २ उपखंड ३ में दी गई है ।

खान-पान—दवा देने के बाद जानवर को तीन-चार घंटे तक पानी नहीं पिलाना चाहिए । इसके अलावा जो जुकाम में खान-पान बताया है वही देना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—जुकाम की बीमारी के अनुसार ।

(१३) निमोनिया

एकदम सर्दी-गर्मी के बदलने से, पसीने व बुखार की हालत में ठंडी हवा लगने या भीगने या बहुत ठंडा पानी पी लेने से यह बीमारी हो जाया करती है । यह खतरनाक बीमारी है । जरा-सी गफलत से जानवर का बचना मुश्किल हो जाता है ।

पहचान—जुकाम-खांसी के सब लक्षण तो मौजूद होते ही हैं, उनके अलावा बराबर बुखार का रहना, जानवर का कांपना, मुश्किल से सांस लेना, नाक से बलगम जाना, आंखें लाल होना, नब्ज का जल्दी-जल्दी चलना, यहां तक कि एक मिनट में ८० से १०० तक हो जाना इसके लक्षण हैं। जानवर बेचैन हो जाता है। छाती और फेफड़े के दर्द की वजह से दांत पीसता है और कराहता है। छाती पर बायां हाथ रखकर दाहिने हाथ की अंगुली की चोट मारने से ढोल जैसी आवाज आती है। बीमारी होने के ६-७ रोज तक बीमारी बढ़ती दिखाई देती है। करीब सातवें रोज बीमारी का अधिक-से-अधिक जोर होता है। इसके बाद बुखार उतरना आरंभ हो जाता है और सब हालतें अच्छे जानवर की जैसी मालूम देती हैं। जब बुखार एकदम कम हो जाय और सांस भी सहूलियत से आती मालूम हो तब यह समझना चाहिए कि हालत बहुत खराब हो गई है। जानवर का बचना बहुत मुश्किल है।

इलाज—जानवर को खुले स्थान में न रखकर गर्म स्थान में रखना चाहिए और उसको भूल या कम्बल उढ़ाये रखना चाहिए ताकि जानवर को हवा न लगे। दोनों समय (सबेरे-सांझ) नाक के द्वारा जुकाम में बताया हुआ भपारा देना चाहिए। राई का पलस्तर कपड़े पर लगाकर छाती पर दर्द के स्थान पर लगाइए। इस पलस्तर के बनाने की तरकीब यह है—राई को सिल पर पानी के साथ खूब बारीक पीसकर ठीक नाप का कपड़ा लेकर उस पर गाढ़ी-गाढ़ी फैलाकर गरम-गरम लगा दें। फिर आरम्भ में नीचे लिखी आवटी दें—

(१) सोंठ	१॥ तोला
मेथी	५ तोला
अजवायन	२॥ तोला
चाय	१ तोला
गुड़	आधा सेर

आध सेर पानी में मिलाकर भली प्रकार उबालकर जब पौना रह जाय तब पिला दीजिए। बाद में सबेरे-शाम नीचे लिखी दवा दें—

(२) कपूर	४ माशा
बीज धतूरा	१ माशा
अनार का छिलका	
या छाल	२ तोला
सोंठ	१ तोला
देसी शराब	२ छटांक
शीरा	२ तोला

कपूर और बीज धतूरे को पीसकर शराब में घोल लो। अनार के छिलके या छाल को कूट-पीसकर आध सेर पानी में मिलाकर आग पर चढ़ा दो। आधा पानी रह जाय तब छानकर यह पानी और कपूर व धतूरे के बीज मिली हुई शराब का घोल व शीरा मिलाकर मामूली गर्म-गर्म जानवर को पिला दो।

(३) बारहसिंगे का सींग आग में जला लो। एक तोला राख में १ माशा भुनी हुई फिटकरी मिलाकर आधा सबेरे आधा शाम को सोंठ के काढ़े के साथ दो।

खान-पान —दवाई देने के तीन-चार घंटे बाद तक पानी बिल्कुल न दो और जब पानी पिलाओ तो गरम पिलाओ, ठंडा हर्गिज न पिलाओ और खाने को गरम दूध या चोकर की गर्म चाय दो। जानवर के अच्छे होने पर थोड़ा दलिया और मुलायम चारा देना चाहिए और ५-६ रोज के बाद साधारण खुराक देनी चाहिए। बीमारी में यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर जहां तक हो कमजोर न होने पावे और उसको तीन-चार बार चाय और दूध थोड़ा-थोड़ा जरूर देते रहना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जुकाम जैसी ही है। इस बीमारी में जानवर के शरीर पर हवा का झोंका हर्गिज नहीं लगना चाहिए। इस बीमारी में बीमार को तन्दुरुस्त जानवर से अलग रखना चाहिए ताकि उसकी भली-

भांति सेवा-टहल हो सके और दूसरों को भी तकलीफ न हो; क्योंकि यह बीमारी छूत की बीमारी की तरह दूसरे तन्दुरुस्त जानवरों में भी बीमार जानवर के नाक के सिनक, जूठन या गोबर-पेशाब वगैरा से लग जाती है, इसलिए उपरोक्त चीजें सब इकट्ठी करके जिस तरह छूतवाली बीमारियों की हालत में तुरन्त जला देते हैं या गहरे गड्ढे में डालकर ढक देते हैं वैसे ही जला या ढक देनी चाहिए। निमोनिया की बीमारी में बीमार जानवर को जहां तक हो नाल से कोई चीज नहीं पिलानी चाहिए।

(१३) दमा

कमजोर जानवर को ज्यादा ढौड़ाने से, बहुत दिनों तक बराबर खांसी और बदहजमी रहने से और बीमारी में खान-पान या इलाज में लापरवाही करने से दमा हो जाया करता है।

पहचान—जल्दी-जल्दी, खींचकर तकलीफ से सांस लेना। यहांतक कि जल्दी सांस लेने की वजह से कोख और पेट में दर्द हो जाना। लगातार खांसी आते रहना और बलगम का गिरना दमा की निशानी है।

इलाज —बीज धतूरा	१ माशा
कपूर	१ माशा
अनार का छिलका	१ तोला
देसी शराब	१ छटांक
बांसे के पत्तों का रस	१ तोला
शीरा	१ छटांक

कपूर व बीज धतूरे को बारीक पीसकर, बांस के रस के साथ शराब में घोल लो। अनार के छिलके या छाल को पानी में खूब पकाओ। जब पककर आधा पानी रह जाय तो छानकर इस पानी को और शराब में मिले हुए कपूर धतूरे के बीजों, बांसे के पत्तों का रस और शीरा सबको मिलाकर गर्म-गर्म दिन में एक या दो बार दें।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला और मुलायम चारा तथा चोकर की

चाय नमक डालकर दीजिए। पीने को निवाया गर्म पानी परन्तु यदि यह सम्भव न हो तो कुएं का ताजा पानी देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज सर्दी, गर्मी और ओस से बचाइए और जहांतक हो खुले में न रखकर मकान में रखना चाहिए। कोई ठंडी, बासी या कब्ज करनेवाली और देर में हजम होनेवाली चोज नहीं देनी चाहिए। जानवर को खिलाने-पिलाने में पूरी होशियारी रखनी चाहिए ताकि जानवर कमजोर न हो। कमजोर होने से बीमारी के बढ़ने का डर रहता है।

(१५) पेशाब में खून आना

यह बीमारी चोट लगने या अधिक गर्मी या कोई जहरीली चीज आदि खा लेने या दर्द या मसाने की कमजोरी की वजह से हुआ करती है।

इलाज—(१) कीकर के पत्ते ४ छटांक

हल्दी २ तोला

दोनों को भंग की तरह पीसकर सुबह-शाम जानवर को पिला दें।

(२) बारीक पिसी हुई फिटकरी १ तोला

दूध आधा सेर

फिटकरी दूध में मिलाकर पिला दो।

यदि जानवर ज्यादा गर्मी की वजह से खून का पेशाब करता हो तो उसे नीचे लिखी दवा दो।

(३) अमचूर (आम की सूखी खटाई) २ छटांक मिट्टी के बर्तन में शाम को भिगो दो और सबेरे उसको खूब मथकर छानकर पिला दो।

(४) इसी प्रकार मिट्टी के बर्तन में पावभर सफेद तिल शाम को भिगो दो और सबेरे ठण्डाई की तरह घोटकर पिला दो।

अगर जानवर थम-थमकर खूनदार पेशाब करे तो उसको नीचे लिखी दवा दो—

(५) गेरू	१ छटांक
घी	२ छटांक
सौंफ	१ छटांक

सौंफ और गेरू को खूब बारीक पीसकर आधा सेर दूध और घी में मिलाकर जानवर को पिला दो ।

खान-पान—कोई गर्म चीज, बादी और कब्ज करनेवाली खाने को न दो । हरी दूब घास व शीशम की पत्ती जहां तक हो ज्यादा-से-ज्यादा खिलावें । यह इस बीमारी में बड़ी लाभप्रद है । पीने के पानी में जरा-सा शोरा मिला देना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—जानवर के बांधने के स्थान को निहायत साफ रखे । पेशाब इत्यादि फौरन हटाते रहें ।

(१६) पेशाब न होना या रुकावट पड़ जाना

यह बीमारी पुट्टे, मसाने या गुर्दे की कमजोरी व पथरी के होने की वजह से हुआ करती हैं । सूखा चारा खिलाना और कम पानी पिलाने की वजह से भी हो सकती है ।

पहचान—जानवर को पेशाब न होना, उसका बेचैन होकर उठना-बैठना और बार-बार पेशाब करने की कोशिश करना इस बीमारीके लक्षण हैं।

इलाज—शोरा	१ तोला
धनिया	१ तोला
कपूर	३ माशा

सब चीजें घोंट-पीसकर ठण्डे पानी में घोलकर पिला दें और नीचे लिखी दवाओं में से कोई-सी उसके मूतने के स्थान पर लगाइए ।

(१) नीम के पत्ते उबालकर नमक मिलाकर मूतने के स्थान पर लगाइए ।

(२) बंधनेवाले जानवर के मूतने की जगह एक साबित लाल मिर्च रख दें । जब पेशाब करने लगे तो निकाल लें ।

(३) इसी प्रकार शोरे के गाढ़े घोल में बत्ती भिगोकर मूतने की जगह चढ़ा दें ।

(४) यदि संभव हो तो मूतने की जगह एक या दो खांड के बताशे चढ़ाने से भी पेशाब हो जाता है ।

(५) बेरी के पत्ते चबाकर मूतने की जगह रखने से भी पेशाब हो जाता है ।

खान-पान—पेशाब में खून आने के विषय में बताये अनुसार ।

अन्य हिदायतें—अगर उपरोक्त दवा देने से भी फायदा न हो तो सरकारी पशु-चिकित्सक को बुलाकर दिखाना चाहिए ।

(१७) पेशाब का टपकते रहना

यह बीमारी भी मसाने, गुर्दे इत्यादि की कमजोरी व पथरी आदि की वजह से होती है ।

पहचान—पेशाब का रुक-रुक कर थोड़ी मिकदार में आना व टपकते रहना ।

इलाज—यह रोग प्रायः पथरी के कारण होता है, इसलिए ढोरों के डाक्टर से आपरेशन द्वारा पथरी निकलवा देनी चाहिए । खाने को कोई भी ठण्डी मौतदिल ताकत की दवा खिलानी चाहिए ।

(१) मक्का के भुट्टे के बाल	२ छटांक
काली मिर्च	१ तोला

(२) खरबूजे के छिलके	१ पाव
काली मिर्च	१ तोला

मक्का के भुट्टे के बाल दो छटांक यदि न मिलें तो खरबूजे के छिलके एक पाव, काली (गोल) मिर्च १ तोला, दोनों को ठण्डाई की तरह पीसकर ठंडे पानी में घोलकर सुबह-शाम पिलाइए ।

खान-पान—पेशाब में खून आने की बीमारी के अनुसार ।

(१८) फोटों का सूजन

किसी प्रकार की चोट लगने से ऐसा हो जाता है। बाज़ दफे कीटाणु भी इसका कारण होते हैं। कभी बादी से फोटों पर सूजन आ जाती है।

पहचान—फोटों पर सूजन होती है। जानवर पिछले पैर फैलाकर चलता है। और अक्सर ज्यादा तकलीफ होने से उसे बुखार भी हो जाता है।

इलाज—जानवर को आराम दीजिए और बीमार जानवर को बरदाने (ग्याभन कराने) से रोकना चाहिए।

(१) ठण्डा पानी गीले कपड़े से बार-बार फोटों पर डालिए और ठण्डक पहुँचाइए।

(२) टेसू या ढाक के फूल थोड़े नमक के साथ पानी में पकाकर उसके पानी से सेक कीजिए और सेक के बाद पत्तों को चारों तरफ लगा कर उसपर लंगोट की तरह कपड़ा बांध दीजिए।

(३) इसी तरह अरण्ड के पत्ते, मकोय, भड़बेर के पत्ते और आकाशबेल इन सबको खूब उबालकर उसके गुनगुने पानी से सेक कीजिए और फिर उन पत्तों को अण्डकोष के चारों तरफ लगाकर लंगोट की तरह कपड़ा बांध दीजिए।

(४) हल्दी, चूना, फिटकरी, कड़वा तेल, सबको खूब बारीक पीसकर तेल में मिलाकर आंच पर पका लें और फोटों पर मामूली गर्म हो तब चुपड़ दें।

(५) इमली के पत्ते और नमक सिलबट्टे पर चटनी की तरह पीस लें। फिर किसी बर्तन में उसको भलीभाँति गरम करके अण्डकोष पर गर्म-गर्म लेप करें।

उपरोक्त दवाइयों में से कोई भी दिन में दो बार लगावें और नीचे लिखी दवा सबेरे-शाम खाने को दें।

(६) कपूर	२ माशा
कलमी शोरा	१ तोला
शराब	१ छटांक

शराब में कपूर घोलकर और पावभर पानी में शोरा घोलकर दोनों को मिलाकर पिला दें ।

(७) यदि बादी से सूज गये हों तों—

अरण्डी का तेल ३ छटांक

त्रिफले का पानी पावभर

दोनों को मिलाकर पिलाइए और तम्बाकू के पत्ते गरम करके बांधिए ।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाली खुराक देनी चाहिए ।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने का स्थान बिल्कुल सूखा रहना चाहिए । यदि जरा-सा भी गीला हो जाय तो फौरन सूखा कर दें । उसके बैठने की जगह पर मुलायम घास का भली प्रकार बिछावन कर दीजिए । ताकि वह आराम से बैठ सके ।

(१६) मिरगी

प्रायः यह रोग बच्चों को ज्यादा होता है । उम्र बढ़ने पर कम होता है । कभी-कभी पेट में कीड़े हो जाने से भी होता है । इसलिए कीड़े दूर करने का इलाज करना चाहिए ।

पहचान—जानवर अचानक कांपने लगता है और गिर जाता है । गरदन तथा पैर अकड़ जाते हैं और बेहोश हो जाता है और वाज दफा मुँह से फेन या भाग भी आते हैं ।

इलाज—पलाश पापड़ा (ढाक के बीज) १ तोला

अनार की छाल १ तोला

सौंफ १ तोला

अमलतास १ तोला

सबको कूटकर आध सेर पानी में पकावें । जब पावभर रह जाय तो गुनगुना-गुनगुना भूखे पेट पिलावें ।

उपरोक्त दवा देने के बाद मीठा, सरसों का या अलसी का तेल आध सेर और तारपीन का तेल आधी छटांक मिलाकर पिला देना चाहिए ।

पांच-छः दिन दवा देने के बाद यदि रोग न रुके तो फिर उसको उपरोक्त जुलाब देकर दवा आरम्भ करनी चाहिए। एक बार रोग रुक जाने के बाद भी बराबर दस-पन्द्रह रोज तक एक खूराक नीचे लिखी दवा प्रति दिन देते रहना चाहिए।

नमक

२॥ तोला

नीम की पत्ती

२॥ तोला

आधसेर छाछमें खूब घोंट-पीसकर २ छटांक सरसों का तेल मिलाकर दें।

(१) वेहोशी की हालत में रीठे का छिलका बारीक पीसकर सुंघावें।

(२) उपले की राख में आक का दूध मिलाकर सुंघावें।

खान-पान—दवा देने के पहले जानवर को भूखा रखना चाहिए और दवा देने के दो-चार घण्टे बाद तक खाने को कुछ भी नहीं देना चाहिए। बाद में चावल का मांड या छाछ या और कोई शीघ्र पचनेवाली चीज व मुलायम घास देनी चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि भूखा रखने के बाद जानवर को एकदम से ज्यादा खाने को न दें वरना तकलीफ होने का डर रहता है। पीने को कुएं का ताजा पानी दें।

अन्य हिदायतें—जानवर के रखने के स्थान को बिलकुल साफ रखें। जो कुछ भी गन्दगी वहां गोबर या दस्त वगैरा से हो उसे फौरन साफ करते रहना चाहिए। अगर जानवर सन जाय तो उसे धोकर कपड़े से पोंछ देना चाहिए।

(२०) साधारण बुखार

साधारणतया खाने-पीने की गड़बड़ से तथा कब्ज रहने से, एकदम मौसम बदलने से, अधिक भीगने और मच्छर इत्यादि के काटने से बुखार हो जाता है। इसके अलावा बहुत-सी बीमारियों के कारण भी बुखार हो जाया करता है।

पहचान—शरीर का गरम होना, बाल खड़े हो जाना, नब्ज का तेज चलना, सांस जल्दी लेना और जानवर का सुस्त दिखाई देना,

बुखार के चिह्न हैं। तेज बुखार में जानवर जुगाली करना बन्द कर देता है। शरीर कांपने लगता है। पेशाब का रंग बदल जाता है और बेचैन होकर पड़ा रहता है।

इलाज—उसे ऐसे मकान में रखना चाहिए जहां उसको सीधी हवा न लगे। ऐसी हालत में प्रायः कब्ज या पेट की खराबी हुआ करती है। इसलिए आरम्भ में एक खुराक साधारण जुलाब की दवा देनी चाहिए। इसके बाद नीचे लिखी कोई-सी दवा दीजिए—

(१) कपूर ३ मासे

कलमी शोरा १ तोला

कपूर को एक छटांक देसी शराब में घोलकर आध सेर गुनगुने गर्म पानी में शोरा घोलकर दोनों मिलाकर पिलाइए—

(२) गोमा घास के फूल १ छटांक

काली मिर्च १ तोला

आध सेर पानी में घोट-पीसकर गुनगुना गरम करके दीजिए।

(३) शोरा १। तोला

नमक २॥ तोला

चिरायता २॥ तोला

आध पाव राब, शोरा या गुड़ में मिलाकर खिला दीजिए या आध सेर गुनगुने गर्म पानी में घोलकर दीजिए।

खान-पान—खाने को मुलायम शीघ्र पचनेवाला चारा देना चाहिए। तेज बुखार में दूध व गेहूं के चोकर व तीसी की चाय देनी चाहिए। बाद में जरा अच्छा होने पर दलिया इत्यादि और बिल्कुल अच्छा होने पर धीरे-धीरे साधारण चारा-दाना देना चाहिए। जानवर को तेज हवा व सर्दी-गर्मी से बचाइए और भूल उड़ाकर रखिए ताकि सर्दी, मच्छर और मक्खी न सतावें। रहने का स्थान बिल्कुल साफ हो। पीने को गुनगुना गरम या कुएं का ताजा पानी दीजिए।

अन्य हिदायतें—बहुत तेज बुखार में जुलाब की दवा नहीं देनी

चाहिए। अक्सर बुखार अकेले बहुत कम होता है। यह दूसरी किसी बीमारी का चिह्न होता है, इसलिए बुखार होने पर जानवर को बहुत होशियारी से देखते रहना चाहिए कि कहीं उसको और कोई बीमारी तो नहीं है। बुखार में बहुत ठंडा पानी पीने से तथा ठंडी हवा लगने से नीमोनिया हो जाया करता है, इसका ध्यान रखना चाहिए।

(२१) सांड का ग्याभन न करना

जब कभी बहुत बड़े रेवड़ में अकेला सांड रहता है या किसी कारण से वह तादाद से ज्यादा गायों को गाभिन करता है या खुराक वगैरा या अन्य कारण से कमजोर हो जाता है, खुराक में चर्बी बनानेवाले अंश ज्यादा होने के कारण उसके चर्बी बढ़ जाती है या अन्य हानिकारक अंशों की बहुतायत होने से तथा ढलती उमर या बुढ़ापे का समय आ जाता है तब ऐसा हो जाया करता है। यह बीमारी खुराक में खास खाद्य-प्राणों (विटामिन) की कमी के कारण भी हो जाया करती है।

पहचान—सांड का देर तक गाय को सूंघते रहना या बार-बार कूदने पर भी ग्याभन न करना और कई बार गाभिन करने पर भी गर्भ का न ठहरना इसके लक्षण हैं।

इलाज—सबसे पहले यह देखना होगा कि किस कारण से यह बीमारी हुई है। फिर उस कारण को दूर करना चाहिए। बाद में उसको पौष्टिक खुराक और नीचे लिखी दवा खाने को देनी चाहिए।

गेहूं, जई या बाजरा में से कोई चीज २४ घण्टे पानी में भिगोकर एक गीले कपड़े या बोरी में बांधकर छाया में रख दें। जब जमकर दो-दो अंगुल कोपल (अंकुर) निकल आवे तो खिला दें।

उपरोक्त दवाई आध सेर से एक सेर तक सुबह व आध सेर से एक सेर तक शाम को जानवर के कद व वजन के अनुसार महीने-सवा-महीने तक लगातार खिलाइए।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला पौष्टिक चारा-दाना दें। यह ध्यान

रखें कि चारे-दाने में जहांतक हो तेल और चिकनाईवाली चीजें या अनाज की चीजें न दी जायें ।

अन्य हिदायतें—कुछ अरसे तक सांड को आराम देना चाहिए और गायों के साथ मिलने न देना चाहिए । यदि मोटा हो गया हो या चर्बी छा गई हो तो खुराक कम कर देनी चाहिए और उससे थोड़ा परिश्रम लेना चाहिए । सिवा सख्त सर्दी-गर्मी व बहुत ठंडी व गरम हवा के उसको खुले मैदान में रखना चाहिए । कुछ परिश्रम के लिए रोज उसको घुमाना चाहिए या उससे थोड़ा-सा काम लेना चाहिए । यदि कमजोरी बुढ़ापे के कारण से हो तो फिर उससे ग्याभन कराने का काम न लेना चाहिए ।

(२२) सफेद भागवाला कीड़ा

(इसको अक्सर भौरी भी कहते हैं)

वर्षा ऋतु में उनके बाद अक्सर खेतों या चरागाहों (गोचर-भूमि) में एक प्रकार का कीड़ा पैदा हो जाता है, जिसके चारों तरफ सफेद भाग होते हैं और वह अक्सर घास इत्यादि हरे चारे पर पाया जाता है । जानवर घास या चारे के साथ उसको खा जाता है । उसके खा जाने से जहर चढ़ जाता है और जानवर बीमार हो जाता है ।

पहचान—जानवर बेहोश होकर गिर जाता है । गर्दन एक तरफ डालकर पड़ा रहता है । अपने आप खड़ा नहीं हो सकता । कभी-कभी आंखें फिर जाती हैं और मुंह से भाग आने लगते हैं । खाना-पीना बिल्कुल बंद कर देता है ।

इलाज—जानवर को चुपचाप आराम करने देना चाहिए । उसको कंबल या भूल से ढक देना चाहिए । सर्दी और ओस से बचाने के लिए (यदि जानवर खुले में या मैदान में पड़ा हो) यथासंभव उसपर इधर-उधर दो खाटें खड़ी करके पूली या टाट रखकर या अन्य किसी प्रकार छाया कर देनी चाहिए । फिर नीचे लिखी दवा फौरन ही देनी चाहिए और जबतक अच्छा न हो एक खुराक सबेरे और एक खुराक शाम को बराबर देते रहना चाहिए ।

१ तोला पिसी हुई काली मिर्च, पाव भर घी में मिलाकर गुनगुना-गुनगुना गरम करके पिला दें। दवा पिलाने के तीन-चार घंटे बाद तक पानी नहीं पिलाना चाहिए।

खान-पान—कुएं का ताजा पानी दें और होश में आने के बाद उसको एकदम ज्यादा खुराक खाने को न दें। बल्कि थोड़ा शीघ्र पचनेवाला चारा-दाना दें और फिर धीरे-धीरे साधारण खुराक दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज सर्दी-गर्मी से बचावें और उसको किसी प्रकार से दिक न करें। उसको अधिक-से-अधिक आराम पहुंचाने की कोशिश करें। जिस खेत और जंगल से चारा आता है या जहां वे चरते हैं, वहां भली प्रकार देख-भाल करके जहां भी सफेद भागवाले कीड़े मिलें, उनको घास समेत वहां से हटाकर जला देना या गाड़ देना चाहिए।

(२३) घामड़ या लू लगना

जानवर के सख्त गर्मी में तेज धूप व लू अर्थात् गरम हवा में काम करने, फिरने और रहने से यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—जानवर को धूप का अच्छा न लगना, हमेशा धूप से हटकर छाया या ठण्डक में खड़े होना, जल्दी-जल्दी सांस लेना, कम खाना और इसलिए दुबले होते जाना और बीमारी का ज्यादा असर होने की हालत में साधारण बुखार हो जाना इसके लक्षण हैं।

इलाज—जानवर को जहांतक हो छाया में रखें और नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दें—

(१) कच्चे आम पावभर, उपले की या दूसरी किसी आंच में दाब कर पका लें। पक जाने पर आधा सेर या तीन पाव पानी में खूब मथ कर छिलके गुठली निकाल कर पिला दें। सबेरे-शाम दोनों समय दवा देनी चाहिए।

(२) पवार (यह तालाबों या जहां पानी रुका रहता है वहां मिलती है। खांड बनानेवाले इसको खांड बनाने के काम में लाते हैं, इसको सेवार

भी कहते हैं) आधा पाव पीस कर पावभर कच्ची खांड में घोलकर छः-सात दिन तक पिलावें ।

(३) सफेद तिल्ली पावभर रात को मिट्टी के कोरे बर्तन में भिगोकर सबेरे घोटकर सात दिन तक पिलावें ।

(४) मेंहदी

१ तोला

जीरा सफेद

१० तोला

रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो लें और सबेरे घोट-पीसकर नाल से पिला दें ।

(५) पावभर जीरा एक पाव सरसों के तेल में खूब घोट-पीसकर रोज सबेरे ४० दिन तक पिलावें ।

(६) चने के पत्तों का पावभर साग थोड़ी भंग के साथ पीसकर पानी में घोलकर पिलावें ।

खान-पान—कब्ज करनेवाली तथा गरम तासीरवाली चीजें न देकर ठंडी तासीरवाली व शीघ्र पचनेवाली चीजें खिलायें । पीने के पानी में थोड़ा कलमी शोरा डालकर पिला दें ।

अन्य हिदायतें—जहांतक हो जानवर को धूप में न रक्खें । धूप में काम न लें और गरम हवा व लू से बचायें ।

(३४) जानवर को जहर चढ़ जाना

गफलत या भूल से या भूख में या अच्छे चारे के साथ मिली हुई कोई जहरीली चीज खा लेने से जानवर को जहर चढ़ जाता है । बाज दफा ऐसा भी होता है कि बिना फली ज्वार (चरी) इत्यादि कुछ चारे की फसलें भी ऐसी होती हैं जिन्हें खास हालत में खा लेने से उनका जहर जानवर को चढ़ जाता है ।

जानवर की खाल अनेक प्रकार के काम में आती है । उसकी कीमत अच्छी मिल जाती है । चमारों का तथा अन्य कुछ आदमियों का यही रोजगार या जीवन-निर्वाह का तरीका है कि वे लोग जानवरों की खाल

उतारकर उसे बेचते हैं। ये लोग कभी-कभी खास मौकों पर जानवर को जहर दे देते हैं। ऐसे आदमी गांव में ठेका ले लेते हैं कि वहां जितने जानवर मरेंगे उनकी सबकी खाल उनकी ही होगी। भारतवर्ष में प्राचीन ग्राम-संगठन की प्रणाली के अनुसार गांव में जितने ढोर मरते हैं उनका चमड़ा गांव के चमार उतारकर बेचते हैं या उसकी चीजें बनाते हैं। इसी प्रकार गौशालाएं चमारों को मरे हुए ढोरों का ठेका दे देती हैं कि अमुक रकम के बदले उनकी संस्था में जितने ढोर मरें उनका चमड़ा ले लिया करें। कभी-कभी चमार अपने लाभ के लिए मौका मिलने पर और खासकर जिन दिनों में बीमारी फैली होती है उन दिनों में जानवर को जहर दे देते हैं या उनमें छूतवाली बीमारी भी फैला दिया करते हैं ताकि उनको अधिक आमदनी हो। दुश्मनी से भी बाज दफा बदला लेने की गर्ज से जानवर को जहर दिया जाता है।

पहचान—आंख लाल और शरीर गरम हो जाता है। अफारा हो जाता है और बाज दफा पतला व खूनी दस्त होता है और जानवर तड़पने लगता है। जानवर की गर्दन ऐंठ जाती है और वह तड़प-तड़पकर मर जाता है।

इलाज—अलग-अलग किस्म के जहर के अलग-अलग इलाज हैं। अच्छा तो यह है कि ऐसे मौके पर सरकारी ढोरों के डाक्टर को बुलाकर दिखाना चाहिए ताकि उसका माकूल इलाज भी हो सके और यदि जान-बूझकर या दुश्मनी की वजह से जहर दिया गया हो तो मुलजिम से प्राय-श्चित्त भी कराया जा सके। यहां पर हम अहतियातन एक-दो दवा लिखे देते हैं। आरम्भ में नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

एक सेर गरम दूध में आध सेर घी और आधी छटांक तारपीन का तेल भली प्रकार मिलाकर पिला देना चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखी दवा दीजिए—

केले की जड़ का रस

१ पाव

कपूर

१ तोला

भली प्रकार मिलाकर पिला दीजिए।

नोट—यदि केले का रस न मिले तो पाव भर गुलाब जल या उबाले हुए पानी में १ तोला कपूर भली-भाँति मिलाकर पिला दीजिए ।

कपूर को केले के रस में या पानी में घोलने की तरकीब यह है कि उसको पहले ज़रा-सी शराब, तारपीन के तेल या मिरके में घोलकर फिर केले के रस में घोल देना चाहिए । तारपीन का तेल या शराब न हो तो कपूर पर पानी का छींटा दे-देकर बारीक पीस लो । जब बारीक हो जावे तो पानी में मिलाकर पिला दो ।

(२५) चरो से जहर

वर्षा में जब पानी पड़ना बन्द हो जाता है और हरी चरी-छोटी या बिना फली होती है तो उसमें एक किस्म का जहर पैदा हो जाता है । उसको खाने से जानवर को जहर चढ़ जाता है । इसके लिए फौरन ही पीछे बताई दूध, घी, तारपीन के तेलवाली दवा देनी चाहिए । यदि यह सम्भव न हो तो उसके तमाम शरीर पर कीचड़ लपेट देना चाहिए । इसके बाद नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

काली मिर्च	१ तोला
हींग	१ ”
मोंठ	१ ”
अजवायन	१ ”
काला नमक	२ ”

सबको बारीक पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में दो बार दें ।

खान-पान—जहाँ तक हो जानवर को पानी पीने को न दें और खास कर दवा देने के दो-तीन घंटे तक तो बिल्कुल नहीं देनी चाहिए । खाने को चावल का मांड, तीसी या चोकर की चाय या दूध देना चाहिए । अच्छे होने पर धीरे-धीरे साधारण चारा-दाना देना चाहिए ।

अन्य हिवायतें—जहाँ तक हो जानवर को फौरन दवा देनी चाहिए ।

जितनी जल्दी दवा दी जायगी उतनी ही जानवर के बचने की अधिक उम्मीद समझनी चाहिए। ऊपर लिखी दवा देने के पश्चात् जानवर को दोनों के डाक्टर को दिखा देना हर-एक हालत में अच्छा है।

(२६) लकवा या फालिज

इसमें अचानक जानवर का पिछला हिस्सा या एक ओर का धड़ मुन्न हो जाता है। यह कमर पर चोट इत्यादि लगने से सख्त गर्मी-सर्दी व बारिश में भीगने से या सूत की तरह एक प्रकार के कीड़े रीढ़ की हड्डी के गुद्दे में हो जाने से होती है।

पहचान—इसकी पहचान यह है कि जिस हिस्से में यह बीमारी होती है उसमें सूई इत्यादि चुभने से दर्द नहीं होता। ऐसा मालूम होता है कि मानो वह हिस्सा शरीर में है ही नहीं।

इलाज—नीचे लिखी कोई दवा दें—

(१) कुचला	४ मासे
सोंठ	६ मासे
हीरा-कसीम	६ मासे
नमक	आध छटांक

सबको कूट-पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर पिलावें।

(२) २॥ तोला सरसों पीसकर गर्म पानी में मिलाकर लेप बना लें और फिर जहाँ पर लकवे का असर हो वहाँ पर लगावें।

(३) अदरक	२ तोला
देसी शराब	५ तोला
भुनी हुई हींग	६ माशा

इन सबको मिलाकर दो-दो घंटे के बाद दें।

खान-पान—दूध और मुलायम शीघ्र पचनेवाली घास खाने को देनी चाहिए। थोड़ा लाभ होने पर दलिया, चोकर इत्यादि दे सकते हैं पीने के लिए गुनगुना पानी दें।

अन्य हिदायतें—जानवर का अधिक-से-अधिक आराम पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए। उसके रहने के स्थान को साफ रखना चाहिए। बिछाली लगा देनी चाहिए ताकि आराम से बैठे। जानवर यदि खुद करवट न ले सके तो करवट दिलवाते रहना चाहिए।

(२७) गठिया या बाय

इस बीमारी में खून में विकार पैदा होकर पुट्टों और जोड़ों में सूजन हो जाती है और सख्त दर्द पैदा हो जाता है। एकदम गर्मी में ठण्ड लगने से, वर्षा में भीगने से, ज्यादा खाने की वजह से, चर्बी बढ़ जाने से, सील या नमी की जगह में जानवर के काफी अर्से तक खड़े रहने से यह बीमारी हुआ करती है। खराब चारा-दाना और गन्दा पानी पीने से भी हो जाती है।

पहचान—जोड़ों और पुट्टों में दर्द हो जाता है। एकदम से सूजन हो जाना और जानवर का बेचैन हो जाना, दर्द एक जगह से दूसरी जगह बदलते रहना इसकी पहचान है। बाज दफा जब कभी बहुत तेजी से बीमारी होती है तो बुखार भी हो जाता है।

इलाज—जानवर को सर्दी और सील या भीगने से बचाना चाहिए। आरम्भ में एक जुलाब दे दीजिए। इसके लिए नीचे लिखी कोई दवा दे सकते हैं—

(१) सरसों या अरण्डी का तेल

८ छटांक

सोंठ

आधी छटांक

सोंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर दें।

(२) खारी नमक

८ छटांक

सोंठ

आधी छटांक

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर दें।

उपरोक्त जुलाब देने के बाद नीचे लिखी दवा खाने के लिए दें—

(३) गुड़	४ छटांक
सोंठ	१ तोला
अजवायन	५ तोला
मेथी	२ छटांक
भंग	१ तोला

सोंठ, अजवायन, मेथी को बारीक पीस लें और भंग को थोड़े पानी में डालकर सिल-बट्टे पर खूब बारीक पीस लें। सबको गुड़ में मिलाकर एक पाव दूध में घोलकर पका लें और गुनगुना-गुनगुना जानवर को पिला दें।

दूसरे रोज़ एक वक्त नीचे लिखी दवा और सबेरे-शाम को उपरोक्त दूध की औटी दीजिए—

(४) पलास पापड़ा	१ तोला
अनार की छाल	१ तोला
सौंफ	१ तोला
अमलतास	१ तोला

आध सेर पानी में पकाकर जब पावभर रह जाय तो गर्म-गर्म भूखे पेट दें।

नीचे लिखी किसी दवा से मालिश करके गर्म रुआड़, कपड़े या ईंट से सेंकें। सेंक के बाद अगर सम्भव हो तो उस जगह पर उसी दवा को लगाकर बांधकर जानवर के ऊपर झूल डाल देनी चाहिए।

(५) आक के पत्ते कूटकर रस निकालें और सेर भर रस में एक पाव तिल का तेल मिलाकर पकावें। जब रस जल जाय तो उसे छान लें और इस तेल की मालिश करें।

(६) १ तोला कपूर को एक छटांक तारपीन के तेल में भली प्रकार मिलाकर मालिश करें।

(७) एक पाव घतूरे के पत्ते का रस तिल के आध सेर तेल में मिलाकर पकावें। पानी जल जाय और खालिस तेल रह जाय तो छान लें और मालिश करें और या २ तोला घतूरे के बीज बारीक कूट-पीसकर एक

पाव तिल के तेल में मिलाकर १५-२० दिन तक धूप में रक्खें और फिर छानकर शीशी में भर लें, इसकी मालिश करें ।

(८) एक पाव लहसुन को खूब कुचल लें या सिल-बट्टे पर पीस लें फिर उसे आध सेर तिल के तेल में मिलाकर खूब पका लें । जब भली प्रकार पक जाय तो कपड़े में डालकर छान लें और उसकी मालिश करें ।

(९) दो सेर दूब-घास को दस सेर पानी में उबालकर भपारा दें और गर्म-गर्म दुखती जगह पर डालें । इसी प्रकार पलास के फूलों को भी पानी में उबाकर काम में ला सकते हैं ।

जानवर को लाभ होने के बाद भी थोड़े दिन तक नीचे लिखी ताकत की दवा खिलानी चाहिए—

(१०) हीरा-कसीस १ तोला, सोंठ १ तोला, चिरायता २ तोला,

या

(११) भंग १ तोला, खाने का सोडा १ तोला या

नमक

१॥ तोला

आध सेर पानी में घोलकर या गुड़ की डली और शीरे में मिलाकर सात दिन तक दें ।

खान-पान—पीने को गुनगुना पानी, खाने को शीघ्र पचनेवाली घास, चाय, दलिया, दूध इत्यादि । अच्छे होने पर धीरे-धीरे साधारण खुराक बीच में और अच्छे होने के एक-दो महीने बाद तक भी चना, लोभिया, मटर, खेसारी इत्यादि या अन्य द्विदल जाति के कब्ज और बादी करनेवाला चारा न दें ।

अन्य हिदायतें—अक्सर यह बीमारी खाने-पीने की खराबी की वजह से भी हो जाती है इसलिए पीने का पानी बदल दीजिए अर्थात् दूसरी जगह का पानी पीने को दें और खाने का चारा-दाना भी जहां तक हो बदलकर दूसरी चीज दें । जानवर को नमी और ठण्डक से बचायें । उसके नीचे भली प्रकार बिछाली या रेत बिछा दें ताकि वह आराम से बैठ सके । आराम मिलने से जानवर जल्दी नीरोग होगा ।

मादा पशुओं का गर्भधारण, ब्याना और खास बीमारियाँ

मादा (Female) पशु प्रायः नर (Male) पशुओं से कमजोर और नाजुक होते हैं। उनको नर की अपेक्षा जल्दी रोग सताता है। इसलिए उनकी देख-भाल, रहन-सहन, खाने-पीने में विशेष होशियारी रखनी चाहिए। दूध देनेवाले जानवर की सेवा-टहल में ज़रा-सी चूक होने से ही बड़ी हानि होती है। जब पशु ब्याता है तब उसकी हालत बड़ी कमजोर होती है। उस समय ज़रा-सी नाजानकारी और असावधानी से न मालूम क्या रोग उत्पन्न हो सकता है। उस समय खासकर सब बातें समझकर किसी जानकार आदमी की सहायता से पशु को ब्याने में मदद करनी चाहिए और ब्याने के बाद भी १०-१५ दिन तक उसकी खास देख-भाल और सेवा-टहल करनी चाहिए।

(१) पशु के गाभिन होने से ब्याने तक का संक्षिप्त वर्णन

भारतवर्ष में प्रायः गायें, भैंसें वगैरह करीब दो-ढाई वर्ष से चार या साढ़े चार वर्ष तक की उम्र में पहली बार गाभिन होती हैं। पहली बार जल्दी या देर से गाभिन होना उसके बचपन की खुराक, उसकी बढ़ोतरी तथा उसकी नस्ल पर निर्भर करता है।

गाय गाभिन होने के बाद २८० से २९० दिन तक में बच्चा देती है। अगर ८ महीने के पहले बिया जाती है या उसका बच्चा बाहर आ जाता है तो वह गर्भपात कहलाता है। प्रायः वह बच्चा नहीं जीता।

गाय ब्याने के बाद हर इक्कीसवें दिन थोड़ा-बहुत गर्माती है। ब्याने के करीब दो महीने बाद जबतक वह गाभिन न हो तेज़ी के साथ हरएक इक्कीसवें दिन गर्माती है। उस समय उसको सांड से मिलाना चाहिए।

जिस गाय को पांच-छः महीने का गर्भ हो उसको गर्भ पालने के लिए कुछ अधिक खुराक की आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता जबतक वह ब्याती नहीं बराबर बढ़ती जाती है। इसलिए उसको इस समय अधिक खुराक देना चाहिए वरना गाय भी कमजोर हो जायगी और बच्चा भी कमजोर पैदा होगा और जब वह ब्यायगी तो दूध भी कम देगी। इसलिए इस समय उसकी खिलाई-पिलाई उदारता-पूर्वक करनी चाहिए।

गाभिन होने के बाद जो उछलने-कूदनेवाली होती है वह गाय भी पहले के मुकाबले शान्त हो जाती है और यदि गर्भ ठहर जाता है तो ब्याने के समय तक गर्भ नहीं होती। कभी-कभी गाय एक बार गाभिन होने के बाद फिर दुबारा और तिबारा गर्भ हुआ करती है। उस हालत में यह समझना चाहिए कि वह गर्भवती नहीं है और इसलिए उसको सांड से मिला देना चाहिए। जब गाय गाभिन हो जाय तब उसे फौरन ही कोई विशेष पौष्टिक चीज खाने को दे देनी चाहिए। इससे गर्भ ठहर जाता है। इस समय एक-दो मास तक कोई गर्भ तासीर की चीज खाने को नहीं देनी चाहिए। यह पहचानना कि गाय गाभिन हो गई है या नहीं बड़ा कठिन है। तीन महीने बाद डाक्टर लोग गर्भाशय में हाथ डालकर जांच-कर बता सकते हैं। सर्व-साधारण को इस जांच की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिए हम यहां उसका कोई जिक्र नहीं कर रहे हैं। पांच-छः महीने के बाद तो गाय के चलते-फिरते और खास करके पानी पीते समय बच्चा हिलता हुआ दिखाई दे जाया करता है और गाय की शारीरिक अवस्था से भी अन्दाजा हो जाता है। ज्यों-ज्यों गर्भ की अवस्था बढ़ती जाती है उपरोक्त चिह्न स्पष्ट होते जाते हैं।

गाय को ब्याने के करीब डेढ़-दो मास पहले दूध से सुखा देना चाहिए ताकि उसको कुछ समय आराम मिल जाय और दूध देने से जो थकावट और कमजोरी हो जाती है उसको पूरी कर सके। ऐसा न होने से गाय के स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ता है और वह अगले बियात में दूध भी कम देती है। अर्थात् तो यह है कि दूध से सुखाने के बाद गाय को अन्य ढोरों से अलग

रक्खा जाय और इसके खान-पान और सेवा-टहल का विशेष ध्यान रक्खा जाय। यदि यह संभव न हो तो कम-से-कम २०-२५ रोज पहले तो उसको अन्य ढोरों से अलग रखना ही चाहिए। अलग रहने का स्थान ऐसा हो जिसमें भली प्रकार रोशनी आती हो और हवा का प्रवेश हो परन्तु हवा का झोंका सीधे जानवर को न लगता हो और बैठने का स्थान बिल-कुल सूखा तथा मुलायम या गुदगुदा हो ताकि जानवर आराम पा सके और अन्य जानवरों के झोंकने, सींग मारने, लड़ने का डर न रहे। इस मौके पर जानवर का बहुत ज्यादा दूर चरने जाना या चलना-फिरना, कूदना हानिकारक होता है। जरा-सी चोट या धक्के इत्यादि से जानवर को नुकसान पहुंचने का डर रहता है।

ब्याने के दस-पन्द्रह रोज पहले जानवर के पुट्टे और कोख बच्चे के बोझ से भुक जाते हैं और उसके लेवे में दूध भरना आरंभ हो जाता है इसलिए वह फूला हुआ मालूम देता है। पूंछ की जड़ के पास दोनों तरफ खड्डा-सा हो जाता है और सूजन दिखाई देने लगती है। इस समय गाय को डेढ़ पाव तिल या सरसों का तेल पिला देना चाहिए ताकि जानवर का कोठा साफ रहे और ब्याने में तकलीफ कम हो तथा आसानी पैदा हो जावे। इस समय उसको ब्याने के स्थान पर रखना चाहिए।

ब्याने के एक रोज पहले अगर जानवर को ऊपर लिखे अनुसार कोई तेल पिला दिया जाता है तो जानवर के ब्याने में तकलीफ कम होती है। ज्यों-ज्यों गाय के ब्याने का समय नज़दीक आता जाता है गाय की बेचैनी बढ़ती जाती है। इस समय इसको ब्याने के ही स्थान पर रखना चाहिए। गाय बेचैन दिखाई देती है और बराबर गोबर पेशाब करती है। योनि से पानी की एक थैली निकलकर फूट जाती है। जानवर का दर्द और भी बढ़ जाता है।

गाय कमर को तानकर पिछले पैरों को झुकाकर या बैठकर ब्याती है। ब्याने के समय बच्चे का मुंह सामने अगली टांगों के ऊपर रखा हुआ निकलता है। ब्याने के बाद गाय को कुछ गर्म और पौष्टिक तथा शीघ्र पचनेवाली चीज़ खिलानी चाहिए ताकि उसको फौरन ही कुछ ताकत

मिल सके। ब्याने के छः-सात घंटे तक प्रायः जेर डाल देती है। जेर को किसी सुरक्षित स्थान में गहरा गाढ़ देना चाहिए ताकि कुत्ता इत्यादि कोई जानवर उसको निकालकर गन्दगी न फैलावे।

इस वर्णन (विवरण) में हमने साधारण अवस्था का वर्णन किया है। इसमें जो कुछ असाधारण अवस्था पैदा हो जाती है उसको दूर करने के उपाय या उसका इलाज आगे मिलेगा।

गाय के ब्याने ही बच्चे को किसी कपड़े के टुकड़े से पोंछकर साफ कर देना चाहिए और एक साफ की हुई तेज कैंची या चाकू जिसको पहले से ही नीम के पत्तों के पानी में १५-२० मिनट तक उबाल लिया गया हो और उसी पानी में अभी तक रक्खा हुआ हो, निकालकर बच्चे की सूंडी या नाभि में जो एक लम्बी सुतली जैसी लटकती है उसको करीब १ इंच नाभि के पास से छोड़कर काट देना चाहिए और जबतक वह सूख न जाय छः-सात रोज तक एक बार रोज कपूर मिला हुआ तेल उसपर लगाते रहना चाहिए। बच्चे के खुर के आखिरी हिस्से में कुछ मुलायम हिस्सा होता है उसे हटाकर वहां कपूर मिला हुआ तेल या साफ सरसों का तेल चुपड़ देना चाहिए। इसी प्रकार सरसों के तेल में साफ रुई का फाहा भिगोकर दो-चार बूंद हर एक कान, नाक और मुंह में डाल देना चाहिए। बच्चे को थपकी देकर खड़ा करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि खड़ा होने में उसकी कोई दिक्कत हो तो उसके चारों पैर ऊपर से नीचे हाथ से आहिस्ता-आहिस्ता मल दीजिए। इससे बच्चे के पैरों में ताकत आ जायगी और वह खड़ा हो जायगा।

गाय बच्चे को चाटेगी उसे चाटने दीजिए। गाय के ब्याने से जो स्थान इधर-उधर मैला-कुचैला हो गया है उसे बिल्कुल साफ करके सूखा कर दीजिए। नीम के उस गुनगुने पानी से जिसमें कैंची उबाली गई थी, गाय का लेवा व थन धीरे-धीरे साफ कर दीजिए और पैर वगैरा भी जहां तक हो साफ कर दीजिए। गरम पानी में ही कपड़ा तर करके उसको निचोड़ कर इससे गाय के हर एक गीले अंग को सुखा दीजिए। अब सुहागा या

कपूर मिला तेल, घी या मक्खन जो कुछ आपके पास हो चारों थनों पर लगाकर उसका आधा-आधा दूध निकाल लें। बाद में धीरे-धीरे बच्चे के मुंह में एक-एक थन दीजिए और उसको दूध पीना सिखाइये। वह जल्दी ही दो-चार मिनट में दूध पीना आरंभ कर देगा। उसको दूध पिलाने के बाद बाकी का दूध दुह लीजिए।

एक-दो रोज़ तक गाय को ठंडी, गर्म व तेज़ हवा में बाहर नहीं निकालना चाहिए। जाड़े के दिनों में अगर ज्यादा हवा और ठंडक न हो तो घंटे दो घंटे के लिए बाहर दोपहर के समय धूप में निकाल देने में कोई नुकसान नहीं। इसी प्रकार रात के समय गर्मियों में यदि सख्त गर्मी हो तो गाय को मकान के बाहर रखा जा सकता है।

गाय को ब्याने के बाद यथाशीघ्र उसके वजन के अनुसार १२ छटांक गुड़, १ छटांक अजवाइन, १ तोला सोंठ, १ छटांक मेथी, १॥ सेर पानी में खूब उबालकर औटी बनाकर पिलानी चाहिए। औटी देने के दो-तीन घंटे के बाद यदि प्यास हो तो उसको थोड़ा गुनगुना पानी पिलाया जा सकता है।

खाने के पहले तीन दिन सूखी घास, बारीक सूखी जुआर की पूली, जई का सूखा चारा या अन्य कोई सूखा शीघ्र पचनेवाला चारा देना चाहिए। उपरोक्त औटी दोनों वक्त बच्चे को दूध पिलाने के बाद जो दूध निकले उसमें मिलाकर पिला देनी चाहिए। तीन दिन के बाद शीघ्र पचनेवाला चारा और दोनों समय नीचे लिखा दलिया खिलाइए—

६ छटांक से ८ छटांक गुड़ और तीन पाव से एक सेर गेहूं या बाजरा या चोकर में से कोई चीज़, आधी छटांक अजवाइन और आधा तोला सोंठ में अन्दाज़ का पानी मिलाकर खूब उबालो। जब ठीक पच जाय तब बच्चे को दूध पिलाने के बाद जो दूध बचे उसमें मिलाकर खिला देना चाहिए। यह दलिया कम-से-कम दो-तीन रोज़ अवश्य देना चाहिए और हो सके तो सात दिन तक दें। पांच दिन के बाद धीरे-धीरे दाना इत्यादि भी थोड़ा-थोड़ा दिया जा सकता है। पांचवें दिन दोनों वक्त आध सेर चोकर,

छठे दिन दोनों समय तीन पाव चोकर, सातवें दिन दोनों समय एक सेर चोकर, आठ दिन के बाद एक सेर चोकर और एक सेर अन्य दाना देना चाहिए। फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जो भी खल-दाना गायों को दिया जाता है, २१ दिन तक पूरी मिकदार में देना आरंभ कर देना चाहिए। इसी प्रकार १५ दिन के बाद चारा भी जो साधारण गाय को दिया जाता है वह देना आरंभ कर देना चाहिए।

बच्चे को यदि संभव हो तो ३-४ रोज तक गाय के मुंह के पास ही रखना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि जगह इतनी तंग न हो कि गाय के उठने-बैठने में बच्चे को चोट वगैरा लगने का डर हो। बच्चे को पहले रोज तीन-चार दफे थोड़ा-थोड़ा करके दूध पिलाना चाहिए। बाद में जब भूख लगेगी वह खुद ही पी लेगा। दिन में एक बार सरसों का साफ तेल रुई का फाहा भिगोकर बच्चे के मुंह में तोला-दो तोला निचोड़ देना चाहिए। इस प्रकार तीन-चार रोज बच्चे को मां के पास रखकर फिर अलग स्थान पर रखना चाहिए।

गाय को जबतक साधारण चारा-दाना न आरंभ किया जाय तबतक जच्चाखाने या ब्याने की जगह में ही रखना चाहिए। इस समय जच्चा-खाना मैला हो जाता है। उसे फौरन साफ करके सुखा देना चाहिए। इस समय इसको जितना गरम, सूखा और साफ-सुथरा रक्खा जायगा उतना ही गाय को थनों या लेवे के सूजने की संभावना से तथा अन्य ब्याने के समय की बीमारियों से सुरक्षित रक्खा जा सकेगा।

ब्याने के समय बच्चे का ठीक स्थिति में न होना

गाय किस प्रकार ब्याती है इसका संक्षिप्त हाल हम पीछे लिख चुके हैं। यहांपर यह बतला देना चाहते हैं कि बच्चे के निकलने का ठीक तरीका क्या है? सबसे पहले बच्चे के दोनों अगले पैर दिखलाई देते हैं, जिनके ऊपर बच्चे का मुंह खुरों पर टिका हुआ होता है। ऐसी हालत में गाय के ब्याने में कोई विशेष तकलीफ नहीं होती, परन्तु बाज दफा किसी

कारण से बच्चा साधारण स्थिति में न होकर इधर-उधर हो जाता है । उसमें गाय को ब्याने में तकलीफ होती है और ज्यादा गड़बड़ होने से बच्चे और गाय दोनों ही के मर जाने का डर होता है । ऐसी असाधारण अवस्था का हाल नीचे देते हैं ।

(१) बच्चे का सामने सिर अगले पैरों पर होने के बदले कभी-कभी पीछे को घूम जाया करता है ।

(२) अगला एक या दोनों पैर पीछे को फिर जाया करते हैं ।

(३) पहले अगले पैरों के बजाय पिछले दिखाई देते हैं ।

(४) बच्चे के पैर नीचे और सिर ऊपर होने के बदले उसके पैर ऊपर और सिर नीचे होता है ।

ऐसी हालत में बच्चे को खींचकर बाहर निकालने की कोशिश हरगिज नहीं करनी चाहिए बल्कि जिस आदमी को इस प्रकार के काम का तजर्बा हो उससे बच्चे को वापस बच्चेदानी में ढकेलवा कर और ठीक स्थिति में करवाकर बच्चे को बाहर निकलवाना चाहिए । ऐसी हालत में बच्चे को निकालने या ब्याने के लिए नीचे लिखी तरकीब कीजिए—

हाथ के नाखून यदि बड़े हुए हों तो उनको काटकर साबुन से या नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से हाथ धो लीजिए और कपूर या नीम का तेल मिला हुआ मीठा तेल अपने सारे हाथ पर कोहनी के ऊपर तक भली प्रकार चुपड़ लीजिए । फिर इशारे से बच्चे को जहां तक हो हथेली के सहारे या अंगुलियों के सहारे ठीक हालत में लाने की कोशिश करें । ऐसा करने में यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे के या गाय के किसी स्थान पर खुरच इत्यादि न लगने पावे ।

पहली हालत में इशारे से बच्चे को जहां तक हो पीछे बच्चेदानी में ढकेल दीजिए । जितना ही बच्चे को पीछे ढकेलकर उसका सिर अगले पैरों पर लाने की कोशिश की जायगी उतनी ही सहूलियत और कम तकलीफ से यह काम हो जायगा । पीछे ढकेलने के बाद धीरे से उसका सिर अगले पैरों के खुरों पर टिका दीजिए और उसे आगे को कर दीजिए ।

जब वह योनि के मुंह पर आ जाय तब छोड़ दीजिए । गाय अपना जोर मारकर बच्चे को अपने आप निकाल देगी । यदि ऐसा न हो तो धीरे से दोनों हाथों से अगले पैर और सिर को थामकर बच्चे को बाहर खींच लीजिए ।

दूसरी हालत में भी बच्चे को धीरे से पीछे ढकेलकर उसके पैर धीरे से उनके मुंह के नीचे ठीक स्थिति में करके ऊपर बताये अनुसार गाय को अपने आप ब्याने दीजिए । यदि थोड़ी देर तक अपने आप न ब्यावे तो धीरे से ऊपर बतलाये गये तरीके से बाहर खींच लीजिए ।

तीसरी हालत ज्यादा कठिनाई से ठीक होती है । इस हालत में भी बच्चे को धीरे-धीरे पीछे ढकेलिए और उसके अगले पैर आगे को करके धीरे से एक फीता या डोरी से, जो पहले से ही नीम के पत्तों के पानी में आध घण्टा तक उबाली हुई तथा बिलकुल साफ और चिकनी की हुई हो, बच्चे के खुरों के पास बांध दीजिए । फिर एक दूसरा आदमी धीरे-धीरे इशारे से फीता या डोरी को खींचे और आप हाथ के इशारे से उसको बाहर की ओर दीजिए । बच्चे के बाहर आने के पहले फिर देख लेना चाहिए कि अगले पैरों पर सिर ठीक स्थिति में टिका हुआ है या नहीं । इस प्रकार ठीक स्थिति में करके बच्चे को धीरे से खींच लेना चाहिए ।

चौथी हालत में भी बच्चे को इशारे से पीछे ढकेलकर उसको पलट देना चाहिए अर्थात् ठीक स्थिति (Position) में करके निकालना चाहिए ।

बच्चे को जहां तक हो इशारे से धीरे-धीरे ठीक स्थिति (Position) में करके जल्दी-से-जल्दी निकालना चाहिए अन्यथा ज्यादा देर होने से बच्चे के मर जाने का डर होता है । बच्चा मर जाय तो वह फूल जाता है और बिना आपरेशन के बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है । उसका जहर मां को भी चढ़ने का डर रहता है । यदि बच्चा किसी तरह भी निकाला न जा सके तो पशुओं के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन करवाके निकलवा देना चाहिए ।

बच्चे के निकाल देने के बाद फौरन ही गाय को जल्दी-से-जल्दी ताकत पहुँचानेवाली दवा देनी चाहिए । इसके लिए पावभर घी और आधी छटांक काली मिर्च दीजिए ।

इसके दो घण्टे बाद नीचे लिखी औटी दीजिए—

गुड़ एक से दो पाव अजवायन २ छटांक
सोंठ १ छटांक

डेढ़ पाव पानी में खूब पकाकर पिला दीजिए । फिर पांच-छः घण्टे बाद पावभर घी, १ तोला काली मिर्च, १ तोला भंग, १ तोला सोंठ मिलाकर दीजिए । जिस प्रकार गर्भपात (Abortion) में, जेर न डालने की हालत में दोनों समय झूश करते हैं उसी प्रकार चार-पांच रोज तक झूश कीजिए (विधि पृष्ठ १२ पर देखिये) और यदि गाय के अन्दरूनी हिस्से में किसी प्रकार की खराबी का अन्देशा हो तो आगे जो नुसखा (सड़ाव) देने के लिए लिखा है, वह दीजिए ।

खान-पान—पहले दिन गाय को गुड़ मिलाकर तीन-चार बार एक सेर दूध दीजिए और खाने को मुलायम सूखा चारा दीजिए । बाद में गर्भपात (Abortion) जैसा खाने-पीने को दीजिए । अगर कुछ बुखार हो गया हो तो पीने के पानी में कलमी शोरा डालकर पिलाइए ।

अन्य हिदायतें—गर्भपात जैसी । उसके अलावा गाय को तेज सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए । इस समय गाय की हालत नाजुक होती है इसलिए उसको अधिक-से-अधिक आराम देने की कोशिश करनी चाहिए ।

नोट—एक मित्र का अनुभव है कि यदि गाय को कष्ट हो रहा हो और बच्चा ठीक स्थिति में होने पर भी बाहर न आता हो तो ढाई तोला निर्वंसी पानी में घोटकर जरा गर्म करके पिला देने से बच्चा फौरन बाहर आ जाता है ।

मरा बच्चा पैदा होना

यदि बच्चा पेट में मर जाय तो फौरन ही ढोरों के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन द्वारा बच्चे को निकलवा देना चाहिए । यदि यह संभव न हो तो तेज चाकू को १५-२० मिनट तक नीम के पत्तों में पानी के साथ उबालकर और उस पानी से हाथ धोकर नीम का या कपूर मिला

मीठा तेल हाथों पर चुपड़कर, उस चाकू से मरे हुए बच्चे के छोटे-छोटे टुकड़े करके निकाल देना चाहिए और बाद में पिछली बीमारी में जो दवाइयां व इश इत्यादि बताई हैं, वे देनी चाहिए।

बच्चा गिरा देना (Abortion)

गर्भ तासीर की चीजें खाने से, तेज दौड़ने, कूदने-फांदने, आपस में लड़ने, चोट लगने, किसी वजह से डर जाने, बहुत ज्यादा कमजोरी इत्यादि से पूरे समय के पहले ही गाय का बच्चा गिर जाता है। बाज दफा खून में विकार हो जाने के कारण भी बच्चा गिर जाता है। इसके अलावा यदि बिना किसी वजह के गाय बच्चा गिरा दे और इस प्रकार और भी आस-पास गायों ने बच्चा गिरा दिया हो तो छूत की बीमारी समझनी चाहिए। उसका विवरण छूत की बीमारियों में देखिए। यहां हम बिना छूत की बीमारी का जिक्र करते हैं।

पहचान—यदि गाभिन पशु लगभग ८ महीने के पहले बच्चा गिराने की हरकत जाहिर करे तो उसको तन्दुरुस्त जानवरों से फौरन अलग कर देना चाहिए और यह समझना चाहिए कि बच्चा गिरने का अन्देश है।

इलाज—चावल के आध सेर गर्भ मांड में ४ मासे अफीम या १ मासे घतूरे के बीज भंग की तरह सिल पर पीसकर अच्छी तरह से घोलकर पिला दीजिए। पांच-पांच या छः-छः घण्टे के बाद दो-तीन खुराक दीजिए। अगर इससे बच्चा रुकना होगा तो रुक जायगा। यदि बच्चा गिर ही जाय तो बच्चे को तथा गाय के स्थान के मैले-कुचैले को खेत इत्यादि दूर जगह में तीन-चार फुट गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए। जिस जगह पर गाय बंधी हो उसको एकदम साफ करके उसपर या तो भली प्रकार आग जला देनी चाहिए या बुझा हुआ चूना बिखेर देना चाहिए। गाय की सफाई के बाद गाय के ब्याने पर जो औटी इत्यादि दी जाती है वह दीजिए ताकि वह जेर डाल दे। अक्सर बच्चा गिरने (Abortion) के बाद गाय आसानी से जेर नहीं डालती, इसलिए एक रोज तक उसको दो-तीन बार

जेर डालने की दवा (जो आगे दी जायगी), दीजिए । यदि दो-तीन बार उपरोक्त दवा देने पर भी जानवर जेर डालता न दिखाई दे तो दूसरे दिन साबुन से हाथ धोकर और हाथों में नीम या कपूर या तारपीन का तेल मिला हुआ मीठा तेल चुपड़कर धीरे-धीरे हाथ से एक-दो बार करके निकाल दीजिए और जेर निकालने के बाद गाय को चार-पांच रोज तक बराबर दूध दीजिए (पृष्ठ १२ पर देखिए) तथा नीचे लिखी दवा सड़ाव पिलावें—

गूलर	८ छटांक	राई	२ छटांक
सरसों की खल	४ छटांक	नमक	२ छटांक
छाछ या मट्ठा		२ छटांक	

गूलर और सरसों की खल को कूट लें । राई और नमक को पीस लें । छाछ में मिलाकर गर्म जगह रख दें । एक दिन बराबर धूप में ढका रहने दें । इससे वह सड़ जावेगी । जब सड़ जाय तो आध सेर रोज नाल से पिला दें ।

खान-पान—गाय को ब्याने के बाद जो खाने-पीने को देते हैं करीब-करीब वही देना चाहिए । और चार-पांच रोज के बाद साधारण खुराक आरम्भ कर सकते हैं ।

अन्य हिदायतें—सफाई का खयाल रखना चाहिए । यह मालूम होते ही कि गाय को गर्भपात होनेवाला है, उसको दूसरे जानवरों से अलग कर देना चाहिए ।

कभी-कभी निर्वंसी से मरा बच्चा भी निकल आता है । २॥ तोला निर्वंसी पानी में घोटकर जरा गरम करके देनी चाहिए ।

जेर न गिराना

तन्दुरुस्त गाय प्रायः हमेशा ब्याने के दस-पन्द्रह घण्टे के अन्दर जेर डाल देती है । कमजोर, बीमार या जिनको गर्भपात की बीमारी हुई हो वह जेर ठीक समय पर नहीं डाला करतीं । .य को ब्याने के बाद जो औटी दी जाती है उसके तीन-चार घण्टे बाद तं यदि जेर न डाले तो दुबारा-तिबारा वही औटी देनी चाहिए । इसपर भी यदि न डाले तो नीचे लिखी दवायें देनी चाहिए—

इलाज—नीचे लिखी दवा में से कोई एक दवा आठ-आठ दस-दस घण्टे बाद दीजिए ।

(१) बांस के पत्ते पावभर से आध सेर तक

खारी नमक एक पाव तक

दोनों चीजों को एक सेर पानी में खूब उबालकर पिलाइए ।

(२) गुड़ आध सेर बेलगिरि आध सेर

सोंठ १ तोला अजवायन २ तोला

औटी बनाकर पिलावें । दिन में दो-तीन खुराक से अधिक न दें ।

(३) अन्त में उपरोक्त औटी में बनाने के समय दो माशे गाजर के बीज सोंठ-अजवायन के साथ मिलाकर पिलावें ।

यदि इससे भी जेर न गिरावे और गाय को ब्याये दो-तीन रोज हो जायं तो जेर को हाथ से निकालने की कोशिश करनी चाहिए ।

इनके अलावा एक होमियोपैथिक दवा जो मेरी अजमाई हुई है इस बीमारी में बहुत कामयाब रही है । वह गांव में नहीं मिलती, बड़े कस्बे या शहर में होमियोपैथिक डाक्टर या अस्पताल में मिलती है । जिसके यहां चार-पांच जानवर हों उसे एक औंस लाकर किसी ठंडे और साफ स्थान में किसी डिब्बिया या साफ बर्तन में बन्द करके रखनी चाहिए । इस दवा का नाम 'पलसाटिला मदरटिचर' है ।

गाय के ब्याने या बच्चा डाल देने के बाद और काली मिर्च देने के पहले या बाद में एक तोला सत्तू या चने का आटा या गेहूं का आटा या साफ देसी खांड साफ कागज पर रखकर उसमें ५ से ७ बूंद दवा डालकर गाय की जबान पर डाल दीजिए । यदि उपरोक्त कोई चीज भी न मिले तो कुएं के आधा छटांक ताजा पानी में दवा की ५ से ७ बूंद डालकर दे सकते हैं ।

इस प्रकार ५ खुराक रोज देनी चाहिए । इससे दो-तीन रोज में गाय यदि एक साथ नहीं तो थोड़ा-थोड़ा करके जेर डाल देगी । अन्यथा जेर को निम्न विधि से हाथ से निकालना और दूश देना चाहिए ।

जेर को हाथ से निकालने की तरकीब—पहले नाखून काट लें । फिर होशियारी से कोहनी तक हाथ धोकर १ छटांक मीठे तेल में ३ मासे नीम का तेल या एक माशा कपूर मिला लें और उससे हाथ भली-भांति चुपड़कर धीरे-धीरे गाय की योनि में हाथ डालकर बहुत होशियारी से हाथ से जेर को, जिस जगह वह चिपकी हुई हो, धीरे-धीरे निकाल लीजिए । इसके बाद गाय को दोनों वक्त करीब १॥ सेर पानी में नीम के पत्ते उबालकर या फिनाइल या कुएं में डालने की लाल दवा (Potassium Permanganate) मिलाकर ५ या ७ दिन तक इश करते रहें । (इश की विधि पृष्ठ १२ पर देखिए) इसके बाद दो-तीन रोज तक नीचे लिखा सड़ाव या पलसाटिला (होमियोपैथिक दवा जैसे ऊपर बताया गया है) देते रहना चाहिए :—

गूलर कच्चा	आध सेर	राई	आध पाव
सरसों की खल	एक पाव	नमक	आध पाव
छाछ		तीन सेर	

गूलर और सरसों की खल को कूट लें । राई और नमक को पीस लें । सबको छाछ में मिलाकर किसी गर्म जगह में रख दें । एक-दो दिन बराबर धूप में ढकी रहने दें । एक दिन में चीजें सड़ जायंगी । तब आध सेर रोज नाल से पिला दें ।

खान-पान—गाय के ब्याने पर जो कुछ खान-पान देते हैं वही देना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—जानवर को आराम से मकान के अन्दर गुआल वगैरह बिछाकर रखना चाहिए । सफाई का खास ध्यान रखना चाहिए ।

प्रसूत या जच्चा का बुखार (Septic Fever)

कभी-कभी गाय के ब्याने के बाद कोई खराबी हो जाने तथा गाय की बच्चादानी में हाथ डालने में कोई खरोंच वगैरह लग जाने या किसी प्रकार गन्दगी के प्रवेश हो जाने से बुखार हो जाया करता है ।

पहचान—गाय का एकदम सुस्त हो जाना, खाना-पीना बन्द कर

देना । एक तरफ गर्दन डालकर पड़ा रहना, एकदम कमजोर हो जाना, बुखार रहना । इसमें कभी-कभी कान ठंडे हो जाते हैं और शरीर भी ठंडा दिखाई पड़ता है । तब गाय की हालत ज्यादा खराब समझनी चाहिए ।

इलाज—गाय को तेज गर्म-सर्द हवा से बचायें और उसपर भूल डाल दें ताकि मक्खी-मच्छर तंग न करें । उसके नीचे व आम-पास का स्थान बिल्कुल साफ और सूखा रखें । बैठने के स्थान पर खूब अच्छी बिछाली देकर उसको बिठायें । दोनों वक्त डूश (विधि पृष्ठ १२ पर देखिये) करने के अलावा व्याने के बाद जो औटी दी जाती है वह एक वक्त उसे दें । दूसरे वक्त—

सोंठ १ हिस्सा अलसी १ हिस्सा

काली मिर्च १ हिस्सा नौसादर आधा हिस्सा

सबको कूट-पीस लें; ४ तोला दवा एक पाव गुड़ में रखकर खिलाना चाहिए । पीने को गुनगुना पानी एक तोला कलमी शोरा मिलाकर दें ।

इन्हीं दिनों में सल्फा ड्रग्स (Sulpha Drugs) और पेन्सीलीन के इंजेक्शन किसी भी जस्म या सूजन और खास करके अन्दरूनी छूत (Infection) को दूर करने के लिए बड़े कामयाब साबित हुए हैं । यद्यपि उपरोक्त दवाएं बहुत तेज हैं, फिर भी मनुष्यों के मामले में तो बड़ी लाभप्रद साबित हुई हैं । यह दवाएं गाय-बैल तथा अन्य ढोरों पर भी सफलतापूर्वक आजमाई जा चुकी है ।

बाक वा लेवा के सूज जाने की बीमारी प्रायः अति उत्तम जाति की खूब दूध देनेवाली गाय-भैसों को ही हुआ करती है और तनिक-सी भूल-चूक हो जाने से थन का लेवा सर्वदा के लिए खराब या बेकार हो जाता है । अतः लेखक की राय है कि ढोरों के मालिक जो उपरोक्त दवाएं प्राप्त कर सकते हैं और उनकी मदद से अपने ढोरों का इलाज करना चाहें तो उन्हें सरकारी ढोरों के डाक्टर की राय से दवाओं को काम में लाकर लाभ उठाना चाहिए ।

खान-पान—अगर खाये तो सूखी मुलायम शीघ्र पचनेवाली घास,

दूध और चोकर की या अलसी की चाय दीजिए। पीने को गुनगुना पानी। बुखार उतरने के बाद थोड़ा-थोड़ा चोकर या दलिया दूध मिलाकर दिया जा सकता है। इसके बाद धीरे-धीरे साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—इस समय गाय की हालत बड़ी नाजुक होती है। उसे जितना अधिक-से-अधिक आराम पहुंचाया जायगा और वहां अधिक-से-अधिक जितनी सफाई रखी जायगी उतनी ही गाय के बचने की संभावना ज्यादा है। गाय को एक करवट आठ-दस घंटे से ज्यादा नहीं पड़े रहने देना चाहिए। इसलिए उसको चौबीस घंटे में दो-तीन बार एक करवट से दूसरी करवट बदलते रहना चाहिए। उसका शरीर कहीं से गीला हो गया तो फौरन सुखा देना चाहिए और कपड़े या टाट से पोंछकर बिल्कुल साफ रखना चाहिए।

बाक (लेवा) और थन का सूजना

यह बीमारी प्रायः अधिक दूध देनेवाली गायों में उस वक्त जब कि दूध का ज्यादा-से-ज्यादा जोर होता है और लेवा उसके जोर से तन जाता है, हुआ करती है। ऐसे समय गाय के सीली या गीनी जगह में बैठने से, सर्द-गर्म हो जाने से, लेवे में दूसरी गाय के सींग या लात मार देने से या थनों के दूध पीते हुए बच्चे के जोर से सिर मार देने से उसका लेवा फूल जाता है। अक्सर गाय को मेले या प्रदर्शनी इत्यादि में दिखाने के लिए या अन्य किसी कारण से यथोचित समय से देर में दूध दुहा जाता है तब भी यह बीमारी हो जाती है। कभी-कभी जिस प्रकार गाय का लेवा सूजता है उसी प्रकार चोट इत्यादि और सील, ठंड या गर्मी से थन भी सूज जाया करता है। यदि उसका पूरा-पूरा इलाज और देख-भाल नहीं होती तो सूजन बढ़ जाती है। उसमें एक प्रकार की बीमारी के कीटाणु पैदा हो जाते हैं जो ऊपर लेवे तक फैल जाते हैं और उसकी वजह से लेवा भी सूज जाता है। वह बीमारी चाहे थनों से आरंभ हुई

हो या लेवे से लेकिन यथोचित देख-भाल और इलाज न होने के कारण फैलकर थनों से लेवे में और लेवे से थनों में हो जाती है ।

पहचान—थन या बाक के सूजे हुए हिस्से से दूध कम निकलता है । दूध में फुटकी-सी आने लगती है । धीरे-धीरे दर्द बढ़ जाता है और गाय उस हिस्से पर हाथ लगते ही लात मारती है । उस हिस्से का दूध गाढ़ा मवाद-सा हो जाता है और यदि शीघ्र आराम न हो तो बिल्कुल पानी की तरह हो जाता है । वह थन और लेवे का हिस्सा जिससे ऐसा दूध निकलता है बेकार हो जाता है । कभी-कभी बीमारी का असर एकदम बड़ी तेजी से होता है तब जानवर सुस्त हो जाता है । हल्का बुखार हो जाता है । जुगाली करना बन्द कर देता है और कभी-कभी कांपने भी लगता है । उसके थन या लेवे के एक या अधिक हिस्सों पर इसका असर हो जाता है सूजन बड़ी तेजी से बढ़ जाती है और वह हिस्सा लाल-सा हो जाता है । अगर जल्दी आराम न हो तो फिर सख्त हो जाता है । दूध बड़ी मुश्किल से निकलता है, शुरू में गाढ़ा और बदबूदार मवाद और खून मिला हुआ होता है, बाद में पानी जैसा हो जाता है । लेवे के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में बीमारी फैल जाती है और यदि जल्दी आराम न हो तो लेवे के एक-दो या इससे ज्यादा हिस्से हमेशा के लिए बेकार हो जाते हैं ।

हिफाजत—इस बीमारी को न होने देना ही अच्छा है क्योंकि एक बार हो जाने पर एक तो जानवर अच्छा मुश्किल से होता है, दूसरे अगर अच्छा भी हो जाता है तो इसका असर कुछ-न-कुछ रह जाता है और दूध सदा के लिए थोड़ा या बहुत कम हो जाता है । इससे बचने का एकमात्र उपाय गाय के बैठने के स्थान को बिल्कुल साफ रखना और उसके नीचे यदि पक्का स्थान हो तो मुलायम और सूखा बिछावन रखना और कच्चा स्थान हो तो सूखा रेत या मिट्टी का रखना ही है । गाय को दुहने के पहले और संभव हो तो बाद में भी नीचे लिखी दवा उसके थनों पर भली-भांति लगानी चाहिए ।

बारह हिस्से घी या मक्खन, वैसलीन या तिल का तेल और एक हिस्सा

भुना हुआ या तवे पर फुलाया हुआ सुहागा या बोरिक एसिड या आधा हिस्सा कपूर—दोनों को भली प्रकार मिलाकर लगावें। यदि कपूर तेल, मक्खन इत्यादि में जल्दी न मिले तो उसे थोड़ा शराब या स्पिरिट में घोलकर फिर तेल इत्यादि में घोलना चाहिए।

इलाज—सबसे पहले अगर गाय को कब्ज हो तो जुलाब देना चाहिए और पीने के पानी में १ तोला शोरा मिलाकर पिलाना चाहिए। गाय को दुहने के समय सूजे हुए और अच्छे हिस्से का दूध अलग-अलग बर्तन में निकासना चाहिए। अगर बच्चा थनों से दूध पीता हो तो उसे सिर्फ अच्छे थनों का ही दूध पिलाना चाहिए। जिस हिस्से में बीमारी हो गई हो उस हिस्से को ऊपर लिखी चिकनाई लगाकर धीरे-धीरे तमाम दूध दुह लेना चाहिए अगर उस हिस्से का सख्त होने की बजह से दूध निकलना कम भी हो गया हो तो भी, और चाहे उस हिस्से से दूध की जगह मवाद निकले तो भी बराबर दुह लेना चाहिए क्योंकि अगर उसमें जरा-सा भी दूध रह गया या उसको देर तक नहीं दुहा गया तो वह हिस्सा बेकार हो जायगा।

दुहने के बाद नीचे लिखी कोई-सी दवा सेक करने के बाद सबेरे-शाम दोनों समय लगानी चाहिए—

(१) मकोय के पत्तों को पानी में डालकर उसके गर्म-गर्म पानी से १०-१५ मिनट तक सेंक करो। बाद में मकोय के ताजे पत्तों का अर्क, गेरू और ककरोँधा, कुकुरमुत्ता या गुलेबांस के पत्ते बारीक पीसकर गर्म कर लो और गुनगुना-गुनगुना सृजनवाली जगह पर और उसके आस-पास लेप कर दो।

मकोय के ताजे पत्तों का अर्क, कालीजीरी और गेरू तीनों को मिलाकर गरम करके गरम-गरम सृजन पर लेप करने से भी लाभ होता है।

(२) लोनी खारी मिट्टी को पानी में औटावें। इस पानी से थनों का सेक करें। गाढ़े हिस्से का थनों पर लेप कर दें।

(३) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेक करने के बाद दो तोले हल्दी और एक तोला साबुन दोनों को खूब बारीक पीसकर खूब औटाकर लेप करें।

(४) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेक करने के बाद गेरू और अजवायन पीसकर पानी में मिलाकर पकावें और फिर लेप करें।

(५) अमरबेल, मकोय और संभालू के पत्तों को पानी में औटाकर उस पानी से सेक करें। फिर इन तीनों के नये ताजे पत्तों को पीसकर गर्म कर के लेप करें।

(६) अमरबेल, भाड़ी के पत्ते और बरना के पत्ते पानी में उबालकर उस पानी से सेक करें और फिर तीनों के नये ताजे पत्तों को पीसकर गर्म करके लेप कर दें।

(७) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से धोने के बाद दिमौट (दीमक के घर की मिट्टी) को पानी में उबालकर लेप कर दें।

(८) नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से थनों को सेकने के बाद, बचे हुए गर्म पानी से कपड़ा भिगोकरी निचोड़ लो और थनों को उससे सुखा लो। फिर थोड़ी हींग, ५-६ गुने पानी में घोलकर गर्म करके उसका पानी सूजी हुई जगह और उसके आस-पास लगावें।

(९) स्त्रियों को थनैला हो जाने के रोग में देखा गया है कि किशमिश, मुनक्का, बादाम को पीसकर उनका गुनगुना लेप करने से रोग शीघ्र ही दूर हो जाता है। अतः गाय भैसों के थनों पर इनका लेप, थनों को मकोय के पत्तों के उबाले हुए पानी से सेक करने के बाद कर दें। यदि इससे लाभ न हो तो लेप में थोड़ा भुना हुआ सुहागा और डाल दें।

खाने को नीचे लिखी दवा तीन दिन लगातार दें—

उड़द या छोटे चने के बराबर रस कपूर की डली हरे केले को चीर कर उसमें रखकर दिन में एक बार खिला दें। रस कपूर एक तेज जहरीली दवा है। इसको बड़ी होशियारी से काम में लाना चाहिए और दो-तीन दिन से ज्यादा लगातार नहीं देनी चाहिए। इसके बाद दो बार रोज ग्राध पाव शतावरी पाक खिलाइये। शतावरी पाक बनाने की विधि यह है—

शतावरी को कूटकर चलनी में छान लें और चौगुने मीठे तेल को कढ़ाई में डालकर आंच पर रख दें। जब तेल लाल हो जाय तब शतावरी उसमें

डाल दें और फौरन कढ़ाई आंच पर से उतारकर किसी तसले में जिसमें पानी भरा हो कढ़ाई रखकर बराबर उसको मिलते रहें, फिर ठण्डा करके उपरोक्त विधि से खिलावें। एक बार एक सेर दवा तैयार कर लें ताकि कई रोज काम में आ सके।

यदि ऊपर की दवा न दे सकें तो नीचे लिखी दवा की औटी बनाकर दें—

सोंठ	१ तोला	अजवायन	२ तोला
मेथी	१० तोला	गुड़	१० तोला

आध सेर पानी में खूब पकावें। जब आधा या पौना रह जाय तो गुनगुना-गुनगुना पिला दे।

अगर जख्म हो जाय तो जख्म को पहले नीम के पत्तों के उबले पानी से धो लें। कपूर का तेल, बोरिक एसिड या फूले हुए सुहागे का मलहम जख्म पर लगावें।

थन बन्द हो जाय तो गाय जब दुबारा ब्यानेवाली हो तब ब्याने के थोड़ी देर पहले गाय को २॥ तोला हींग चने की रोटी में रखकर खिला दें।

अगर दो-चार दिन पहले ही थन बन्द हुआ हो तो नीचे की दवा तीन-चार दिन तक दें—

कालीजीरी आध पाव काली मिर्च आध पाव

आध सेर घी में मिलाकर या शतावरी पाक आध पाव से एक पाव तक दिन में दो बार दें।

खान-पान—इस बीमारी में जानवर को कोई ऐसी खुराक नहीं देनी चाहिए जिससे दूध बढ़े क्योंकि वह हानिकारक होता है। गाय को शीघ्र पचनेवाली खुराक देनी चाहिए। और ठण्डा पानी न पिलाकर गुनगुना या कुएं का ताजा पानी पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज हवा और सर्दी से बचावें। उसके रहने की जगह एकदम सूखी रखें। सेक वगैरह के पानी से या वैसे ही जो कीचड़ वगैरह हो जाय उसे बिल्कुल साफ करके सूखी मिट्टी फैला दें मवाद या सूजे हुए हिस्से का दूध इत्यादि जो भी निकले वह जहां तक हो

फर्श पर नहीं गिरना चाहिए बल्कि उसे अलग बर्तन में निकालना चाहिए । अगर फर्श पर गिर ही जाय तो फौरन साफ कर देना चाहिए ।

योनि में कीड़े पड़ जाना

गंदी जगह में रहने या बैठने से मक्खियां कीड़ों के अंडे छोड़ देती हैं, जिससे कीड़े पड़ जाते हैं । कीड़े पड़ने से योनि सूज जाती है और जख्म हो जाता है । कभी-कभी पेशाब के साथ शुरू या आखिर में खून भी आता है । जब कीड़े इधर-उधर चलते हैं तो जानवर बेचैन हो जाता है ।

इलाज—जानवर को गिराकर या अन्य तरीके से काबू में करके योनि को उबले हुए नीम के पत्तों के पानी से पिचकारी द्वारा धोइए । यदि कीड़े दिखलाई दें तो नीम के पत्तों के साथ उबाली हुई चिमटी से कीड़े निकाल दीजिए । इसके बाद एक हिस्सा तारपीन का तेल और एक हिस्सा मीठा तेल मिलाकर रुई के फोयों के साथ कीड़ेवाले स्थान पर चिमटी से अन्दर कर दीजिए । इस प्रकार सबेरे-शाम दोनों समय दवा लगानी चाहिए । अगर तारपीन का तेल न हो तो फिनाइल और तेल मिलाकर भी लगाया जा सकता है या मखे के पत्तों का टपका दीजिए । इससे कीड़े मर जायेंगे ।

कपड़े धोने के रीठे को पानी में उवालकर जख्म को धो डालने से भी सब कीड़े मर जाते हैं या पंसारी से मूलीम लाकर बारीक पीसकर कपड़-छान कर लो । एक रुई के फोये के साथ लपेटकर तारपीन के तेल की तरह अन्दर कर दो । कीड़े मर जायेंगे या अपने आप बाहर आ जायेंगे ।

खान-पान—साधारण दीजिए ।

अन्य हिदायतें—फोटों के सूज जाने की बीमारी के अनुसार ।

बच्चेदानी का बाहर लौट आना

बुढ़ापे में कमजोरी की वजह से या बच्चा होने के समय लापरवाही होने से ऐसा हो जाता है ।

पहचान—बच्चा होने के समय या बाद में जेर गिराने के लिए जोर लगाने के समय या और थोड़े दिन बाद बच्चेदानी का बाहर निकल आना ।

इलाज—ज्योंही बच्चादानी बाहर निकले फौरन ही स्पिरिट, शराब, फिटकरी के पानी या नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से बच्चादानी को धो देना चाहिए और फिर अपने हाथ धोकर उसको आहिस्ता से अन्दर करके हथेलियों से उस जगह को थोड़ी देर दबाये रखना चाहिए। फिर कपड़े की पट्टी से उस जगह को बांध देना चाहिए ताकि बच्चेदानी बाहर न निकले। जानवर को थोड़ा-सा धीरे-धीरे टहलाना चाहिए ताकि बच्चादानी अपनी जगह पर भली प्रकार बैठ जाय। इस प्रकार चौबीस घंटे तक पट्टी या छींका बंधा रहना चाहिए। आस-पास की जगह नीम के पानी व फिटकरी के पानी से बराबर साफ करते रहना चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

सोंठ	६ माशा	काली मिर्च	१ तोला
	घी	पावभर	

घी को थोड़ा गर्म करके दोनों चीजें पीसकर उसमें मिलाकर दो-चार दिन तक बराबर रोज दीजिए।

खान-पान—खाने को शीघ्र पचनेवाली खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—बच्चेदानी अन्दर करने के बाद जानवर को आठ-दस घंटे तक बैठने न देना चाहिए और दस-बारह रोज तक ज्यादा दूर चलना या तेज दौड़ाना नहीं चाहिए। बैठने का स्थान सूखा होना चाहिए तथा बैठने की जगह बिछाव कर देना चाहिए।

यथोचित समय पर गाय का गर्भ धारण न करना

कई बार गाय ब्याने के ४-५ महीने बाद तक या इससे भी ज्यादा समय तक गाभिन नहीं होती। इसके तीन कारण हो सकते हैं—

(१) **नस्ल का स्वाभाविक धर्म**—किसी-किसी नस्ल की गायें प्रायः ब्याने के काफी अर्से बाद ही गाभिन हुआ करती हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी उस नस्ल में यही चला आ रहा है इसलिए ऐसी जातियों की गायों का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है।

(२) व्यक्तिगत स्वभाव—किन्हीं-किन्हीं गायों का यह स्वभाव होता है कि वे ब्याने के काफी अर्से बाद सांड से मिलती हैं और गाभिन होती हैं।

(३) खाने-पीने और रहने का तरीका—जब किसी गाय को गर्भ तासीर की खुराक ज्यादा मिलती है या जब उसका बच्चा मर जाता है या जब उसके बच्चे को सीधा थनों से दूध न पिलाकर ऊपर से दूध पिलाया जाता है और जब वह चरने या टहलने जाती है और बराबर उसके साथ या रेवड़ में सांड हो तो ऐसा देखा गया है कि वह जल्दी गाभिन हो जाती है। इसके विपरीत जिनको पूरी खुराक नहीं मिलती, जिनके पास सांड नहीं रहता या जिनका सांड से मिलना दुर्लभ होता है, वे बहुत दिनों में गाभिन होती हैं।

यदि होशियारी से और बराबर इस कमी को दूर करने की कोशिश की जाय तो तीनों ही हालत में कामयाबी हो सकती है, परन्तु तीसरी हालत में खुराक इत्यादि ठीक देकर इस कमी को औरों से जल्दी दूर किया जा सकता है। बाज दफा वर्षों तक और जड़ से ही गाय गाभिन नहीं होती। उसका कारण बच्चादानी या बच्चा पैदा करने के अन्य अंगों में सूजन होना, उनका मुंह टेढ़ा या बन्द हो जाना या उनमें अन्य खराबियां हो जाना होता है।

इलाज—बच्चेदानी या बच्चा पैदा करने के अन्य अंगों का मुंह बन्द हो जाना या थोड़ा मुड़ जाना, गाय के ज्यादा मोटा हो जाने और चर्बी बढ़ जाने की वजह से भी हो जाता है। अगर ऐसी बात हो तो उसकी खुराक कम कर देनी चाहिए, उससे काम लेना चाहिए और उसको खूब चलाना-फिराना चाहिए ताकि जो चर्बी छा गई है और मोटापन आ गया है, वह कम हो जाय। यदि वह बीमारी मुटापा या चर्बी छाने की वजह से नहीं है तो ढोरो के होशियार डाक्टर को दिखाकर आपरेशन द्वारा ठीक (इलाज) कराना चाहिए।

इसके अलावा दूसरी हालतों में देर में गाभिन होनेवाली गायों को नीचे लिखी दवाएं लाभप्रद होती हैं। अगर गाय ब्याने के बाद १००

दिन तक गाभिन न हो तो १०१वें दिन नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दीजिए :

(१) २ सेर गेहूं या जई को पानी में १२ घण्टे भिगो दें। इसके बाद गीले कपड़े या बोरी में लपेटकर रख दें। जबतक गेहूं या जई जम न जायं और दो अंगुल लम्बे अंकुर निकल न आयें तबतक कपड़ा गीला रखें। ऐसे अंकुर निकले गेहूं १५ दिन तक बराबर जानवर को खिलाएं।

(२) अढ़ाई पाव मेथी बारीक पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर लुगदी बना लें। इसे तीन-चार दिन सबेरे खिलावें।

(३) ४ से ८ छुहारे प्रति दिन दो-तीन दिन तक दें। पहले दिन ४ छुहारे दें। इससे भी गर्भ न हो तो दूसरे दिन ५, तीसरे दिन ७ और पांचवें दिन ८ छुहारे रोटी या गुड़ में मिलाकर खिला दें।

(४) मसूर

१। सेर

बैंगन

१। सेर

दोनों को पकाकर तीन दिन तक रोज खिलावें।

(५) भिड़ों के छत्ते को जिसमें अंडे न हों एक छटांक पीस लो और १ छटांक जामुन की छाल पीस लो। दोनों को मिलाकर सबेरे ७ दिन तक दो।

(६) कवूतर की बीट १ तोला सबेरे दो-तीन दिन तक बराबर खिलावें। यह दवाई सब दवाइयों से तेज है।

यदि उपरोक्त किसी भी दवाई से फायदा न हो तब देर में गाभिन होने की कमी को दूर करने के लिए एक प्रकार के इंजेक्शन (Injection) यानी खाल में सुई द्वारा दवाई पहुंचाने का जो नया इलाज निकला है, उसे ढोरों के होशियार डाक्टर से दिलाना चाहिए।

खान-पान—जो जानवर अधिक मोटे हों और जिनपर चर्बी चढ़ गई हो, उनकी खुराक कम कर देनी चाहिए और जो दुबले और कमजोर हों उनकी खुराक बढ़ा देनी चाहिए ताकि वे अपनी ठीक अवस्था को प्राप्त कर लें। गाय को गाभिन होने के पहले हमेशा ज्यादा गर्म तासीर की

खुराक दीजिए और गाभिन होने के बाद ठण्डी तासीर की खुराक दीजिए ।

अन्य हिदायतें—गाय के ब्याने के ६० दिन के बाद बहुत होशियारी से गाय की हरकतों को देखते रहना चाहिए, क्योंकि करीब ६३ दिन और उसके बाद लगभग हर इक्कीसवें दिन के बाद गर्म होगी । इन दिनों में जब भी ज्यादा चंचल दिखाई दे या कूदे-फांदे, दूसरे जानवरों पर चढ़े तब फौरन उसको सांड से गाभिन कराने के लिए मिलाना या उसके साथ रखना चाहिए ।

गाय का बार-बार गाभिन होना

यह खराबी गर्म खुराक खिलाने से या गाय के गर्भधारण की ताकत कम हो जाने की वजह से हुआ करती है या जो सांड गाय को गाभिन करता है उसमें कुछ खराबी होने के कारण भी ऐसा हो जाता है ।

पहचान—एक बार गर्म होने पर सांड से मिलने के बाद बार-बार गर्म होना और गर्भ धारण न करना इनकी पहचान है ।

इलाज—गर्म को दूर करने के लिए गाय को ठंडी खुराक देनी चाहिए । इसके लिए गाय को गाभिन होते ही एक पाव घी और उसमें छः माशे बारीक पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर दीजिए । इसके बाद नीचे लिखी दवा में से कोई-सी दवा दीजिए :

(१) लसोड़े के दो सेर हरे पत्ते गाभिन होने के बाद खिला दें । जिस दिन गाभिन हो उस दिन खाना न दें और दें तो बहुत कम और ठण्डा दें ।

(२) गाय जब गाभिन होने को हो तो १-२ दिन पहले ४ सेर गेहूं या जई भिगो लें और गाभिन हो जाने के बाद गाय को खिला दें । इस प्रकार जमे या अंकुर निकले हुए गेहूं या जई बराबर चार-पांच दिन तक एक-एक सेर खिलावें ।

(३) पाव भर सफेद तिल रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो दें और सबेरे उनको खूब घोट-पीसकर पिला दें । जिस दिन गाय गाभिन हुई हो उस दिन और दो रोज़ बाद तक रोज़ पिलावें । जब कड़ी सर्दी हो तो यह

दवा नहीं देनी चाहिए या सिर्फ गाय गाभिन हुई हो तो उसी दिन देकर बन्द कर देनी चाहिए।

उपरोक्त दवाएं दो-तीन बार जिस दिन गाय गाभिन हुई हो तो उसको १९वें, २०वें और २१वें दिन भी दीजिए ताकि गाय के दुबारा गर्म होने का डर न  गाभिन होने के एक रोज़ बाद ठंडे पानी का झूश भी लाभप्रद होता है ।

खान-पान—गाय को जहां तक हो ठंडी तासीरवाली और पौष्टिक खुराक दीजिए । गर्म चीज़ न खिलाइए । जिस दिन गाय गाभिन हो उस रोज़ से दस-पन्द्रह दिनों तक उसकी खुराक कुछ कम कर दें ।

शरीर के ऊपरी भाग की साधारण बीमारियाँ

अब हम किसी दुर्घटना या चोट लग जाने से तथा किसी कीड़े, मक्खी या जानवर के काटने से शरीर के बाहरी भाग में होनेवाली बीमारियों के बारे में लिखते हैं। इन बीमारियों में जानवर को और खासकर उसके उस अंग को जिसमें तकलीफ है, पूरा आराम देना चाहिए और उसकी पूरी सफाई रखनी चाहिए। इस प्रकार की बीमारियों में जो भी दवा व इलाज होता है वह तो प्रायः केवल छूत से बचने, दर्द को कम करने तथा गंदा मादा निकालकर जरूम इत्यादि को साफ रखने के लिए ही होता है। प्रकृति को अगर अपने काम करने का पूरा मौका दिया जाय तो जानवर को जल्दी ही फायदा हो जाता है।

(१) सूजन (वरम)

चोट, सर्दी-गर्मी या कोई खराब मादा इकट्ठा हो जाने की वजह से कभी-कभी वदन के किसी खास हिस्से में सूजन हो जाती है।

पहचान—वह जगह कुछ उभरी व फूली हुई मालूम पड़ती है। वहां दर्द होता है। यह दबाने से दबती नहीं, अक्सर सुख हो जाती है। और छूने से गर्म मालूम पड़ती है। उस हिस्से से काम नहीं होता। जानवर बेचैन मालूम पड़ता है। कभी-कभी हल्की हारत-सी हो जाती है।

इलाज—चोट वगैरह की वजह से यदि सूजन हो तो नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से उस जगह को भली-भांति धोकर सेकें और बाद में नीचे लिखी कोई दवा लगावें—

(१) तवे पर हल्दी और घी डालकर अच्छी तरह से भूनकर पका लें और फिर रुई के फोये पर रखकर बांध दें।

(२) कपूर और भुना हुआ या तवे पर फुलाया हुआ मुहागा बराबर-बराबर लेकर बराबर तिल के तेल अथवा घी, या वेसलीन, या मक्खन इत्यादि किसी एक में भली-भांति मिलाकर चुपड़ दें ।

यदि खराब माँदे के इकट्ठा हो जाने की वजह से या खून की खराबी की वजह से फोड़ा-फुंसी होने के पहले की सूजन हो तो नीम के पत्ते, मकोय, आकसंड में से एक या सबको पानी में डालकर खूब पकाकर उसके गर्म पानी में बार-बार कपड़ा या टाट भिगोकर दस-पन्द्रह मिनट सेंक करना चाहिए और बाद में नीचे लिखे लेपों में से कोई एक करना चाहिए ।

(१) २ तोला हल्दी, २ तोला साबुन में मिलाकर गर्म-गर्म लेप कर दें ।

(२) १ तोला गेरू, २ तोला मकोय के रस में मिलाकर गर्म-गर्म लेप करें ।

(३) हल्दी और चूना दोनों बराबर-बराबर गर्म पानी या मकोय, आकसंड या आकाशबेल किसी के रस में मिलाकर गर्म-गर्म लेप करें ।

अगर लेप या सेंक करने से उसका पकना शुरू हो जाय और उस में मवाद पड़ने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वह फोड़ा बन जायगा और फिर उसका इलाज फोड़े-फुंसी की तरह करना चाहिए । फोड़े-फुंसी का इलाज आगे देखिए ।

यदि सूजन या दर्द दूमरे किसी कारण से है तो आरंभ में ठंडे पानी की धार डालने व ठंडे पानी में भिगोकर कपड़े व टाट की गद्दी रखने से भी लाभ होता है । लेकिन जब मर्ज बढ़ जाय और उससे लाभ न हो तो सेंक करना चाहिए । सेंक दो प्रकार का होता है एक तर और दूसरा खुश्क । तर सेंक गर्म पानी में दवा डालकर उस पानी में बार-बार कपड़ा भिगाकर किया जाता है और सेंक करने के बाद उसपर दवा का लेप करना मुनासिब है । गर्म ईंट, रेत व मिट्टी वगैरह कपड़े या टाट में रखकर खुश्क सेंक किया जाता है । खुश्क सेंक करने के पहले दर्द को दूर करने के लिए नीचे लिखा कोई भी तेल र्ध रे-धीरे जानवर के रोग के रूख के अनुसार मल देना चाहिए । मालिश और सेंक करने के बाद अरंड के पत्ते तेल में चुपड़कर बांध दें ।

(१) १ तोला कपूर को १ छटांक तारपीन के तेल में घोलकर पाव भर तिल के तेल में मिलाकर मालिश करें ।

(२) आक के पत्ते कूटकर रस निकालें और सेर भर रस में पावभर तिल का तेल मिलाकर पकायें । जब रस जल जाय तो उसे छान लें और इस तेल की मालिश करें ।

(३) धतूरे के पत्तों का रस पावभर, तिल के आध सेर तेल में मिलाकर पकायें । पानी जल जाय और खालिस तेल रह जाये तो छान लें और मालिश करें । या २ तोले धतूरे के बीज बारीक कूट-पीसकर एक पाव तिल के तेल में मिलाकर १५ या २० रोज तक धूप में रखें और फिर छानकर शीशे में भरकर रख लें और इसकी मालिश करें ।

(४) पावभर लहसुन को खूब छेत लें या सिल-बट्टे पर पीस लें फिर उसे आध सेर तिल के तेल में मिलाकर खूब पकावें । जब भली-भांति पक जाय तो कपड़े में डालकर छान लें और उसकी मालिश करें ।

यदि उपरोक्त इलाज से फायदा न हो तो राई या लहसुन का पल-स्तर लगाना चाहिए ।

पलस्तर की विधि—राई को पानी में पीसकर गर्म करके मलहम की तरह कपड़े पर फैलाकर लगावें ।

लहसुन १ हिस्सा और आटा २ हिस्से दोनों को सिल-बट्टे पर खूब बारीक पीसें, जब मलहम जैसा हो जाय तो गर्म करके कपड़े पर लगाकर चिपका दें ।

जब पलस्तर से जगह लाल हो जाय या उपाड़ हो जाय तो पलस्तर को उतार देना चाहिए और तेल चुपड़ देना चाहिए । पलस्तर लगाने के बाद अगर खाल उतर जाय तो लोनी घी या मक्खन में बारीक पिसा हुआ खाने का नमक मिलाकर लगाना चाहिए ।

यदि सूजन की वजह से बुखार हो जाय तो पानी में १ तोला शोरा डालकर पिलाना चाहिए । यदि बुखार तेज हो जाय तो बुखार की दवा करनी चाहिए ।

खान-पान—खाने को चना, मटर, मसूर वगैरा द्विदल जाति की देर में पचनेवाली तथा बादी या कब्ज करनेवाली चीजें नहीं खिलानी चाहिए । पीने को कुएं का ताजा पानी देना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—जानवर को जहां तक हो आराम देना चाहिए और खास करके उस अंग को, जिसमें बीमारी है, मक्खी-मच्छर से बचाना चाहिए और सेंक या मालिश या पलस्तर के बाद जानवर को हवा का सीधा झोंका और तेज सर्दी बिल्कुल नहीं लगनी चाहिए ।

(२) रसौली या मस्सा

कई बार खाल के नीचे से गेंद-सी बनकर सूजती या बढ़ती चली जाती है जिसको दवाने से दर्द नहीं होता । वह चलने-फिरने में भी कोई रुकावट नहीं करती पर जानवर को बदसूरत कर देती है या बढ़कर किसी अंग को ढक या दबा लेती है तो हानि पहुंचाती है ।

इलाज—रसौली में सेंक इत्यादि जिस प्रकार सूजन की अवस्था में किया जाता है, करना चाहिए । यदि इससे दब जाय तो ठीक है अन्यथा ३ हिस्से पानी और एक हिस्सा कच्चे पपीते के फल या पेड़ में कील या चाकू चुभाने से जो रस निकलता है उसे मिलाकर एक चौड़े मुंहवाली शीशी में रख लीजिए । फिर उसमें रुई या कपड़ा भिगोकर ठीक उस स्थान पर लगाकर कपड़े से बांध दीजिए । बराबर ऐसा करने से लाभ होगा । यदि इससे भी लाभ न हो तो ढोरो के डाक्टर को बुलाकर आप-रेशन करवाकर निकलवा देना चाहिए । अगर शरीर के किसी अन्दरूनी भाग में रसौली हो तो उसका इलाज ढोरो के डाक्टर से आपरेशन कराकर कराना चाहिए ।

मस्से को सब पहचानते हैं ।

इलाज—उसके लिए नीचे लिखी दवाइयां आजमाइये :

(१) चूना, सज्जी बराबर-बराबर किसी कांच के बर्तन या सीपी वगैरा में रखकर जरा-सा पानी डाल किसी तिनके के सिरे पर रुई का फाहा या

फुरेरी लगाकर उससे यह दवा ठीक मस्से पर दिन में दो-तीन बार लगाइये दो-चार दिन में मस्सा सूख जायगा ।

(२) पपीते में चाकू चुभाने से जो रस निकलता है, उसे तीन गुने पानी में मिलाकर लगाने से भी आराम होता है ।

खान-पान—खान-पान में कोई खास बात नहीं है । साधारण रोजाना की खुराक दे सकते हैं ।

अन्य हिदायतें—दवाई होशियारी से रसौली या मस्से के ऊपर ही लगनी चाहिए । यदि और दूसरी जगह लग जायगी तो ज़रूम कर देगी और तकलीफ होगी ।

(३) फोड़ा-फुन्सी

जब सूजन अधिक दूर तक न फैलकर किसी खास जगह पर ऊपर को उठती चली आती है तो वहीं फोड़ा हो जाता है । यह चोट लगने या खून की खराबी से भी होता है ।

पहचान—उस जगह बहुत दर्द मालूम पड़ता है जिसके कारण बेचैनी हो जाती है । वह जगह लाल हो जाती है, गर्म मालूम पड़ती है और वहां पर हर समय कुलकुलाहट-सी होती है । बेचैनी रहती है । कभी-कभी बुखार भी हो जाता है ।

इलाज—यदि खून की खराबी से ऐसा है तो जुलाब देना चाहिए और सूजन के बताये हुए इलाज के मुताबिक पहले सेंक इत्यादि करना चाहिए । यदि इससे फोड़ा-फुन्सी दब जाय तो अच्छा है और यदि उसमें मवाद पड़ गया हो तो उसको पकाने का प्रबन्ध करना चाहिए । इसके लिए नीम के पत्ते डालकर उबाले हुए पानी से सेंक करके कोई चीज जैसे प्याज, कुकरोँधा, गुलबांस सिल-बट्टे पर बारीक पीसकर गर्म करके गर्म-गर्म ही दिन में दो बार बांधना चाहिए, या नीचे लिखी पुलटिस दिन में दो-तीन बार गरम-गरम बांधिए :

आटा

१ तोला

हल्दी

१ माशा

तेल मीठा	१ तोला	सुहागा	१ माशा
सिन्दूर	१ माशा	तूतिया (नीला थोथा)	२ रत्ती

जब उसमें मवाद पड़ जाय और वह जगह पिलपिली (मुलायम) हो जाय तो नीम के पत्तों के साथ २०-२५ मिनट तक उबाले हुए एक तेज चाकू से चीरा देकर मवाद निकाल देना चाहिए और फिर ज़रूम का इलाज करना चाहिए ।

खान-पान—बादी करनेवाली खुराक व द्विदल जाति की चीजें न देकर शीघ्र पचनेवाला मुलायम चारा देना चाहिए ।

अन्य हिदायतें—गंदगी बिलकुल नहीं रहनी चाहिए । सफाई का खास ध्यान रखना चाहिए वरना रोग के बढ़ जाने का डर रहता है ।

(४) घाव या ज़रूम

किसी फोड़े-फुंसी के पककर फूट जाने या चोट लगने या तेज चीज़ के कारण घाव हो जाता है । इसमें से मवाद, खराब खून आदि निकलता रहता है । यदि अच्छी तरह इसका इलाज न किया जाय तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं और गलना-सड़ना भी शुरू हो जाता है ।

इलाज—उस हिस्से को आराम देना चाहिए । जहां तक हो हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए । सफाई का खास ध्यान रखना चाहिए । उस जगह के बाल इत्यादि काट देने चाहिए । यदि कहीं की खाल या मांस इत्यादि बे-ढंगे तरीके का हो गया हो तो १५-२० मिनट तक नीम के पत्तों के साथ उबाली हुई कैंची या तेज चाकू से काट देना चाहिए ताकि जो भी दवा लगाई जाय वह सहूलियत से लग सके और अपना असर कर सके । जो रुई, कपड़ा इत्यादि काम में लें वह भी साफ होना चाहिए । घाव पर लाल दवा मिले गरम पानी से या नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से धोकर साफ करके फिर दवा लगानी चाहिए । घाव तब साफ समझना चाहिए जब वह लाल हो जाय । यदि मवाद या गली खाल या अन्य कोई चीज़ लगी हो तो साफ नहीं समझना चाहिए । जब वह बिलकुल साफ

हो जाय और लाल दिखाई देने लगे तभी दवा लगानी चाहिए ।

अगर घाव में कीड़े पड़ गये हों तो उसे धोने के बाद बराबर की फिना-इल या तारपीन के तेल में मिले हुए तिल के तेल में रुई का फोया भिगोकर एक तिनके से अच्छी तरह घाव के अन्दर कर दें ताकि अन्दर के कीड़े मर जायं और उसके आस-पास भी यही तेल चुपड़कर मक्खी धूल गर्द से बचाने के लिए और कोई चीज़ लगाने की आवश्यकता हो तो उसे लगा दीजिए और यदि पट्टी बांधने की आवश्यकता हो तो उसे बांध दीजिए । इस प्रकार दोनों समय सुबह-शाम दवा लगाइए । जब कीड़े मर जायं तब दूसरी दवा लगावें ।

यदि घाव में कीड़े न पड़े हों या पड़कर मर गये हों तो उसे दोनों समय सबेरे-शाम उपरोक्त विधि के अनुसार धोकर साफ करके और फिर नीचे लिखी कोई दवा लगावें—

(१) १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा, १६ हिस्से मक्खन या घी या तिल का तेल मिलाकर लगावें ।

(२) १ हिस्सा तूतिया, ४ हिस्से तेल तारपीन, १० हिस्सा कपूर २० हिस्सा तिल का तेल लें । कपूर को तारपीन के तेल में घोलकर तिल का तेल डालकर खूब घोट लें । बाद में बारीक पिसा हुआ तूतिया व अंदाज का मोम मिलाकर हल्की आंच पर पका लें । यह मलहम लगावें ।

(३) एक हिस्सा तूतिया, १० हिस्से राल, २० हिस्से पिसी हुई ताजी नीम की पत्तियां गाय के दूध में खूब पका लें और यह मलहम लगावें ।

(४) मरुए या गेंदे के पत्ते सिल-बट्टे पर बारीक पीसकर लुगदी बनाकर घाव पर रखकर बांध दें या इन्हें सिल-बट्टे पर पीसकर तिल के तेल व गाय के घी में पकाकर लगावें ।

(५) १ हिस्सा भुना या फुलाया हुआ सुहागा, ४ हिस्से मक्खन या घी या तिल के तेल में मिलाकर लगावें ।

(६) १ हिस्सा तूतिया, आधा हिस्सा खड़िया मिट्टी और १ हिस्सा लकड़ी के कोयले खूब बारीक पीसकर कपड़-छान करके तिल्ली का तेल

या घी चुपड़ने के बाद बुरका दें ।

अगर जख्म में दाने-दाने से दिखाई दें या कोई हिस्सा फूलकर सतह से ऊपर आ गया हो या ज्यादा उभरा हो, टेढ़ा-मेढ़ा हो गया हो या मांस बढ़ गया हो तो तूतिये की डली से उसको रगड़कर एक-सा कर देना चाहिए । ऐसा करने पर जानवर को थोड़ी तकलीफ होगी, परन्तु यह याद रखना चाहिए कि घाव का समान भरना ही ठीक है वरना खोल रह जायगा जो दुख देगा । घाव जब करीब-करीब ऊपर तक भर जाय तो दूसरी दवाइयां न लगाकर सिर्फ १ हिस्सा कपूर ज़रा-सी देशी शराब में घोलकर १२ हिस्से तिल के तेल में मिलाकर इस कपूर मिले हुए तेल को ही दिन में दो-तीन बार चुपड़ देना चाहिए और घाव को खुला रखना चाहिए ताकि जल्दी सूख जाय ।

खान-पान—बादी व कब्ज करनेवाली खुराक न देकर शीघ्र पचने-वाली व मुलायम खुराक देनी चाहिए ।

अन्य हिदायतें—सफाई का बहुत ध्यान रखना चाहिए । मवाद इत्यादि से जो गंदगी हो जाय उसे फौरन साफ करते रहना चाहिए । जानवर को अधिक-से-अधिक आराम देना चाहिए ।

(५) हड्डी पर चोट लगना, टूटना, उतरना और मोच आ जाना

शरीर हड्डियों के ढाँचे का बना हुआ है । चोट लग जाने से, पैर फिसल जाने से या अन्य किसी कारण से हड्डी टूट जाती है या जोड़ की जगह से अलग हो जाती है ।

पहचान—उस जगह दर्द होता है । वह हिस्सा हरकत नहीं करता । कई बार खून भी निकलने लगता है । हड्डी टूट जाने पर हिलने से आवाज़ होती है । यदि जोड़ उतर जाय तो वह हिस्सा दूसरे के मुकाबले में बढ़ा हुआ, टेढ़ा और काम के नाकाबिल हो जाता है ।

इलाज—अगर साधारण मोच है और उसकी वजह से सूजन आ

गई है और दर्द होता है तो ठंडे पानी की गद्दी इत्यादि लगानी चाहिए। इससे आराम न हो तो तर व गर्म सेंक व मालिश या लेप, जो सूजन के इलाज में पीछे बताये हैं, उसके मुताबिक करना चाहिए।

अगर हड्डी उतर गई हो तो जानकार आदमी द्वारा हड्डी चढ़वाकर बताये अनुसार मालिश व खुश्क सेंक पहले करना चाहिए और जानवर को कुछ दिन आराम देना चाहिए। अगर हड्डी टूट गई हो तो उसके सिरों को जानकार आदमी द्वारा ठीक मिलवाकर रुई, लोगड़, कपड़ा रखकर बांस की खपच्ची लगाकर उस जगह को ऐसे बांध देना चाहिए कि जानवर के हिलने-डुलने इत्यादि से वह ढीली न हो सके और हड्डी के जो दोनों सिरों मिलाये गए हैं वे ज्यों-के-त्यों मिले रहें। डेढ़ महीने तक हड्डी को बराबर उसी तरह बांधे रखने से वह जुड़ जाती है।

साधारण मोच के अलावा दूसरी हालतों में ढोरों के होशियार डाक्टर से उपर्युक्त काम में मदद लेनी चाहिए ताकि इलाज विधि-पूर्वक हो सके। ढोर को चोट लगते ही नीचे लिखी दवा पिला देने से उसको आराम मिलता है—

फिटकरी	५ तोला	हल्दी	२॥ तोला
	दूध १ सेर		

गर्म दूध में सब चीजें घोलकर गर्म-गर्म पिला दीजिए। दो-तीन दिन तक रोज पिलाइए।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला तथा मुलायम चारा-दाना देना चाहिए। और बाढ़ी व कब्ज करनेवाली खुराक नहीं देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को ज्यादा-से-ज्यादा आराम देना चाहिए। हिलने-डुलने न देना चाहिए। उसके बैठने की जगह बहुत साफ रखनी चाहिए और वहां बिछाली लगा देनी चाहिए। यदि इस बीच बंधी हुई जगह के आस-पास ज़रूम हो जाय तो बड़ी दिक्कत होगी। इसलिए पहले से ही हिफाज़त रखनी चाहिए ताकि ज़रूम न हो। अगर जानवर को करवट देनी हो तो होशियारी से देना चाहिए, जिससे उसे तकलीफ न हो और बंधे हुए स्थान पर किसी किस्म का जोर न पड़े।

(६) खुरों में फोड़ा-फुन्सी, घाव इत्यादि हो जाना

पक्की सड़क पर बराबर चलने से खुर घिस जाते हैं। बहुत तेज गर्म रेत में चलने से खुरों के बीच में सूजन व फफोला-सा हो जाता है। कील, कंकड़ या दूसरी चीज चुभने से खुरों में घाव हो जाता है।

पहचान—जानवर लंगड़ाकर चलता है और चलने में तकलीफ होती है।

इलाज—जब जानवर लंगड़ाकर चले तो सबसे पहले उसका मुंह देखना चाहिए कि मुंह या जबान पर किसी प्रकार के छाले तो नहीं हैं। यदि ऐसा है तो खुर-मुंह की बीमारी समझनी चाहिए और उसको तन्दुरुस्त ढोरों से अलग करके खुर-मुंह की बीमारी का इलाज करना चाहिए। पृष्ठ ४३ पर देखिए।

अगर इसका संदेह न हो तो फिर जानवर के खुर अच्छी तरह देखना और अगर उनमें कोई कील-कांटा वगैरा नुकीली चीज चुभी हुई हो तो उसे वहां से निकालकर उस जगह कपूर और तारपीन मिले हुए तिल के तेल में रुई का फोया भिगोकर उसे सावधानी से अन्दर घुसेड़ देना चाहिए और आस-पास की जगह पर भी तेल चुपड़ देना चाहिए। इस प्रकार दो-चार रोज तक यह दवा लगाने से आराम हो जायगा।

अगर मवाद पड़ गया है तो नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से धोकर जैसे घाव का इलाज करते हैं, वैसे करना चाहिए। यदि कीड़े पड़ गये हों तो कीड़े मारने का इलाज करना चाहिए।

गर्म रेत में चलने की वजह से सूजन या फफोला हो गया हो तो बारीक पिसा हुआ नमक मक्खन में मिलाकर लगावें; अगर खुर घिस गये हों तो जानवर को आराम देना चाहिए और यदि पक्की सड़क के ऊपर ज्यादा चलने-फिरने का काम हो तो उसके खुरों पर लोहे का नाल लगवा देना चाहिए।

खान-पान—खाने के लिए रोजाना की साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—कभी-कभी जानवर के खुरों के अधिक फैल जाने या उनके आगे को बढ़ जाने के कारण वह लंगड़ाकर या खुरों को धरती में लगाकर चलता है। ऐसी हालत में उसके खुरों को कटवाकर ठीक करवा

देना चाहिए। खुर में दवा जानवर को गिराकर लगाई जाती है ताकि दवा लगानेवाला शांति से अपना काम कर सके। जानवर को गिराने में ध्यान रखना चाहिए कि उसे सख्त जगह पर न गिराया जाय बल्कि मुलायम मिट्टी, रेती या घास इत्यादि पर गिराना चाहिए और फुर्ती से दवा इत्यादि लगानी चाहिए ताकि जानवर को देर तक गिराये रखने से जो उसको अफारा-सा हो जाया करता है उसके पहले ही सब काम पूरा हो जाय। फिर भी यदि अफारा हो जाय तो जानवर को एक बार छोड़ देना चाहिए और फिर थोड़ी देर बाद गिराकर काम समाप्त करना चाहिए।

(७) सींग में कीड़ा लग जाना या चोट से टूट जाना

किसी गन्दगी के कारण या सींग के आस-पास के किसी फोड़े-फुंसी की देख-भाल न होने के कारण सींग में कीड़ा लग जाया करता है। लड़ने या किसी प्रकार चोट लगने से भी सींग में घाव होकर कीड़े लग जाते हैं या ज्यादा चोट लगने से टूट जाया करता है।

पहचान—सींग में जब कीड़ा लग जाता है तो जानवर बराबर अपना सींग किसी खम्भे, पेड़, दीवार या आस-पास के खूँटे पर या अन्य किसी जगह पर रगड़ता रहता है। जब कीड़ों का असर ज्यादा हो जाता है तो सींग एक तरफ को झुक जाता है।

इलाज—अगर सींग में कीड़े लगने का संदेह हो तो सींग व आस-पास की जगह नीम के गुनगुने पानी से भली-भांति साफ करके देखना चाहिए कि कहीं कोई सुराख या घाव तो नहीं है। यदि वह मिल जाय तो तारपीन के तेल में रुई का फाहा भिगोकर सीख द्वारा उसको अन्दर कर देना चाहिए ताकि कीड़े मर जायें। इस प्रकार दिन में दो-तीन बार कीड़े मारने की दवा लगानी चाहिए और घाव हो गया हो तो कीड़े मारने के बाद उसका इलाज करना चाहिए। अगर कीड़ों का इतना असर हो गया हो कि सींग झुक गया हो या चोट लगने से टूट गया हो तो उसको ज़रा नीचे से आरी से काटकर अलहदा कर दें। खून रोकने के लिए ठंडे पानी में ज़रा-सी फिटकरी घोलकर उसकी पट्टी या गद्दी लगा दें। खून रुक जाने पर दो

हिस्से फिटकरी, १ हिस्सा तृतीया बारीक पिसबाकर उसपर बुरकाकर ऊपर से साफ रुई रखकर या कपड़े की गद्दी देकर कसकर बांध दें। बाद में घाव का इलाज करें।

खान-पान—रोजाना जैसा साधारण।

अन्य हिदायतें—जबतक घाव बिलकुल अच्छा न हो जाय, जानवर को ऐसे तरीके से बांधना चाहिए कि वह सींग को किसी चीज़ से न रगड़ पाये। यदि ऐसा करने में उसे खाने-पीने में तकलीफ हो तो एक आदमी जानवर के पास बैठकर उसे खिला-पिला दे ताकि वह सींग न रगड़ सके।

(८) कान में मवाद और घाव पड़ जाना

चोट या किसी दूसरे कारण से फोड़ा-फुंसी हो जाने से कान में मवाद व घाव हो जाया करता है।

पहचान—कान को हिलाना, फटफटाना, किसी चीज़ से खुजलाना या रगड़ना या जिस कान में तकलीफ हो उधर ही गर्दन नीची रखना इसकी पहचान है।

इलाज—कान को नीम के उबले पानी से धोना चाहिए। अगर सूजन हो तो उसमें नीम के पत्तों के साथ थोड़ी मकोय और आकसंड के पत्ते और मिला देने चाहिए। धोने के बाद कान को उसी पानी में रुई भिगोकर और निचोड़कर उसे एक तिनके के सिरे पर फुरहरी की तरह बांधकर उसे कान को सुखाना चाहिए और फिर एक हिस्सा कपूर, १ हिस्सा भुना हुआ सुहागा और २० हिस्सा सरसों के तेल में मिलाकर दवा फुरहरी से लगा दें और दो-चार बूंद कान में डाल दें।

(२) आक का तेल फुरहरी से लगा दें और दो-चार बूंद कान में डाल दें।

खान-पान—जानवर को शीघ्र पचनेवाली चीज़ें खाने को देनी चाहिए कुएं का ताज़ा पानी पिलावें।

अन्य हिदायतें—कान की सफाई का खास ध्यान रखें और मक्खी से बचायें। जानवर को आराम से रखें। यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने कान किसी चीज़ से न रगड़े।

(६) आंख का खुजलाना, पानी या गीड़ का बहना

किसी चोट से या किसी चीज के आंख में गिर जाने के कारण, सख्त चीज से, बदबूदार या गन्दी हवा या धुएँवाले मकान में रहने से आंख दुखने लगती है। कभी-कभी मच्छर के काटने से भी ऐसा हो जाता है।

पहचान—आंखों का सुख होना, आंख से आंसू और गीड़ का बराबर निकलते रहना इसकी पहचान है।

इलाज—खूब उबलने हुए पानी को साफ बारीक कपड़े में छानकर और ठण्डा करके ४ छटांक पानी में १ माशा फिटकरी घोल लीजिए। फिर उसके कुल्ले जानवर की दुखती हुई आंख में कराइए। जानवर की आंख को गर्द गिरने व हवा लगने से बचाइए। जहां तक हो सके उसको अंधेरे में रखिए। यदि पिचकारी मिल सके तो बजाय कुल्ले कराने के फिटकरी के पानी की पिचकारी से जानवर की आंख धोइए।

खान-पान—खाने को चने का दाना व द्विदल जाति का चारा तथा ज्यादा गर्म तासीर की चीजें न देकर चोकर, हरी दूब घास देनी चाहिए। पीने के पानी में १ तोला कलमी शोरा डालकर पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को आंख नहीं रगड़ने देना चाहिए। आंख की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए। दिन में दो-तीन बार उसकी आंख धो सकें तो दवा के पानी से नहीं तो साफ ठण्डे पानी से ही धोते रहना चाहिए। धूप तथा गर्द या आंधी में जहां तक हो जानवर जबतक बिलकुल अच्छा न हो जाय, तबतब उससे काम न लें।

(१०) कन्धा आ जाना व फाला लग जाना

अधिक काम करने से, कहीं ज्यादा जोर करने से, बैल को पहले-पहल जोतने पर, कन्धे पर बार-बार झटका लगने पर बहुत देर तक डलेवाली सख्त जमीन में हल चलाने से या किसी और कारण से बैल का कन्धा फूल जाया करता है और उसमें बैल काम करने के काबिल नहीं रहता। कभी-कभी कुछ असावधानी हो जाने के कारण या किसी चीज से हल उछल जाने से पाला बैल के पैर में लग जाता है।

पहचान—कन्धा लाल हो जाता है। सूजन आ जाती है। कभी-कभी यह इतना फूल जाता है कि वहां हंडिया-सी बन जाती है। बैल के कन्धे पर जुआ रखते ही वह गर्दन गिरा लेता है और जोर नहीं लगाता। फाला लग जाने पर बैल लंगड़ाने लगता है और कभी-कभी खून भी निकलने लगता है।

इलाज—कन्धा आ जाने पर सबसे पहले खारा या खाने का नमक मिले गर्म पानी से सेंक करना चाहिए। (सूजन में बताई हुई तर सेंक करने की विधि पृष्ठ १२५ पर देखिए)। यदि सूअर की चर्बी मिल सके तो उसकी मालिश करना बहुत लाभप्रद है। यदि इससे आराम न हो और कन्धा फूल जाय तो उसको पकाने की दवा लगाकर (पृष्ठ १२६ देखिए) उसको पकाने की कोशिश करनी चाहिए। जब पककर फूट जाय तो फिर घाव का इलाज पृष्ठ १३० पर बताये अनुसार करना चाहिए।

बैल के फाला लग जाने पर फौरन ही उसको एक तरफ ले जाकर उसके चोट की जगह पर पेशाब कर देना चाहिए। दिन में दो-तीन बार इस प्रकार एक-दो रोज पेशाब करने से लाभ हो जाता है या आम के अचार की फांक बांधकर पट्टी बांध देनी चाहिए। यदि घाव हो जाय या कीड़े पड़ जाय तो उनका इलाज ऊपर बताये तरीके से कीजिए।

खान-पान—साधारण देना चाहिए। सिर्फ यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर कमजोर न होने पावे या उसको कोई ऐसी चीज खाने को न दें जो मवाद बढ़ानेवाली हो।

अन्य हिदायतें—जानवर को यथासम्भव आराम देना चाहिए और खास करके उस अंग को जिसमें तकलीफ है। परन्तु फाला लगते ही या कन्धा आ जाने पर साधारण हालत में उससे थोड़ा-बहुत काम लेना चाहिए। ऐसी हालत में बिल्कुल काम न लेना भी हानिकारक होता है।

(११) आग से जल जाना

वाज दफा भूल में आग लग जाने से या छप्पर या मकान में आग लगने के कारण ढोर आग से भुलस जाया करते हैं।

पहचान—कम जलने पर जगह सुख-सी हो जाती है और अधिक जलने पर वहाँ पफोले पड़ जाते हैं ।

इलाज—चूने के निथरे हुए पानी को अलसा, गोले (नारियल), तिल में से किसी एक तेल में थोड़ा कपूर मिलाकर बराबर का लेकर बोतल में भर लें और उसको खूब हिलायें । जब एक-सा हो जाय तब दिन में दो-तीन बार लगावें । मक्खियों से बचाने के लिए उसे चादर या भूल से ढक देना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर उस जगह को चाट न सके ।

गाय के घी को फूल या कांसी की थाली में डालकर बराबर का साफ ठंडा पानी डालकर खूब फेंटें । फिर थोड़ी देर रखकर वह पानी निकाल दें और दूसरा पानी डालकर फिर फेंटें । इस प्रकार २० से १०० बार पानी में फेंटा हुआ गाय का घी जली हुई जगह पर लगाने से आराम होता है । जितनी अधिक बार फेंटा हुआ घी होगा उतना ही अच्छा होगा । दिन में तीन-चार बार रोज दवा लगायें । मक्खी-मच्छर से बचाना चाहिए ।

चूने के पानी में तिल या अरण्डी या नारियल का तेल मिलावें । इससे एक मलहम बन जायगा । इसको लगावें । ऊपर से बड़, लेसवे या मेंहदी के पत्ते जलाकर उसकी राख छिड़कने से भी आराम होता है ।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाली पौष्टिक खुराक देनी चाहिए । गुड़, दूध, चोकर, दलिया अवश्य देना चाहिए ताकि जानवर कमजोर न होने पावे । पीने को ताजा पानी दें ।

अन्य हिदायतें—यदि जानवर ज्यादा जल गया हो तो उसको बहुत होशियारी से दिन में दो-तीन बार करवट दिलवाना नहीं भूलना चाहिए, नहीं तो खाल गल जायगी और घाव हो जायगा । खूब अच्छी मुलायम बिछाली बिछानी चाहिए और जानवर को ऐसी जगह रखना चाहिए कि मच्छर-मक्खी उसे न सतावें और उसपर भूल डाल देना चाहिए ।

परिशिष्ट

(इस पुस्तक में जो दवाइयां बताई गई हैं उनकी सूची)

घर में मिलनेवाली चीजें

- १ अजवायन (Carum Copticum, Bishops Weed, Species of Dill)
- २ अमचूर या आम की सूखी हुई खटाई (Dry mango-pulp)
- ३ आम का अचार (Mango-pickle)
- ४ गुड़ (Gur, Jaggery)
- ५ घी, मक्खन (Clarified butter, Butter)
- ६ छाछ, मट्ठा, लस्सी (Butter milk, churned curd)
- ७ जीरा (सफेद) (White Cumin seed or CarraWay 'White')
- ८ तम्बाकू (Tobacco)
- ९ तिल का तेल (Til oil, Sesame oil, Jingeley oil)
- १० धनिया (Coriander seeds)
- ११ नमक (Gommon salt)
- १२ प्याज (Onion)
- १३ मिट्टी का तेल (Kerosine oil)
- १४ लाल मिर्च (Chili)
- १५ सरसों का तेल (Mustard oil)
- १६ सोंठ (Dry ginger)
- १७ हल्दी (Turmeric)

गांव में मिलनेवाली चीजें

- १ अदरक (Ginger)
- २ अलसी (Lin-seed)
- ३ कत्था (Catechu)
- ४ कबूतर की बीट (Pigeon's dung)
- ५ काली मिर्च (Pepper)
- ६ खारी नमक (Crude Glauber's Salt. Crude. Soda Sulph)
- ७ गाजर के बीज (Carrot seeds)
- ८ गेरू (Ochre)
- ९ चाय (Tea)
- १० चूना (Burnt lime, Unslacked-lime)
- ११ छुहारे (Dried dates)
- १२ तूतिया या नीला थोथा (Blue Vitriol or Copper Sulphate)
- १३ नीम का तेल (Neem oil or Margosa oil)
- १४ फिटकरी (Alum)
- १५ खांड का बताशा (Batasha made from Sugar)
- १६ मेथी (Fenugreek)
- १७ लहसुन (Garlic)
- १८ सफेद तिल्ली (Sesame or Jingeley seeds 'White')
- १९ सरसों की खल (Mustard oil cake)
- २० साबुन (Soap)
- २१ सिरका (Vinegar)
- २२ सौंफ (Foeniculum vulgare, Anise seeds)
- २३ शहद (Honey)

२४ शीरा (Molasses)

२५ हींग (Asafoetida)

आस-पास खेत या जंगल में मिलनेवाली चीजें

- १ अड़सा या बांसा (Adhatosavasica or Adhatoda)
- २ अमलतास की फली (Fruit of Cassia a fistula tree)
- ३ अमरबेल या आकाशबेल (Parasite creeper, Air creeper)
- ४ अनार का छिलका (Pomegranate bark)
- ५ अरण्ड के पत्ते (Castor-seed plant leaves)
- ६ आकसंड के पत्ते (Aksand leaves)
- ७ आक या मदार के पत्ते या जड़ (Mudar or Calotropis gigantee or proceta leaves or roots)
- ८ कच्चे आम (Unripe Mango)
- ९ इमली के पत्ते (Tamarind leaves)
- १० ककरोंधा, कुरमुत्ता, जंगली तम्बाकू
- ११ कीकर या बबूल की छाल (Arabic gum-tree Acacia Arabica tree's bark)
- १२ केले की फली तथा रस व राख (Green Bananas fruits, its juice and ash)
- १३ गूलर (A fruit in appearance similar to wild fig)
- १४ गुलाबास (It is a kind of plant found in gardens)
- १५ गेंदा का फूल (Marigold flower)
- १६ गोमा (घास) (Goma, a kind of weed found in cultivated fields)
- १७ ग्वारपाठा, घीकुवार (Bardadies Aloes or Indian Aloes)

- १८ जवासा (Manna Hebrew or Alhagi-Maurorum)
- १९ झरबेरी के पत्ते (Zizyphus Jujuba or Jujube hedge)
- २० दूब-घास (Dub-grass)
- २१ धतूरे के बीज या पत्ते (Datura or Thornapple (white) seed)
- २२ पलासपापड़ (Butea frondosa pulp)
- २३ पवार (तालाब में मिलती है) (It spreads on the surface of water in big ponds)
- २४ बरना के पत्ते (A tree which is generally found in pasture lands)
- २५ बांस के पत्ते (Bamboo leaves)
- २६ बेल का फल (Bael fruit or Aegle Marmelos fruits)
- २७ मकोय (A plant found throughout India bearing small red fruits in bunches)
- २८ मरवा के पत्ते (Ocimum pilosum)
- २९ मेंहदी के पत्ते (Henna leaves or compulre leaves)
- ३० सफेदा के पत्ते (Eucalyptus leaves)
- ३१ सेंजन की छाल (Horse reddish tree bark or Morunga-Hyperantheria)

आसपास के कस्बे या शहर में मिलनेवाली चीजें

जिन गांवों में बहुत दूर हों तो उस गांव के पनसारी या बनिये की दूकान पर ये चीजें संग्रह करके रखनी चाहिए ताकि जब कभी काम पड़े तो मिल सकें।

- १ एलबा (मुसब्बर) (Aloes)
- २ कपूर (Camphor)
- ३ काला नमक (Black Salt)

- ४ कुचला (Nux-vomica)
- ५ खरिया मिट्टी (White clay or China clay or Chalk)
- ६ गन्धक (Sulphur)
- ७ चिरायता (Chiretta or Cuirait Gentian)
- ८ तारपीन का तेल (Turpentine oil)
- ९ देसी शराब (Country wine)
- १० नौसादर (Ammonium chloride)
- ११ भंग (Cannabis Indica or Indian hemp)
- १२ रस कपूर (Muriath of Mercury)
- १३ राई (Yellow Mustard)
- १४ राल (Resin)
- १५ सुहागा (Borax)
- १६ शोरा (Nitre or Salt peter, Potassium Nitrute)
- १७ हीरा या हीरा कसीस (Ferrous Sulphate or green Vitriol)
- १८ रीठा (Soap nut)
- १९ Sulpha drugs
- २० Penceline
- २१ लाल दवा (Potash manganate)



अन्य ग्रामीणयोगी साहित्य

१. ग्राम-सेवा
 २. गांव सुखी, हम सुखी
 ३. आधुनिक सहकारिता
 ४. ग्राम-सेवा यों करें
 ५. सहकारिता का उदय और विकास
 ६. भारतीय सहकारिता का इतिहास
 ७. खादी द्वारा ग्राम-विकास
 ८. ग्राम-सुधार
 ९. चारा-दाना
 १०. पशुओं का इलाज
 ११. हमारे गांव की कहानी
 १२. सहकारी समाज
 १३. ग्रामोद्योग
-
-



